नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/864
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 310, नई दिल्ली, शुक्रवार 09 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पाँच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार।

03 वेदों और धर्मशास्त्रों के अनुसार: पुत्र केवल एक नहीं, 12 प्रकार के होते हैं!

06 असुरक्षित बिस्कुट और सरकारी नियम:

08 एनकाउंटर के बाद जग्गू भगवानपुरिया के साथी गिरफ्तार; टारगेट किलिंग टली

जब से दिल्ली में सत्ता के गलियारों में "जनकल्याण" का नारा डिजिटल स्क्रीन पर चढ़ा है, बुजुर्गों और विधवाओं की पेंशन भी अब तकनीकी दौर में "क्लिक" हो गई है — क्लिक कीजिए, एप्लाई कीजिए, और इंतज़ार करते रहिए।

"पेंशन ऑनलाइन: डिजिटल इंडिया में ऑफलाइन उम्मीदें"

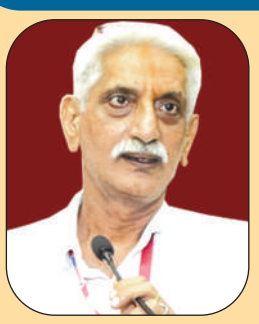

संजय कुमार बाठला
स्वतंत्र पत्रकार और सामाजिक मुद्दों के विश्लेषक

कभी दिल्ली की सड़कों पर और अब साइबर कैफे की कतारों में दिखते हैं हमारे बुजुर्ग — हाथ में पेंशन की फाइल नहीं, बल्कि "फॉर्म सबमिटेड सक्सेसफुली" का स्क्रीनशॉट।

रात के दस बजे ऑनलाइन पोर्टल खोलने और तीन बजे बंद करने का सरकारी गणित शायद केवल वही समझ पाएगा जो ईश्वर से भी पहले सेवीयर कंट्रोल में लॉगिन करता हो।

विधानसभा क्षेत्रों के हिसाब से 200 आवेदन खोलने की अद्भुत योजना शायद किसी गणितज्ञ ने बनाई है — जो जनता के लिए नहीं, बल्कि शायद "अपनों" के लिए गणना कर रहे थे।

आखिर, जब दिल्ली सरकार के पास हर नागरिक का आधार से जुड़ा डेटा है, तो बुजुर्गों को वेबसाइट पर खोजना क्यों पड़ रहा है?

क्या सरकार को नहीं पता कि हमारे पड़ोस की कमला अम्मा या गुप्ता जी अब 68 के हो चुके हैं?

ऑनलाइन आवेदन की यह "डिजिटल लाइन" उस पुराने दफ्तर की लंबी कतार से भी ज्यादा दम तोड़ चुकी है — फर्क सिर्फ इतना है कि अब धूप में खड़े होने की ज़रूरत नहीं, नेटवर्क का इंतज़ार करना ही काफी है।

प्रश्न यह नहीं कि योजना आई, बल्कि यह है कि योजना पहुंची भी या नहीं।

यह पेंशन स्कीम है या "पार्टी-संबंधित" मिशन — यह जनता अब समझने लगी है।

क्योंकि जनकल्याण का अर्थ अब शायद 'केवल घोषणा' तक सीमित रह गया है, सुविधा तक नहीं।

जनहित में बस यही कहना है — अगर बुजुर्गों को पेंशन नहीं मिल पा रही, तो कम से कम "आपका आवेदन प्रक्रिया में है" वाला संदेश एसएमएस से ही भेज दो — ताकि उन्हें लगे कि डिजिटल इंडिया ने उन्हें भुलाया नहीं है, बस इंतज़ार की लिमिट बढ़ा दी है।

बैटरी सुरक्षा और दुर्घटना का खतरा

ई-रिक्शा बैटरी: सस्ते सफर की आग — दिल्ली की सड़कों पर 'बम' बनते वाहन?

ओवरचार्जिंग से विस्फोट, खराब बैटरी से दुर्घटना — 2023-25 में दर्जनों हादसे, विभाग चुप क्यों?

लेखक: संजय कुमार बाठला

श्रेणी : परिवहन सुरक्षा एवं जनकल्याण

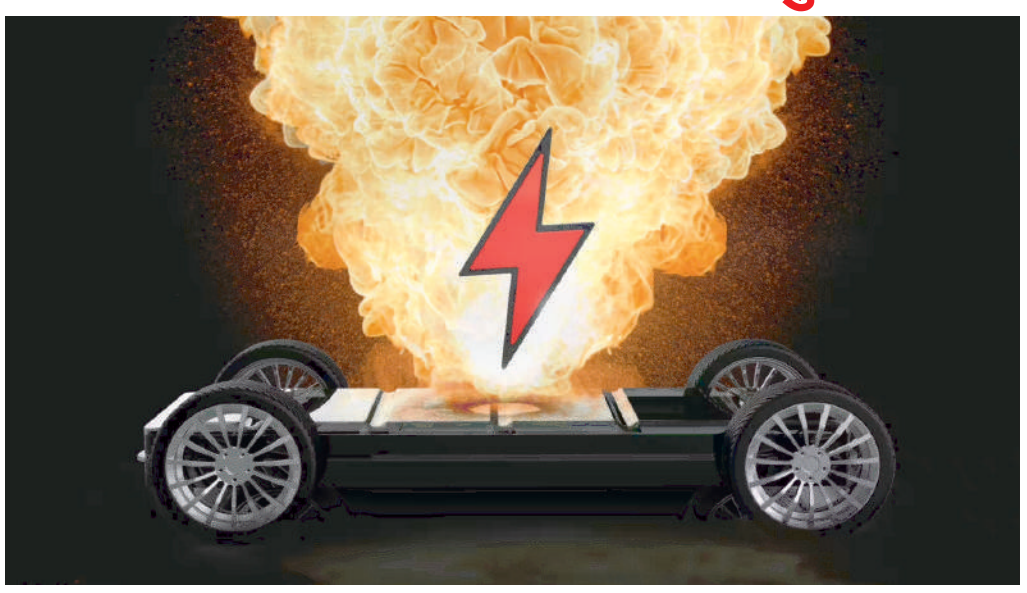

दिल्ली की सड़कों पर ई-रिक्शा गरीबों का सहारा बने, लेकिन इनकी लिथियम-आयन बैटरी से जुड़ी खामियाँ इन्हें 'मोबाइल बम' बना रही हैं। ओवरचार्जिंग, नकली बैटरी और बिना प्रमाणित चार्जर के कारण 2023-25 में दर्जनों आगजनी और दुर्घटनाएँ हुईं, जिनमें जानें गईं। परिवहन विभाग और MoRTH के मानकों का पालन न होने से जनता खतरे में है।

बैटरी सुरक्षा के प्रमुख खतरे ई-रिक्शा में इस्तेमाल होने वाली लिथियम-आयन बैटरी उच्च ऊर्जा घनत्व वाली होती हैं, लेकिन गर्मी, थर्मल रनअवे (बैटरी का अनियंत्रित गर्म होना) और छोटे-सर्किट से विस्फोट हो जाता है।

ओवरचार्जिंग और खराब चार्जर: 70% हादसों का कारण; सस्ते चाइनीज चार्जर BMS (बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम) के बिना आग लगाते हैं। दिल्ली में 2024 में 15+ ई-रिक्शा आग से जल चुके।

नकली/पुरानी बैटरी: ARAI प्रमाणित न होने पर क्षमता घटने से ब्रेक फेल या अचानक रुकना; फास्ट-चार्जिंग स्टेशन की कमी से रातभर चार्जिंग आम।

दुर्घटना आंकड़े: 2023-25 में दिल्ली-NCR में ई-रिक्शा दुर्घटनाएँ 2.5 गुना बढ़ीं — 40% बैटरी/इलेक्ट्रिकल फेलियर से। 12 मौतें दर्ज।

कानूनी प्रावधान और उल्लंघन
आधिकारिक उद्धरण: CMVR 2015, G.S.R. 27(E): "E-rickshaw shall conform to the specifications... battery management system (BMS) shall be provided." (बैटरी सुरक्षा अनिवार्य।)

AIS-038 मानक (ARAI): बैटरी टेस्टिंग, IP67 वाटरप्रूफिंग और थर्मल प्रोटेक्शन। लेकिन 60% ई-रिक्शा अनप्रमाणित।

विभागीय लापरवाही: दिल्ली परिवहन ने फिटनेस चेक में बैटरी स्कैनर नहीं लगाए; नकली पार्ट्स पर कोई विशेष अभियान नहीं।

1. खतरा – आगजनी - **कारण** – ओवरचार्ज/खराब BMS **समाधान** अनिवार्य स्मार्ट चार्जर, 4 घंटे लिमिट

2. खतरा – ब्रेक फेल - **कारण** – पुरानी बैटरी - **समाधान** – वार्षिक बैटरी टेस्ट, ARAI सर्टिफिकेट

3. खतरा – विस्फोट - कारण - नकली सेल - **समाधान** – आयात/विक्रय पर QR ट्रैकिंग

ई-रिक्शा बैटरी खतरे:
* आगजनी 70%,
* दुर्घटना 2.5x बढ़ी।

जनहित सुझाव और अपील
तत्काल कदम:
* **सभी ई-रिक्शा पर** बैटरी हेल्थ स्कैनर अनिवार्य;
* **फास्ट-चार्जिंग** स्टेशन पर फायर सेफ्टी।

* **नीतिगत सुधार:**
* **EV नीति 2026 में** बैटरी वारंटी 3 साल अनिवार्य;
* **MoRTH से नीतिगत सुधार**
* राष्ट्रीय बैटरी स्टैंडर्ड लागू।
* **जनता से नीतिगत सुधार**
* **दुर्घटना फोटो/ वीडियो newstransportvishesh@gmail.com भेजें।**
* सामूहिक PIL के लिए संपर्क करें।

ई-रिक्शा सस्ता परिवहन हैं, लेकिन बैटरी सुरक्षा के बिना यह सड़कों पर खतरा।

* **समय है सुधार का** — जनता की सुरक्षा पहले!

दिल्ली परिवहन निगम के द्वारा अपनी बसे ना होने के कारण डीटीसी अधिकारियों और कर्मचारियों को डेप्युटेशन पर भेजना जारी

संजय कुमार बाठला)

दिल्ली परिवहन निगम ने अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को दिल्ली परिवहन विभाग के बाद दिल्ली प्रदूषण विभाग में 100, दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय, उत्तरी दिल्ली जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय परिसर, जी.टी. करनाल रोड, अलीपुर, दिल्ली-36 में 107 और नई जानकारी के अनुसार 650 अन्य का दिल्ली यातायात पुलिस में डेप्युटेशन पर ऑर्डर के तहत भेजा। आदेश की कॉपी आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत"

दिल्ली के अलीपुर स्थित उत्तरी जिले के उपमंडलों में ड्राइवरों/कंडक्टरों की तैनाती

दिल्ली के अलीपुर स्थित उत्तरी जिले के उप-मंडलों में ड्राइवरों/कंडक्टरों की तैनाती के संबंध में निम्नलिखित आदेश जारी किया जाता है। संबंधित एसडीएम यह सुनिश्चित करेंगे कि तैनात कर्मचारी तुरंत ड्यूटी पर उपस्थित हों और दिनांक 06.12.2025 के एमओएम (संलग्न) के अनुसार तैनाती का सख्ती से पालन किया जाए।

दिल्ली परिवहन निगम ने आदेश संख्या पीएलडी-IV/डीपीसीसी/चालक की तैनाती /2025/3115, दिनांकः 2.12.25 को अपने 100 ड्राइवर्स को दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति, (डी.पी.सी.एस.) में ड्राइवर की तैनाती के लिए आदेश जारी किया।

इस आदेश में दिल्ली परिवहन निगम ने लिखा की यह पत्र सदस्य सचिव, डीपीसीसी से प्राप्त कार्यालय पत्र संख्या डीपीसीसी/डीटीसी स्टाफ की प्रतिनियुक्ति/2025/757-758 दिनांक 28.11.25 के संदर्भ में है, जिसमें डीटीसी के नियमित कर्मचारियों को 28.02.2026 तक दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) में 100 नियमित ड्राइवरों को आपके कार्यालय में 03 माह की अवधि के लिए तैनात किया जाता है।

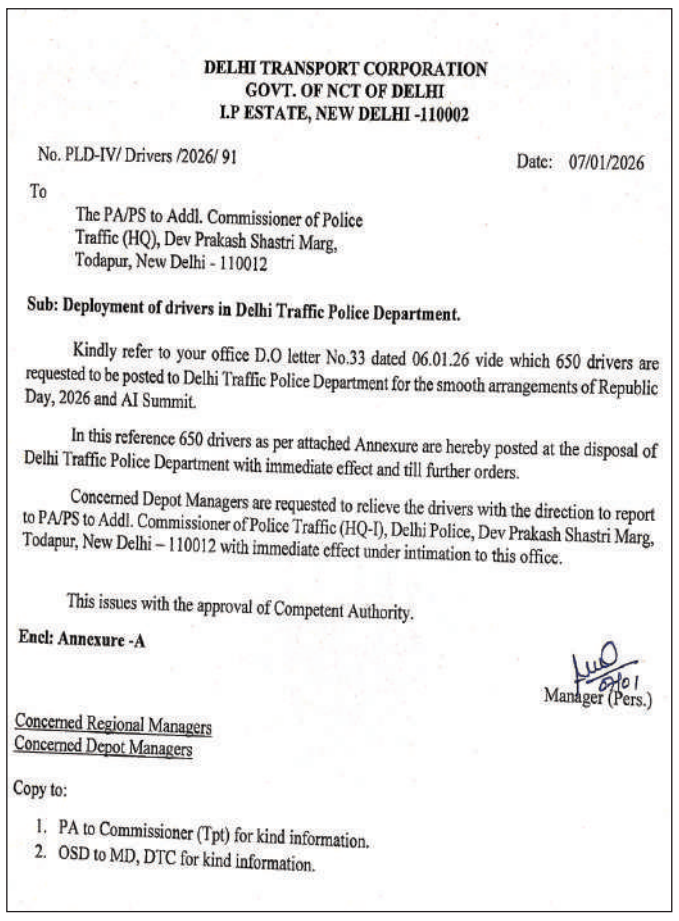

DELHI TRANSPORT CORPORATION
GOVT. OF NCT OF DELHI
I.P ESTATE, NEW DELHI -110002

No. PLD-IV/ Drivers /2026/ 91 Date: 07/01/2026

To
The PA/PS to Addl. Commissioner of Police
Traffic (HQ), Dev Prakash Shastri Marg,
Todapur, New Delhi - 110012

Sub: Deployment of drivers in Delhi Traffic Police Department.

Kindly refer to your office D.O letter No.33 dated 06.01.26 vide which 650 drivers are requested to be posted to Delhi Traffic Police Department for the smooth arrangements of Republic Day, 2026 and AI Summit.

In this reference 650 drivers as per attached Annexure are hereby posted at the disposal of Delhi Traffic Police Department with immediate effect and till further orders.

Concerned Depot Managers are requested to relieve the drivers with the direction to report to PA/PS to Addl. Commissioner of Police Traffic (HQ-I), Delhi Police, Dev Prakash Shastri Marg, Todapur, New Delhi – 110012 with immediate effect under intimation to this office.

This issues with the approval of Competent Authority.

Encl: Annexure -A

Manager (Pers.)

Concerned Regional Managers
Concerned Depot Managers

Copy to:
1. PA to Commissioner (Tpt) for kind information.
2. OSD to MD, DTC for kind information.

"आदेश की कॉपी आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत"

अब सवाल यह उठता है की क्या दिल्ली परिवहन निगम को खत्म करने से दिल्ली में जनता को सुरक्षित समयानुसार सुखद सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध हो पाएगी ?

हीलिंग तब शुरू होती है जब आप सच को पहचान लेते हैं और सच यह है कि आप दोषी नहीं हैं।

पिंकी कुंडू

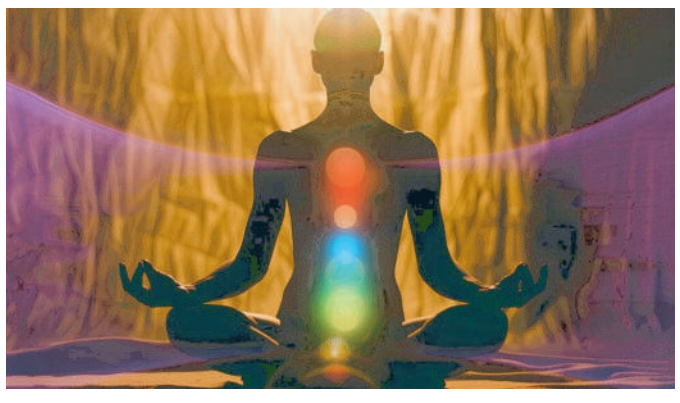

नार्सिसिस्ट से अलग होना इसलिए मुश्किल नहीं होता कि प्यार बहुत था बल्कि इसलिए मुश्किल होता है क्योंकि सामने वाला इंसान आपको एक इंसान नहीं, अपनी सप्लाई मानता है।

Psychology बताती है कि Narcissistic Personality Disorder (NPD) में व्यक्ति का आत्मसम्मान बाहर से बहुत मजबूत दिखता है, लेकिन अंदर से बेहद नाजुक होता है। जैसे ही आप अलग होने की बात करते हैं, उन्हें रिश्ता टूटता नहीं दिखता — उन्हें अपनी पहचान और कंट्रोल खतरे में महसूस होता है।

शुरुआत में वे अक्सर बहुत शांत, समझदार और बदले हुए दिखते हैं।

माफ़ी, वादे, इमोशनल बातें, "अब सब ठीक हो जाएगा" जैसे शब्द सामने आते हैं।

Psychology में इसे Hoovering कहा जाता है — एक तकनीक, जिसमें सामने वाले को भावनात्मक रूप से वापस खींचा जाता है ताकि कंट्रोल बना रहे। यह बदलाव स्थायी नहीं होता, यह एक रणनीति होती है।

जैसे ही उन्हें लगता है कि आप सच में निकल सकते हैं, उनका दूसरा चेहरा सामने आता है इसे Narcissistic Injury कहा जाता है — जब उनके अहंकार को चोट पहुँचती है। तब ताने, इल्ज़ाम, कैरेक्टर पर सवाल, आपको mentally unstable साबित करने की व्यक्ति रिश्तों में control through chaos पैदा करता है — यानी जानबूझकर उलझन, देरी और अस्थिरता ताकि सामने वाला थक जाए और टूट जाए।

ऐसे रिश्ते से निकलने के लिए भावनात्मक लड़ाई नहीं, रणनीति चाहिए। चुपचाप तैयारी करना, सबूत संभालकर रखना, ज़्यादा प्रतिक्रिया न देना — जिसे psychology में Grey Rock Technique कहा जाता है।

जितना कम आप react करते हैं, उतना ही उनका असर कम होता जाता है।

सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक सच यह है कि नार्सिसिस्ट इसलिए नहीं लड़ता क्योंकि उसे रिश्ता बचाना है, वह लड़ता है क्योंकि उसे हार और कंट्रोल खोने से डर लगता है और healing तब शुरू होती है, जब आप यह समझ लेते हैं कि यह आपकी क़ीमत नहीं, उनकी मानसिक संरचना है।

यह अनुभव gender-specific नहीं है।

नार्सिसिस्ट पुरुष भी हो सकता है और महिला भी। पीड़ित कोई भी हो सकता है — जो empathic, caring और emotionally available होता है।

चुप्पी को अपनी मजबूरी मत बनाइए।

समझदारी को अपनी ताक़त बनाइए। अगर आप किसी नार्सिसिस्ट रिश्ते में फँसे हैं या निकलने की कोशिश कर रहे हैं .. तो खुद पर शक करना बंद कीजिए। आप पागल नहीं हैं, आप manipulate किए गए हैं।

रिश्ते से हारना हार नहीं, खुद को हटा लेना कायरता नहीं है। हार तब होती है जब हम अपने लिए जीना छोड़ देते हैं।

यह पोस्ट उनके लिए है जो रोज़ किसी रिश्ते में खुद को खोते जा रहे हैं और धीरे-धीरे ज़िंदगी से भी हार मान लेते हैं।

इतना ही कहना है, हिम्मत का मतलब लड़ते रहना नहीं होता, कभी-कभी हिम्मत का मतलब होता है चुपचाप खुद को चुन लेना और अपने लिए जीना।

हीलिंग तब शुरू होती है जब आप सच को पहचान लेते हैं और सच यह है कि आप दोषी नहीं हैं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : अब चलेगा असली हथियार, दूरसंचार विभाग (DoT) ने CNAP (Calling Name Presentation) योजना के राष्ट्रव्यापी लॉन्च की समयसीमा मार्च 2026 तय कर दी है

यह पहल साइबर अपराध की दिशा और दशा बदलने वाला एक शक्तिशाली हथियार साबित होगी।

CNAP क्यों महत्वपूर्ण है?
डिजिटल अरेस्ट जैसे घोटाले अब कमज़ोर पड़ेंगे।

* अब कॉल रिसीव करने से पहले ही आप जान पाएंगे कि वास्तव में कौन कॉल कर रहा है।
* CNAP के तहत कॉल करने वाले का सत्यापित असली नाम मोबाइल स्क्रीन पर डिफ़ॉल्ट रूप से दिखेगा।
* यह Truecaller जैसे crowd-sourced ऐप्स पर आधारित नहीं होगा, जिससे गलतफ़हमी और धोखाधड़ी की संभावना घटेगी।
* नागरिक तुरंत धोखाधड़ी और पहचान की चोरी को पहचान सकेंगे।

CEIR पोर्टल की तरह CNAP की भूमिका

* CNAP धोखाधड़ी रोकने में CEIR पोर्टल की तरह ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
* CEIR राष्ट्रीय शुभारंभः 17 मई 2023
* तब से अब तक हज़ारों चोरी/गुम मोबाइल फोन CEIR पोर्टल और संचार साथी प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से ट्रेस कर लौटाए गए हैं।
* TRAI और DoT के प्रयासों से डिजिटल इंडिया में नागरिकों का विश्वास और सुरक्षा बढ़ रही है।

CNAP क्या है और यह कैसे काम करेगा?

* वर्तमान स्थितिः अभी केवल कॉल करने वाले का नंबर दिखता है।
* नई व्यवस्थाः CNAP में कॉल करने वाले का वही नाम दिखेगा जो SIM लेते समय KYC में दर्ज हुआ था।
* डिफ़ॉल्ट सक्रियताः यह सुविधा स्वतः सक्रिय होगी; उपयोगकर्ता चाहें तो इसे बंद कर सकते हैं।
* लागू करने की प्रक्रियाः टेलीकॉम कंपनियां इसे 4G और नई नेटवर्क तकनीकों पर चरणबद्ध तरीके से लागू करेंगी।

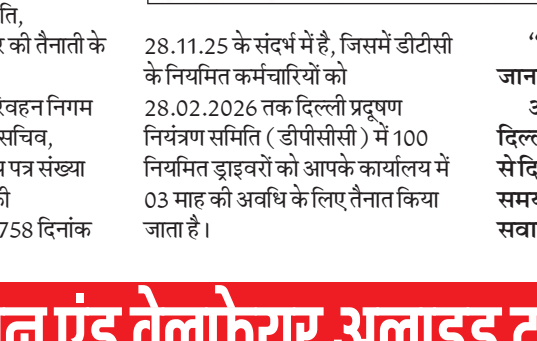

नागरिकों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों को लाभ

1. रियल-टाइम धोखाधड़ी पहचान
* "बैंक मैनेजर" या "पुलिस अधिकारी" जैसे फर्जी नाम तुरंत उजागर होंगे।
* OTP चोरी, डिजिटल अरेस्ट स्कैम और वित्तीय धोखाधड़ी की सफलता दर घटेगी।

2. वैध कॉल्स पर भरोसा
सरकार, बैंक और सेवा प्रदाता स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकेंगे।

3. कमज़ोर वर्गों को सशक्तिकरण बुजुर्ग, ग्रामीण और डिजिटल रूप से कम साक्षर नागरिकों को धोखाधड़ी से बचाव मिलेगा।

4. पुलिस और साइबर यूनिट को सहयोग
* फ्रॉड कॉल्स को ट्रेस करना आसान होगा।
* कई SIM का उपयोग करने वाले स्कैम नेटवर्क की गुमनामी घटेगी।

5. डिजिटल स्वच्छता को बढ़ावा
* जिम्मेदार SIM पंजीकरण को प्रोत्साहन मिलेगा।
* फर्जी या प्रॉक्सी पहचान के दुरुपयोग पर रोक लगेगी।

CNAP साइबर अपराध पर कैसे लगाम लगाएगा साइबर अपराध प्रकार

CNAP का प्रभाव
* फर्जी पहचान वाले स्कैम फर्जी कॉलर नाम तुरंत उजागर होंगे
* सेक्सटॉर्शन / डिजिटल अरेस्ट डर फैलाने वाली फर्जी पहचान का असर घटेगा
* OTP चोरी और बैंकिंग फ्रॉड कॉलर वास्तव में बैंक से है या नहीं, जांचना आसान
* SIM स्वैप और म्यूल नेटवर्क SIM के मालिक का पता लगाना आसान
* स्कैम कॉल सेंटर गुमनामी घटेगी, बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी पर रोक

निष्कर्ष जागरूकता ही आपकी पहली सुरक्षा है। साइबर सुरक्षित रहें, डिजिटल इंडिया को सुरक्षित बनाएं।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

कितने प्रकार की रोटियां कैसे और कब किस रोटी का आहार ले जानिए बीमारी अनुसार

पिंकी कुंडू

1. मधुमेह (डायबिटीज)
*खाएँ: ज्वार, बाजरा, जौ, रागी की रोटी
*लाभ: कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स, शुगर धीरे बढ़ती है
*बचें: मैदा व बहुत मुलायम गेहूं की रोटी
2. मोटापा
*खाएँ: जौ, ज्वार, बाजरा, ओट्स की रोटी
*लाभ: अधिक फाइबर, देर तक पेट भरा रहता है
*बचें: मैदा, घी-मक्खन लगी रोटियाँ
3. कब्ज
*खाएँ: गेहूं (चोकर सहित), ज्वार, बाजरा की रोटी
*लाभ: आँतों की गति सुधरती है
*साथ में: पर्याप्त पानी
4. हृदय रोग
*खाएँ: ज्वार, जौ, ओट्स, रागी की रोटी
*लाभ: कोलेस्ट्रॉल घटाने में सहायक
*बचें: रिफाइंड आटा
5. उच्च रक्तचाप
*खाएँ: ज्वार, बाजरा, रागी की रोटी
*लाभ: पोटैशियम व फाइबर से रक्तचाप संतुलन
*बचें: बहुत नमक वाली रोटियाँ
6. एनीमिया (खून की कमी)
*खाएँ: बाजरा, रागी, चना आटा की रोटी
*लाभ: आयरन की अच्छी मात्रा
साथ में: विटामिन-C युक्त भोजन
7. थायरॉइड
*खाएँ: ज्वार, बाजरा, रागी की रोटी
*लाभ: पोषक तत्व संतुलित
*बचें: अत्यधिक मैदा
8. कमजोरी व कुपोषण
*खाएँ: गेहूं, चना आटा मिश्रित रोटी
*लाभ: प्रोटीन व ऊर्जा में वृद्धि
9. पेट की गैस/अम्लता
*खाएँ: जौ, रागी की हल्की रोटी
*बचें: बहुत मोटी व अधपकी रोटियाँ
10. बच्चों व वृद्धों के लिए
*खाएँ: नरम गेहूं या जौ की रोटी
*लाभ: पचने में आसान

अपर्याप्त नींद और निष्क्रिय जीवनशैली से शरीर की मांसपेशियों को होने वाला नुकसान

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में नींद की कमी और शारीरिक निष्क्रियता एक सामान्य समस्या बन चुकी है। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि ये दोनों आदतें मिलकर हमारे शरीर की मांसपेशियों (Muscles) को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा सकती हैं।

अपर्याप्त नींद का मांसपेशियों पर प्रभाव नींद के दौरान ही शरीर की मांसपेशियों की मरम्मत, पुनर्निर्माण और मजबूती होती है।

जब नींद पूरी नहीं होती:

* मांसपेशियों की रिकवरी धीमी हो जाती है
* मांसपेशियों में दर्द, जकड़न और कमजोरी बढ़ती है
* मांसपेशियों का क्षय (Muscle wasting) होने लगता है
* शरीर में सूजन बढ़ाने वाले हार्मोन सक्रिय हो जाते हैं
* पर्याप्त नींद न मिलने से ग्रोथ हार्मोन का स्राव भी कम हो जाता है, जो मांसपेशियों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निष्क्रिय (Sedentary) जीवनशैली का दुष्प्रभाव

* लगातार बैठकर काम करना, शारीरिक गतिविधि का अभाव और व्यायाम न करनाः
* मांसपेशियों की ताकत और लचीलापन घटाता है
* मांसपेशियों का आकार छोटा होने लगता है (Muscle atrophy)
* पीठ, गर्दन और जोड़ों में दर्द बढ़ता है
* शरीर का संतुलन और सहनशक्ति कम होती है
* लंबे समय तक निष्क्रिय रहने से मांसपेशियाँ "सुस्त" हो जाती हैं और चोट लगने का खतरा भी बढ़ जाता है।
* संयुक्त प्रभावः दोहरी मार
* जब नींद की कमी और निष्क्रिय जीवनशैली एक साथ होती हैं, तोः
* मांसपेशियों की टूट-फूट बढ़ जाती है
* थकान जल्दी महसूस होती है
* दैनिक कार्यों में भी कठिनाई होने लगती है
* उम्र से पहले कमजोरी और शारीरिक गिरावट शुरू हो जाती है

* बचाव और समाधान
* रोज़ाना 7–8 घंटे की गुणवत्तापूर्ण नींद लें
* नियमित हल्का-फुल्का व्यायाम, योग या पैदल चलना अपनाएँ
* लंबे समय तक बैठने के बीच-बीच में शरीर को हिलाएँ
* संतुलित आहार और पर्याप्त प्रोटीन लें
* निष्कर्षः अच्छी नींद और सक्रिय जीवनशैली मांसपेशियों की सेहत की नींव हैं। इन्हें नज़रअंदाज़ करना शरीर को धीरे-धीरे अंदर से कमज़ोर कर देता है। आज सही आदतें अपनाकर ही कल एक मज़बूत और स्वस्थ शरीर पाया जा सकता है।

60 वर्ष की आयु के बाद भी स्वस्थ और सक्रिय रहना, एक वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण

बुज़ुर्ग होना कमजोरी का पर्याय नहीं है। आज के वैज्ञानिक प्रमाण स्पष्ट रूप से बताते हैं कि 60 वर्ष की आयु के बाद भी व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ, सक्रिय और आत्मनिर्भर रह सकता है,
बशर्ते वह नियमित रूप से शारीरिक गतिविधियों को अपनी दिनचर्या में शामिल करे—जैसे योग, तेज़ चाल से चलना (Brisk Walking), साइक्लिंग, हल्का व्यायाम और शक्ति-वर्धक अभ्यास।
विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, नियमित शारीरिक गतिविधि न केवल जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाती है, बल्कि नींद की गुणवत्ता सुधारती है, मांसपेशियों को मज़बूत रखती है और कई दीर्घकालिक बीमारियों के जोखिम को कम करती है।
1. शारीरिक गतिविधि शरीर की कई प्रणालियों को सशक्त बनाती है
* मांसपेशियों की शक्ति और कार्यक्षमता में सुधार उम्र बढ़ने के साथ शरीर में मांसपेशियों का आकार और ताकत धीरे-धीरे कम होने लगती है, जिसे सार्कोपीनिया (Sarcopenia) कहा जाता है। लेकिन—
* नियमित व्यायाम, विशेषकर शक्ति और संतुलन से जुड़े अभ्यास, मांसपेशियों के क्षय को धीमा कर देते हैं या रोक सकते हैं।
* रेज़िस्टेंस ट्रेनिंग और नियमित मूवमेंट से मांसपेशियों में प्रोटीन निर्माण बना रहता है, जिससे दैनिक कार्य करना आसान होता है और गिरने का जोखिम कम होता है।
* मेटाबॉलिज़्म और पाचन में सुधार
* नियमित शारीरिक गतिविधि से:
* मेटाबॉलिक रेट बेहतर होता है, जिससे शरीर भोजन को सही ढंग से ऊर्जा में बदलता है।
* पाचन तंत्र में रक्त प्रवाह बढ़ता है और आंतों की गतिविधि सुधरती है।
* ग्लूकोज़ का उपयोग बेहतर होता है, जिससे इंसुलिन रेज़िस्टेंस और मधुमेह का खतरा कम होता है।
* नींद की गुणवत्ता में सुधार
* व्यायाम शरीर की सर्केडियन रिदम (जैविक घड़ी) को संतुलित करता है, जिससे जल्दी और गहरी नींद आती है।
* शोध बताते हैं कि बुज़ुर्गों में शक्ति प्रशिक्षण और नियमित गतिविधियाँ, निष्क्रिय जीवनशैली की तुलना में, नींद की गुणवत्ता को कहीं अधिक बेहतर बनाती हैं।
२. मानसिक स्वास्थ्य और मस्तिष्क के लिए लाभ शारीरिक गतिविधि केवल शरीर ही नहीं, मस्तिष्क के लिए भी अत्यंत लाभकारी है:
* इससे मस्तिष्क में रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ती है, जिससे स्मृति और एकाग्रता बेहतर होती है।
* व्यायाम "फील-गुड" रसायनों (जैसे एंडोर्फ़िन) को सक्रिय करता है, जो तनाव, चिंता और अवसाद को कम करते हैं।
* नवीन शोधों में यह भी पाया गया है कि नई तकनीकों जैसे VR-आधारित एक्सरसाइज़ (Exergames) बुज़ुर्गों में मानसिक सक्रियता और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकती हैं।
३. निष्क्रिय (Sedentary) जीवनशैली के गंभीर दुष्परिणाम आधुनिक जीवनशैली में लंबे समय तक बैठना और कम चलना-फिरना, विशेषकर 60 वर्ष के बाद, कई गंभीर समस्याओं को जन्म देता है:
* अपर्याप्त और खराब नींद शारीरिक निष्क्रियता से नींद में बाधा आती है, जिससे हार्मोन संतुलन, मूड और शरीर की मरम्मत प्रक्रिया प्रभावित होती है।
* मेटाबॉलिक सिंड्रोम, निष्क्रियता के कारण:
* रक्त शर्करा बढ़ना
* असामान्य कोलेस्ट्रॉल
* उच्च रक्तचाप
* पेट के आसपास चर्बी
* जैसी समस्याएँ एक साथ उत्पन्न हो सकती हैं, जिन्हें मेटाबॉलिक सिंड्रोम कहा जाता है।
* मांसपेशियों का क्षय (Muscular Atrophy) कम उपयोग से मांसपेशियाँ कमजोर होती जाती हैं, ताकत घटती है और व्यक्ति की कार्यक्षमता कम हो जाती है।
* हृदय और रक्तवाहिनी रोग लंबे समय तक निष्क्रिय रहने से धमनियों में चर्बी जमा होती है, जिससे हृदय रोग, हार्ट अटैक और रक्त संचार की समस्याएँ बढ़ती हैं।
* मधुमेह का बढ़ा हुआ जोखिम शारीरिक गतिविधि की कमी से ग्लूकोज़ मेटाबॉलिज़्म बिगड़ता है और टाइप-२ डायबिटीज़ का खतरा बढ़ता है।
* नवीनतम वैज्ञानिक निष्कर्ष (Latest Developments)
* नियमित व्यायाम मृत्यु दर को कम करता है और आयु बढ़ाने में सहायक होता है—कई बार यह प्रभाव दवाओं के बराबर या उनसे भी बेहतर पाया गया है।
* मध्यम स्तर की गतिविधि भी पर्याप्त है—तेज़ चाल से चलना, साइक्लिंग, योग, ताई-ची और संतुलन अभ्यास से गिरने, मधुमेह और हृदय रोग का जोखिम कम होता है।
* सक्रिय बुज़ुर्गों में मानसिक लचीलापन और संज्ञानात्मक क्षमता निष्क्रिय लोगों की तुलना में बेहतर पाई गई है।
* निष्कर्ष (The Bottom Line) 60 वर्ष की आयु के बाद भी सक्रिय रहना स्वास्थ्य में किया गया सबसे सशक्त निवेश है।
* शारीरिक गतिविधि मेटाबॉलिज़्म, मांसपेशियों और पाचन को सुधारती है
* यह नींद की गुणवत्ता और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है
* हृदय रोग, मधुमेह और मेटाबॉलिक समस्याओं का जोखिम कम करती है
* आत्मनिर्भरता, गतिशीलता और जीवन की गुणवत्ता बनाए रखती है
* उम्र कोई बाधा नहीं है — "Movement is Medicine" (गतिविधि ही सबसे अच्छी दवा है)।

टेलीपैथी एक सूक्ष्म कला

पिंकी कुंडू

*कभी आपने ऐसा महसूस किया कि, आप किसी को याद कर रहे हों और तुरंत उसका फोन आ गया ? या फिर
*आप जो सोच रहे हो लिखने को, उसके पहले सामने वाले ने ही लिख दिया हो ?
*क्या यह ही टेलीपैथी है ?
टेलीपैथी (Telepathy) यह शब्द सुनते ही मन में एक रहस्यमय रोमांच उठता है। सामान्य समझ के अनुसार,
टेलीपैथी वह प्रक्रिया है जिसमें बिना किसी शारीरिक माध्यम - न शब्द, न संकेत, न लेखन, केवल एक व्यक्ति के विचार या भावनाएँ दूसरे व्यक्ति तक पहुँच जाती हैं।
*हिंदी में इसे दूर की अनुभूति या मानसिक संचार कहा जा सकता है।
पर मेरा अनुभव इस परिभाषा से आगे जाता है। मेरे अनुभव में, जब कोई व्यक्ति टेलीपैथी के प्रति सचमुच संवेदनशील हो जाता है, तो वह केवल दूसरों के विचारों की तरंगें ही नहीं पकड़ता, बल्कि आगामी घटनाओं की सूक्ष्म तरंगों को भी महसूस करने लगता है।
यही वह अवस्था है जहाँ मन भविष्य की संभावनाओं को भाँपने लगता है -
और कई अप्रिय घटनाओं से पहले ही सावधान कर देता है, या
सकारात्मक तरंगों की दिशा में स्वयं को प्रवाहित कर लाभ भी ले सकता है।
अब टेलीपैथी को थोड़ा गहराई से समझते हैं।
टेलीपैथी शब्द की उत्पत्ति : टेलीपैथी ग्रीक भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है
Tele (दूर) और Pathe (अनुभव) अर्थात - दूर से अनुभव करना।
टेलीपैथी के प्रकार : टेलीपैथी को सामान्यतः तीन प्रमुख श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:
1. सहज टेलीपैथी (Spontaneous Telepathy) यह सबसे सामान्य और प्राकृतिक रूप है। जैसे - किसी अपने को दिल की गहराईयों से याद करना और उसी क्षण उसके फोन का आ जाना।
*यह प्रायः उन लोगों के बीच होता है जिनके बीच गहरा भावनात्मक या मानसिक संबंध होता है।
2. मानसिक टेलीपैथी (Mental Telepathy) इसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपने विचारों को दूसरे तक भेजने या उसके विचारों को ग्रहण करने का प्रयास करता है।
*यह एक प्रशिक्षित मानसिक प्रक्रिया है, जो अभ्यास से विकसित होती है। इसके लिए एक शांत मन और

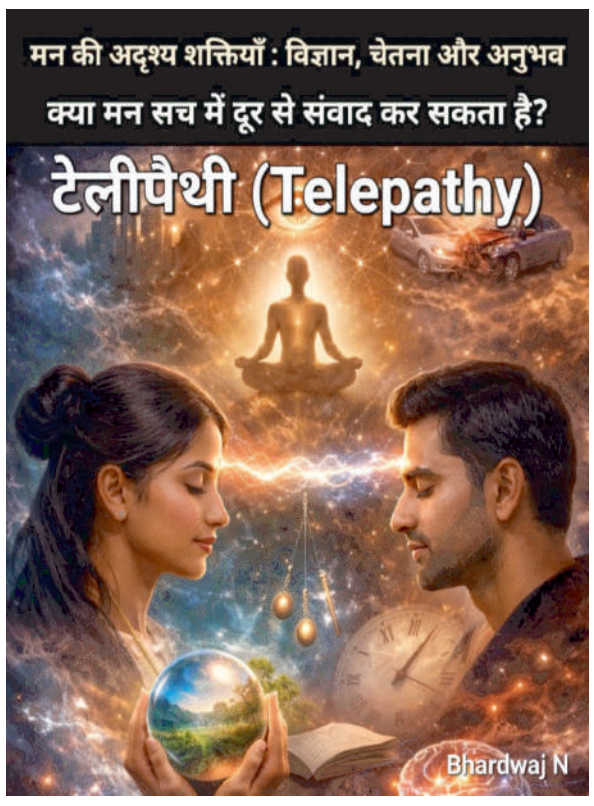

उसके उपयोग करने का अभ्यास आवश्यक होता है।
3. आध्यात्मिक टेलीपैथी (Spiritual Telepathy) यह सबसे सूक्ष्म और उच्च स्तर की अवस्था होती है। यह गहन ध्यान, मौन और चेतना की शुद्धता से जुड़ी होती है, जहाँ संवाद मन से नहीं बल्कि चेतना से चेतना के स्तर पर घटित होता है। यह चेतना की वही अवस्था है, जहां विचार तरंगो का आदान प्रदान और उसका कार्यान्वयन उतनी ही सहजता से होती है जैसे हम सामान्य अवस्था में एक दूसरे से बातचीत करते हैं।
टेलीपैथी कैसे विकसित की जा सकती है? क्या ये सम्भव है? टेलीपैथी कोई चमत्कार नहीं, बल्कि एकाग्र मन की क्षमता है। कुछ अभ्यासों द्वारा हम इसका नियंत्रित उपयोग कर सकते हैं।
1. विज्ञान क्या कहता है? आधुनिक विज्ञान के अनुसार टेलीपैथी का कोई निर्णायक प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं है। न्यूरोसाइंस बताता है कि मस्तिष्क की विद्युत तरंगें इतनी सूक्ष्म होती हैं कि वे बिना किसी उपकरण के दूर तक संप्रेषित नहीं हो सकतीं। इसी कारण इसे अक्सर "Pseudoscience" की श्रेणी में रखा जाता है।
2. अनुभव क्या कहते हैं? दुनिया भर में असंख्य लोग या दूसरे शब्दों मे, हम में से लगभग हर किसी ने अपने जीवन मे कभी न कभी छठी इंद्री या पूर्वाभास का अनुभव किया ही होता है। विज्ञान इन्हें संयोग कहता है, पर हमारा अनुभव इन्हें केवल संयोग मानने से इंकार करता है। मेरे अनुभव में, टेलीपैथी मन की वह अवस्था है, जहाँ मानसिक तरंगों का प्रक्षेपण और ग्रहण संभव होता है। लेकिन यह अवस्था तभी आती है जब मन पर्याप्त शांत, संवेदनशील और अनुशासित हो। ये अवस्था कोई भी मनुष्य थोड़े प्रयासों से प्राप्त कर सकता।
यदि आप नीचे बताए गए अभ्यासों को गंभीरता और निरंतरता के साथ करें तो आप भी अपने अंदर ये क्षमता विकसित कर सकते हैं।
1. शून्य ध्यान (Zero State Meditation) टेलीपैथी के लिए मस्तिष्क को एक खाली कैनवास (Blank Canvas) की तरह बनाना पड़ता है।
*कैसे करें : सुखासन में बैठें और अपनी आँखें बंद करें। अपने विचारों को रोकने की बिल्कुल कोशिश न करें, बल्कि उन्हें सिर्फ आते-जाते देखें। धीरे-धीरे अपना ध्यान सिर्फ अपनी सांसों पर ही टिका दें।
*लक्ष्य : मन में विचारों की भीड़ को कम करना, ताकि आप बाहरी सूक्ष्म संकेतों के प्रति संवेदनशील हो सकें।
2. विज़ुअलाइजेशन (Visualization Technique) यह तकनीक संदेश भेजने (Sending) की क्षमता को बढ़ाती है।
*कैसे करें: इस के लिए किसी करीबी मित्र या परिवार के सदस्य की छवि अपनी बंद आँखों के पीछे बिल्कुल स्पष्ट देखने का प्रयास करें। उनकी आवाज़, उनकी गंध और उनके व्यक्तित्व को महसूस करें।
*अभ्यास : फिर जब उनकी छवि स्पष्ट हो जाए, तब एक सरल शब्द (जैसे 'Hi' न मस्ते या कोई फूल) उनके मन में भेजने की कल्पना करें। जैसे जैसे आपका अभ्यास बढ़ता जाएगा, आप पाएंगे कि, आप के संदेश उस लक्ष्य को मिलने लगे हैं।
3. थर्ड आई एक्टिवेशन (Third Eye Focus) योग शास्त्र के अनुसार, आज्ञा चक्र (दोनों भौहों के बीच का स्थान) मानसिक संचार का केंद्र माना जाता है।
*कैसे करें : ध्यान मुद्रा में बैठें और अपनी बंद आँखों से दोनों भौहों के बीच देखने की कोशिश करें। यहाँ एक नीले या सफेद प्रकाश की कल्पना करें।
*लाभ : इससे एकाग्रता (Focus) कई गुना बढ़ जाती है, जो टेलीपैथिक लिंक बनाने के लिए अनिवार्य है।
4. जेनर कार्ड्स का अभ्यास (Zener Cards Exercise) वर्तमान समय में यह तकनीक टेलीपैथी की जांच और प्रशिक्षण के लिए काफी लोकप्रिय है।
*Zener Cards : इसमें 5 तरह के कार्ड होते हैं (सर्कल, प्लस, वेव, स्क्वायर और स्टार)। वैकल्पिक रूप मे ताश के पत्तों का उपयोग भी कर सकते हैं, पर वो थोड़ा कठिन होता है।
*विधि : एक व्यक्ति कार्ड को देखता है (Sender) और दूसरा व्यक्ति आँखें बंद करके यह महसूस करने की कोशिश करता है कि वह कौन सा कार्ड है (Receiver)। बाद मे आप यह अभ्यास किसी शब्द, वाक्यों या नंबर के साथ भी कर सकते हैं।

अभ्यास के लिए कुछ जरूरी टिप्स

1. रिसीवर का चयन : शुरुआत में ऐसे व्यक्ति के साथ अभ्यास करें जिससे आपका भावनात्मक जुड़ाव (Emotional Connection) बहुत गहरा हो, जैसे माँ, भाई या सबसे अच्छा दोस्त।
2. छोटा संदेश चुनें : शुरुआत में जटिल वाक्य न भेजें। केवल एक रंग, एक नंबर (1 से 10 के बीच) या एक सरल ज्यामितीय आकृति (Circle/Triangle) चुनें।
3. उपयुक्त समय : इसके लिए सुबह का समय (ब्रह्म मुहूर्त) या रात को सोने से ठीक पहले का समय सबसे अच्छा होता है जब वातावरण और मन दोनों शांत होते हैं।
4. याद रखें : टेलीपैथी एक सूक्ष्म कला है। इसमें सफलता तभी मिलती है जब आप बिना किसी तनाव या दबाव के, खेल-खेल में इसका अभ्यास करते हैं।
मेरा मानना है कि, इसे चमत्कार या तंत्र - मंत्र की तरह नहीं, बल्कि मानसिक और चेतन विकास की एक संभावित क्षमता के रूप में देखा जाना चाहिए।

अफ्लाटॉक्सिन (Aflatoxin)

अफ्लाटॉक्सिन अत्यंत विषैले (HIGHLY TOXIC) और कैंसर उत्पन्न करने वाले (CARCINOGENIC) पदार्थ होते हैं, जो मुख्यतः ASPERGILLUS FLAVUS और ASPERGILLUS PARASITICUS नामक फफूंद (मोल्ड) द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये फफूंद तब पनपते हैं जब खाद्य पदार्थों को गर्म, आर्द्र तथा हवादार व्यवस्था के अभाव में संग्रहित किया जाता है।
अफ्लाटॉक्सिन से दूषित होने वाले सामान्य खाद्य पदार्थ
* मूंगफली (GROUNDNUT) एवं उससे बने उत्पाद
* मक्का (कॉर्न)
* चावल एवं गेहूँ
* दालें और अन्य अनाज
* मसाले (मिर्च, हल्दी, धनिया आदि)
* सूखे मेवे (बादाम, पिस्ता, काजू)
* दूध (दूषित पशु-आहार के माध्यम से – अफ्लाटॉक्सिन M_1)
अफ्लाटॉक्सिन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव अफ्लाटॉक्सिन प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले सबसे खतरनाक विषाक्त पदार्थों में से एक है।
अल्पकालिक प्रभाव (ACUTE EXPOSURE):
* उल्टी
* पेट में दर्द
* यकृत (लीवर) को नुकसान
* पीलिया
* गंभीर मामलों में मृत्यु तक संभव
दीर्घकालिक प्रभाव (CHRONIC EXPOSURE):
* लीवर कैंसर (हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा)
* लीवर सिरोसिस
* प्रतिरक्षा प्रणाली का कमजोर होना
* बच्चों में शारीरिक वृद्धि में रुकावट
* वायरल हेपेटाइटिस की जटिलताओं का बढ़ा हुआ खतरा
अफ्लाटॉक्सिन B_1 को WHO और IARC द्वारा GROUP-1 मानव कैंसरकारक (HUMAN

CARCINOGEN) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
भारत में अफ्लाटॉक्सिन एक गंभीर समस्या क्यों है?
* गर्म और आर्द्र जलवायु
* अनाजों को सही ढंग से न सुखाना और गलत भंडारण
* खाद्य पदार्थों का लंबे समय तक संग्रह
* पशुओं के लिए दूषित चारे का उपयोग
रोकथाम और सुरक्षा उपाय
* भंडारण से पहले अनाज को अच्छी तरह सुखाना
* खाद्य पदार्थों को ठंडी, सूखी और हवादार जगह पर रखना
* फफूंद लगे, रंग बदले या कड़वे स्वाद वाले खाद्य पदार्थों से बचें
* बासी मूंगफली या अज्ञात स्रोत का मूंगफली तेल न लें
* नियमित खाद्य परीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण
* पशु आहार में अफ्लाटॉक्सिन-बाइंडिंग एजेंट्स का उपयोग
पकाने, उबालने या भूनने से अफ्लाटॉक्सिन पूरी तरह नष्ट नहीं होता।
मुख्य संदेश (KEY TAKEAWAY)
* अफ्लाटॉक्सिन प्रदूषण अदृश्य, मौन और अत्यंत घातक होता है।
* फफूंद की वृद्धि को रोकने के लिए उचित भंडारण और खाद्य सुरक्षा उपाय ही इसका एकमात्र प्रभावी बचाव हैं।

महाबली हनुमान, जो सदैव उत्साह और भक्ति से भरे रहते थे, क्या और कब हुए अत्यंत व्यथित

पिंकी कुंडू

दृश्य: वातावरण शांत है, लेकिन वायु में एक अजीब सी उदासी घुली हुई है। महाबली हनुमान, जो सदैव उत्साह और भक्ति से भरे रहते थे, आज अत्यंत व्यथित हैं। वे माता सीता के कक्ष में प्रवेश करते हैं।

1. हनुमान की व्याकुलता: हनुमान जी माता सीता के चरणों में आकर बैठ गए। उनका सिर झुका हुआ था और नेत्रों से अविरल अश्रु धारा बह रही थी। पृथ्वी पर वज्र के समान कठोर शरीर वाले हनुमान का हृदय आज मोम की तरह पिघल रहा था।

* माता सीता ने जब अपने लाडले पुत्र समान हनुमान की यह दशा देखी, तो वे विचलित हो उठीं। उन्होंने स्नेहपूर्वक पूछा, "कहो लाडले, आज यह कैसा रूप धरा है ? तुम्हारे मुख पर यह कैसी उदासी छाई है ? जिन नेत्रों में सदैव राम की छवि चमकती थी, आज उनमें यह नीर (आंसू) क्यों भरा है ?"

१. अमरता का अस्वीकार: हनुमान जी ने रुंधे गले से उत्तर दिया, "हे माते ! आपने मुझे लंका में अजर-अमर होने का वरदान दिया था। आपने मुझे अष्टसिद्धि और नवनिधि का स्वामी बनाया। किंतु माँ, आज मैं उन सभी वरदानों को लौटाने आया हूँ। मुझे यह अमरता नहीं चाहिए। मुझे अजर होने का वरदान नहीं चाहिए।"

* हनुमान जी सिसकते हुए बोले, "जिस जीवन में, जिस कालखंड में मुझे श्री राम के चरणों से दूर रहना पड़े, वह जीवन मुझे स्वीकार नहीं है। अमर रहकर मैं क्या करूँगा यदि मेरे राम ही मेरे पास न हों ?"

* माता सीता मुस्कुराईं और आश्चर्य से बोलीं, "बेटा, यह तुम कैसी अबोध बालकों जैसी बात कर रहे हो ? जिस अमृत और अमरता के लिए देवता भी तरसते हैं, असुर कठोर तपस्या करते हैं, तुम उसे ठुकरा रहे हो ?"

३. प्रभु श्रीराम का आगमन: संवाद चल ही रहा था कि तभी प्रभु श्रीराम कक्ष में पधारे। माँ और बेटे के बीच गंभीर चर्चा देखकर वे रुक गए और स्नेह से बोले, "यहाँ माँ-बेटे में किस गंभीर विषय पर चर्चा चल रही है ?"

* माता सीता ने प्रभु की ओर देखा और कहा, "ना जाने हनुमान को क्या हो गया है नाथ ! यह अपना 'अजर-अमर' होने का वरदान मुझे लौटाने आया है। यह कहता है इसे अमरता नहीं चाहिए।"

* श्रीराम ने मुस्कुराते हुए हनुमान की ओर देखा और छेड़ते हुए कहा, "क्यों बजरंगी ? यह कैसी नई लीला है ? तीनों लोकों में कौन ऐसा होगा जो अमृत की कमाई और अमरता का सुख छोड़ेगा ?"

4. विरह की वेदना: प्रभु के वचन सुनकर हनुमान जी का धैर्य टूट गया। वे फूट-फूट कर रो पड़े। उन्होंने कहा, "प्रभु ! आप मुझे बहलाइए मत। मैं जानता हूँ कि आप अपनी लीला समाप्त कर साकेत धाम (वैकुंठ) पधार रहे हैं। आप मुझे इस धरती पर अकेला छोड़कर जा रहे हैं।"

* हनुमान जी ने अत्यंत करुण स्वर में कहा, "हे नाथ ! आपके बिना यह अमरता मेरे लिए अभिशाप है। आपके बिना युगों-युगों तक

जीवित रहना अमृत पीना नहीं, अपितु रोज विष पीने के समान होगा। इस विरह की अग्नि में तड़प-तड़प कर जीने से तो मृत्यु भली है। मुझे अपने साथ ले चलिए प्रभु।"

* हनुमान जी का यह प्रेम देखकर श्रीराम का हृदय भर आया। उन्होंने गंभीर होकर कहा, "हनुमान ! तुम्हें रोकना मेरा स्वार्थ नहीं, संसार की आवश्यकता है। सीता का वह वरदान केवल तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि समस्त जगत के कल्याण के लिए था। जब तक यह धरती रहेगी, धर्म की रक्षा के लिए तुम्हें यहाँ रहना होगा।"

5. अद्भुत वरदान: जहाँ राम कथा, वहाँ हनुमान: प्रभु ने कहा, "मांगो हनुमान ! अपनी व्यथा दूर करने के लिए जो भी वरदान मांगना है, मांग लो।"

* हनुमान जी ने आँसू पोंछे और हाथ जोड़कर कहा, "प्रभु, यदि मुझे यहाँ रहना ही है, तो मेरा एक ही वरदान है। जहाँ-जहाँ आपकी कथा हो, जहाँ-जहाँ आपका कीर्तन हो, जहाँ आपका नाम लिया जाए, वहाँ-वहां मुझे उपस्थित रहने का अधिकार मिले। मुझे उस कथा में, उस कीर्तन में वही आनंद मिले जो आपके सानिध्य में मिलता है।"

* माता सीता ने तुरंत कहा, "दे दो प्रभु ! यह वरदान इन्हें दे दो।"

* भगवान राम ने हँसकर कहा, "सीते ! तुम समझ नहीं रही हो कि यह क्या मांग रहा है। यह अनगिनत शरीर मांग रहा है। एक ही समय पर हज़ारों जगहों पर राम-कथा होगी, और यह हर जगह मौजूद रहने का वरदान मांग रहा है।"

* सीता जी ने वात्सल्य भाव से कहा, "तो दे दीजिये नाथ ! आपका परम भक्त है, और क्या मांगेगा आपसे ?"

6. कलयुग के देवता: तब प्रभु श्रीराम ने हनुमान जी के सिर पर हाथ रखा और कहा:

> "तथास्तु ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी बजरंगी। जहाँ भी मेरी चर्चा होगी, जहाँ भी रामायण का पाठ होगा, वहाँ तुम अदृश्य रूप में अवश्य विराजोगे। जहाँ मेरा चिंतन होगा, वहाँ तुम्हारा ज़िक्र अनिवार्य होगा।"

प्रभु ने आगे एक और अद्भुत बात कही: "कलयुग में, हे हनुमान, मुझसे भी अधिक तुम्हारी पूजा होगी। जो कोई भी तुम्हारी शरण में आएगा, उसे मेरी भक्ति स्वत: प्राप्त हो जाएगी। तुम मेरे हर मंदिर की शोभा बढ़ाओगे। तुम भक्तों के रक्षक बनोगे और राम नाम की धुन पर सुध-बुध खोकर नाचोगे।"

यह सुनते ही हनुमान जी का सारा दुख कपूर की तरह उड़ गया। वे आनंद से भर उठे और प्रभु के चरणों में शीश नवाया। उन्हें ज्ञात हो गया कि राम कहीं नहीं जा रहे, वे तो 'राम-नाम' और 'राम-कथा' के रूप में सदैव उनके पास ही रहेंगे।

अगर यह कथा आपके हृदय को छू गई हो और आप ऐसी ही भक्तिमय कहानियों का आनंद लेना चाहते हैं, तो 'ब्रह्म युगम' को आज ही सब्सक्राइब करें।

जय सिया राम! जय हनुमान!

वृन्दावन केवल एक स्थान नहीं, यह तो वह धाम है

पिंकी कुंडू

वृन्दावन, केवल एक स्थान नहीं, यह तो वह धाम है जहाँ अहंकार गल जाता है, विद्या मौन हो जाती है और भक्ति अपने चरम पर पहुँच जाती है।

इसी पावन ब्रजभूमि पर एक बार वह महापुरुष आए, जिनके शब्दों में राम स्वयं बोलते हैं — गोस्वामी तुलसीदास जी।

कहते हैं, तुलसीदास जी वृन्दावन में ठहरे हुए थे। भंडारों में उनकी विशेष रुचि नहीं थी, पर जब महादेव की भीतर से प्रेरणा मिली, तो वे संत नाभा जी के भंडारे की ओर चल पड़े। समय कुछ विलंब का हो गया। जब वे पहुँचे, तो संतों की अपार भीड़ थी। कहीं बैठने की जगह नहीं मिली। तब गोस्वामी जी ने वही स्थान चुना जहाँ संतों की पनहियाँ, जूते-चप्पल रखे थे। वहीं बैठ गए।

जिसे संसार तुच्छ समझे, वही तुलसी के लिए तीर्थ बन गया। भंडारा खीर का था — क्योंकि वृन्दावन के ठाकुर को खीर अत्यंत प्रिय है। सब संत अपने-अपने पात्र लेकर आए थे। गोस्वामी जी के पास कोई पात्र नहीं था। परोसने वाला आया और बोला — "बाबा, तुम्हारा पात्र कहाँ है ? बिना बर्तन खीर कैसे दूँ?" तुलसीदास जी मुस्कराए। पास ही एक संत की पनहिया रखी थी। उन्होंने उसे आगे कर दिया और कहा — "इसी में खीर डाल दो।"

सभा में हलचल मच गई, परोसने वाला क्रोधित हो उठा। कटु वचन कहने लगा। तभी संत नाभा जी भी आ पहुँचे।

तुलसीदास जी की आँखों से अश्रु बहने लगे। उन्होंने अत्यंत दीन स्वर में कहा — "यह जूता किसी संत का है और वह भी वृन्दावन के रसिक संत का। इसमें ब्रजरज लगी है। जब यह रज खीर के साथ मेरे भीतर जाएगी, तो मेरा अंत:करण पवित्र हो जाएगा।" सब संत उठकर तुलसीदास जी के चरणों में गिर पड़े, परोसने वाले ने शत - शत बार क्षमा माँगी।

यह था तुलसीदास जी का दैन्य — जहाँ महानता स्वयं को सबसे छोटा मान लेने में है।

धन्य है वृन्दावन... धन्य है वह रज... जहाँ राधारानी और कृष्ण के चरण पड़े। वृन्दावन में प्रवेश कोई संयोग नहीं, यह राधा की कृपा का आमंत्रण होता है।

तुलसीदास जी जानते थे — राम और कृष्ण में कोई भेद नहीं पर वृन्दावन में हर ओर एक ही स्वर गूँजता था — "राधे-राधे।"

कहीं "राम-राम" सुनाई नहीं देता था। उस क्षण तुलसी के हृदय से जो भाव निकला,

* वह आज भी अमर है — वृन्दावन ब्रजभूमि में कहाँ राम सों बेर, राधा राधा रटत हैं आक ढ़ाक अरू खैर।

फिर वह दिव्य क्षण आया। जब तुलसीदास जी मदनमोहन जी के दर्शन कर रहे थे। एक पुजारी के व्यंग्य ने वातावरण को कठोर बना दिया तुलसीदास जी ने हाथ जोड़कर प्रभु से कहा — "हे ठाकुर ! मैं जानता हूँ आप ही राम हैं, आप ही कृष्ण हैं पर आज आपके भक्तों के मन में भेद आ गया है। आपको राम बनने में कितनी देर लगेगी ? आज आप राम बन जाइए।"

और फिर... भक्त की पुकार पर

* बिहारी जी ने बांसुरी त्याग दी।

* गोपियों का संग छोड़ा, और

* साक्षात रघुनाथ बन गए- धनुष-बाण हाथ में धारण कर।

यह कोई कथा मात्र नहीं, यह भक्ति की विजय है। यह प्रमाण है कि भगवान रूप बदलते हैं, पर भक्त का भाव नहीं बदलता।

तुलसीदास हमें सिखाते हैं कि भक्ति ऊँचाई नहीं माँगती, वह तो विनम्रता चाहती है।

जहाँ दैन्य है, वहीं राम हैं।

जहाँ समर्पण है, वहीं कृष्ण हैं।

ऐसे संत युगों में एक बार आते हैं।

ऐसे क्षण आत्मा को झकझोर देते हैं।

देवी सती के शरीर के विभिन्न अंगों से निर्मित 51 शक्तिपीठों की जानकारी

पिंकी कुंडू

शक्तिपीठों के बारे में जानकारी शक्तिपीठ हिंदू धर्म में माता सती के 51 शक्ति स्थलों को कहा जाता है, जो देवी शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित हैं। इन स्थलों का महत्व हिंदू धर्म में बहुत अधिक है, और इनमें से अधिकांश स्थल भारत और उसके आसपास के देशों में स्थित हैं।

शक्तिपीठों की कहानी भगवान शिव और माता सती से जुड़ी हुई है, जिनके अनुसार सती के शरीर के विभिन्न अंग इन स्थलों पर गिरे थे। प्रत्येक शक्तिपीठ का अपना महत्व और पौराणिक कथा है।

शक्तिपीठों की उत्पत्ति की कथा माता सती के पिता दक्ष प्रजापति ने एक महायज्ञ का आयोजन किया था, लेकिन उन्होंने भगवान शिव को आमंत्रित नहीं किया। इससे क्रोधित होकर माता सती ने यज्ञ कुंड में अपने प्राण त्याग दिए। भगवान शिव ने माता सती के शव को उठा लिया और तांडव करने लगे। भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के शरीर को टुकड़ों में काट दिया, जिससे 51 शक्तिपीठों का निर्माण हुआ।

शक्तिपीठों के संबंध में क्या रोचक बातें हैं ? शक्तिपीठ हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखते हैं। ये 51 पवित्र स्थल हैं जो देवी सती के शरीर के विभिन्न अंगों के गिरने के स्थानों के रूप में जाने जाते हैं। आइए कुछ रोचक बातें जानते हैं:

शक्तिपीठों का महत्व शक्तिपीठों की यात्रा एक आध्यात्मिक अनुभव है, जो देवी शक्ति के साथ आत्मिक संबंध बनाने का अवसर प्रदान करती है। इन स्थलों पर दर्शन और पूजा-अर्चना करने से भक्तों को विशेष लाभ होता है।

शक्तिपीठों के महत्व शक्तिपीठों का महत्व हिंदू धर्म में बहुत अधिक है, और इन स्थानों पर माता सती की पूजा की जाती है। ये शक्तिपीठ शक्ति और आध्यात्मिकता के केंद्र माने जाते हैं।

यहाँ 51 शक्तिपीठों की सूची दी गई है जो देवी सती के शरीर के विभिन्न अंगों से निर्मित हुए हैं:

पश्चिम बंगाल में शक्तिपीठ
* युगाद्या/जुगाड़्याः क्षीरग्राम
- बहुलाः केतूग्राम
- त्रिस्त्रोताः जलपाइगुड़ी
- नलहाटीः नलहाटी
- वक्त्रेश्वरः वक्रेश्वर
- नन्दीपुरः सैन्थिआ
- किरीटः किरीटकोण
- विभाषः तमलुक
- अट्टहासः लाबपुर
- रत्नावलीः कृष्णानगर
- कालीपीठ, कालीघाटः कोलकाता

बांग्लादेश में शक्तिपीठ
* श्री शैलः सिल्हैट टाउन
- सुगंधाः शिकारपुर
- करतोयातटः भवानीपुर
- चट्टल/छत्रालः सीताकुण्ड
- यशोरः ईश्वरीपुर

अन्य राज्य में शक्तिपीठ
* जयन्ती शक्तिपीठः नर्तियांग, मेघालय
- त्रिपुरसुन्दरी शक्तिपीठः उदयपुर, त्रिपुरा
- कामरूपः गुवाहाटी, असम
- उत्कल/बिराज शक्तिपीठः जाजपुर, उड़ीसा
- मिथिलाः उच्चैठ, बिहार
- पटनेश्वरीः पटना, बिहार
- वैद्यनाथः देवघर, झारखण्ड
- वृन्दावनः भूतेश्वर, उत्तर प्रदेश
- वाराणसीः वाराणसी, उत्तर प्रदेश
- प्रयागः प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
- रामगिरिः चित्रकूट, उत्तर प्रदेश
- मणिवेदिक/मणिबंधः पुष्कर, राजस्थान
- विराटः विराटनगर, राजस्थान
- कुरुक्षेत्र शक्तिपीठः थानेसर, हरियाणा
- ज्वालामुखी शक्तिपीठः ज्वालामुखी, हिमाचल प्रदेश
- उज्जयिनीः उज्जैन, मध्य प्रदेश
- शोणः अमरकण्टक, मध्य प्रदेश
- भैरव पर्वतः उज्जैन, मध्य प्रदेश
- प्रभासः अम्बाजी, गुजरात
- जालन्धर शक्तिपीठः जलंधर, पंजाब
- गण्डकीः मुक्तिनाथ, नेपाल
- गुजयेश्वरी मंदिरः काठमांडू, नेपाल
- मानस शक्तिपीठः तिब्बत
- हिंगुला शक्तिपीठः आशा पुरा, बलूचिस्तान, पाकिस्तान
- इन्द्राक्षीः श्रीलंका
- श्रीपर्वत शक्तिपीठः लद्दाख
- पार्वतीपीठः पहलगाम, जम्मू और कश्मीर
- करवीरः कोल्हापुर, महाराष्ट्र
- जनस्थान/भद्रकालीः नाशिक, महाराष्ट्र
- गोदावरी तट/सर्वशैलः राजमहेंद्री, आन्ध्र प्रदेश
- श्रीशैलमः श्रीशैलम, आंध्र प्रदेश
- शुचिः शुचीन्द्रम, तमिल नाडु
- कन्यकाश्रमः कन्याकुमारी, तमिल नाडु
- काञ्चीः कांचीपुरम, तमिल नाडु

जाग्रत सिद्ध शक्तिपीठ
* कालीपीठः कालीघाट, कोलकाता
- कामगिरिः गुवाहाटी, असम
- छिन्नमस्तिका पीठः रजरप्पा, रामगढ़, झारखंड
- विंध्यवासिनी शक्तिपीठः विंध्याचल, उत्तर प्रदेश
- चामुण्डा देवीः कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
- ज्वालामुखीः कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
- हरसिद्धि माताः उज्जैन, मध्य प्रदेश
- शाकम्भरी देवीः सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
- हिंगलाज भवानीः बलूचिस्तान प्रान्त, पाकिस्तान

माता रोहिणी और देवकी के पूर्व जन्म की कथा

पिंकी कुंडू

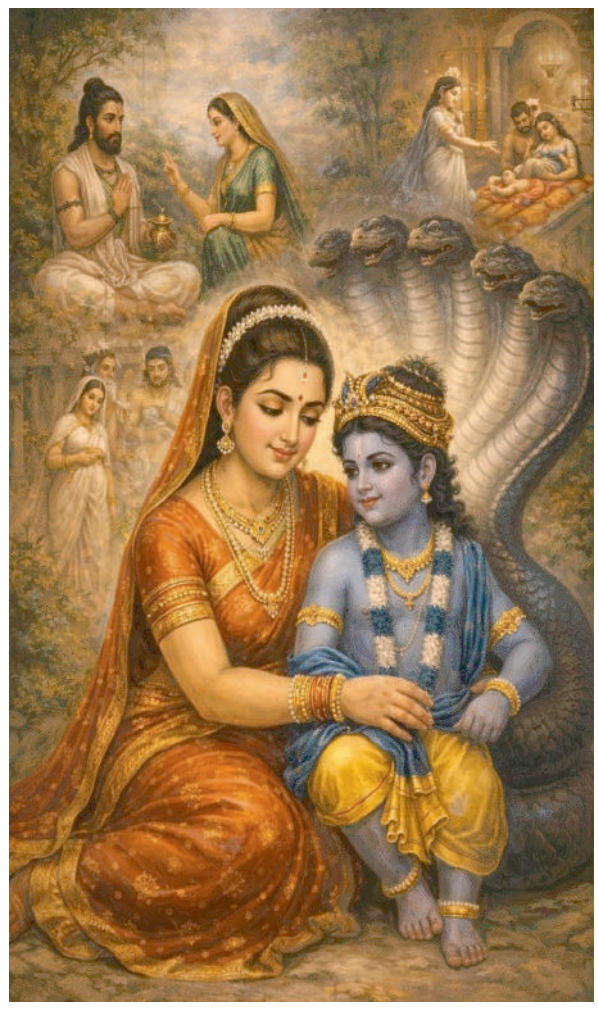

सनातन पौराणिक परंपरा में प्रत्येक महान पात्र का वर्तमान जीवन उसके पूर्व जन्म के कर्म, श्राप और वरदान से जुड़ा होता है। माता रोहिणी और देवकी का जीवन भी इसी दिव्य विधान का परिणाम है।

महर्षि कश्यप और उनकी पत्नियाँ प्राचीन काल में महर्षि कश्यप प्रजापति थे, जिनसे देव, दानव और असुर वंश की उत्पत्ति हुई। उनकी दो प्रमुख पत्नियाँ थीं—

* अदिति — देवताओं की माता
* दिति — दैत्यों की माता

* अदिति से देवताओं का जन्म हुआ, जिनमें इंद्र प्रमुख थे।

* दिति से दैत्य उत्पन्न हुए, जिनमें हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष विशेष प्रसिद्ध हैं।

दिति का शोक और क्रोध एक समय दिति गर्भवती हुईं और उन्होंने संकल्प लिया कि उनका पुत्र इंद्र से भी अधिक शक्तिशाली होगा। किन्तु इंद्र को यह भय हुआ कि दिति का पुत्र उसका राज्य छीन सकता है। इंद्र ने छलपूर्वक दिति के गर्भ में प्रवेश किया और वज्र से गर्भ के टुकड़े - टुकड़े कर दिए। यह गर्भ नष्ट होने की पीड़ा दिति के लिए असहनीय थी।

श्राप का कारण अपने गर्भ के विनाश से व्यथित होकर दिति ने अपनी बहन अदिति को श्राप दिया "जैसे मेरा गर्भ नष्ट हुआ है, वैसे ही द्वापर युग में तुम्हारे गर्भ भी नष्ट होंगे, तुम्हें मातृत्व का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा।" यह श्राप कालांतर में फलित होना ही था।

पुनर्जन्म का रहस्य समय के प्रवाह में—

* महर्षि कश्यप वसुदेव बने
* अदिति देवकी बनीं
* दिति रोहिणी बनीं

यही कारण है कि देवकी और रोहिणी दोनों वसुदेव की पत्नियाँ बनीं।

द्वापर युग में श्राप का फल कंस के कारावास में देवकी के छह गर्भ नष्ट हुए, जो दिति के श्राप का परिणाम थे।

सातवाँ गर्भ — जो भगवान शेषनाग के अवतार बलराम थे — उसे योगमाया ने देवकी के गर्भ से निकालकर रोहिणी के गर्भ में स्थापित कर दिया।

इस कारण — देवकी का सातवाँ गर्भ भी नष्ट माना गया और माता रोहिणी ने भगवान बलराम को जन्म दिया

बलराम और रोहिणी का मातृत्व बलराम जी शेषनाग के अवतार थे — शक्ति, संरक्षण और धर्म के प्रतीक। माता रोहिणी ने उन्हें पालन-पोषण दिया और इस प्रकार अपने पूर्व जन्म के कर्मों से जुड़ी भूमिका को पूर्ण किया।

कथा का सार

* दिति का श्राप देवकी के गर्भों का नाश वही

* दिति रोहिणी बनकर पुनर्जन्म और उसी रोहिणी के गर्भ से बलराम का अवतार

यह दर्शाता है कि ईश्वर की लीला में कोई भी घटना आकस्मिक नहीं होती। हर संबंध पूर्व जन्म के कर्मों से जुड़ा होता है।

पाताल भुवनेश्वर , प्राकृतिक गुफा

पिंकी कुंडू

पाताल भुवनेश्वर चूना पत्थर की एक प्राकृतिक गुफा है, जो उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले में गंगोलीहाट नगर से 14 किमी दूरी पर स्थित है। इस गुफा में धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कई प्राकृतिक कलाकृतियां स्थित हैं।

यह गुफा भूमि से 90 फ़ीट नीचे है, तथा लगभग 160 वर्ग मीटर क्षेत्र में विस्तृत है।

इस गुफा की खोज राजा ऋतुपर्णा ने की थी, जो सूर्य वंश के राजा थे और त्रेता युग में अयोध्या पर शासन करते थे।

स्कंदपुराण में वर्णन है कि स्वयं महादेव शिव पाताल भुवनेश्वर में विराजमान रहते हैं और अन्य देवी देवता उनकी स्तुति करने यहां आते हैं। यह भी वर्णन है कि राजा ऋतुपर्ण जब एक जंगली हिरण का पीछा करते हुए इस गुफा में प्रविष्ट हुए तो उन्होंने इस गुफा के भीतर महादेव शिव सहित 33 कोटि देवताओं के साक्षात दर्शन किये थे।

द्वापर युग में पाण्डवों ने यहां चौपड़ खेला और कलयुग में जगदगुरु आदि शंकराचार्य का 822 ई के आसपास इस गुफा से साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने यहां तांबे का एक शिवलिंग स्थापित किया।

गुफा के अंदर जाने के लिए लोहे की जंजीरों का सहारा लेना पड़ता है यह गुफा पत्थरों से बनी हुई है इसकी दीवारों से पानी रिस्ता रहता है जिसके कारण यहां के जाने का रास्ता बेहद चिकना है।

गुफा में शेष नाग के आकर का पत्थर है उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे उन्होंने पृथ्वी को पकड़ रखा है। इस गुफा की सबसे खास बात तो यह है कि यहां एक शिवलिंग है जो लगातार बढ़ रहा है।

वर्तमान में शिवलिंग की ऊंचाई 1.50 फीट है और शिवलिंग को छूने की लंबाई तीन फीट है यहां शिवलिंग को लेकर यह मान्यता है कि जब यह शिवलिंग गुफा की छत को छू लेगा, तब दुनिया खत्म हो जाएगी।

पाताल भुवनेश्वर .. हर हर महादेव

भारत–पाकिस्तान टकराव की कगार पर: मई 2025 के संघर्ष की पूरी कहानी और इसके भविष्य के प्रभाव

संगिनी घोष

मई 2025 की शुरुआत में भारत और पाकिस्तान एक बड़े सैन्य टकराव की कगार पर पहुँच गए, जब अप्रैल के अंत में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए एक घातक आतंकी हमले के बाद हालात तेजी से बिगड़ गए। इस हमले में कई नागरिकों की जान गई, जिसके लिए भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों को जिम्मेदार ठहराया, जबकि इस्लामाबाद ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया। आतंकवाद को रोकने और सख्त जवाब देने की जरूरत बताते हुए भारत ने नियंत्रण रेखा के पार और पाकिस्तान प्रशासित क्षेत्रों में सटीक मिसाइल और हवाई हमले किए, जिन्हें उसने आतंकी लॉन्च पैड और ढांचे बताया। इसके जवाब में पाकिस्तान ने अपनी सेना को हाई अलर्ट पर रखा और मिसाइल, ड्रोन व तोपखाने से जवाबी कार्रवाई की, जिससे अगले कुछ दिनों तक सीमा पर भारी गोलीबारी और सैन्य गतिविधियां जारी रहीं।

यह संघर्ष दोनों परमाणु संपन्न पड़ोसी देशों के बीच टकराव के स्वरूप में एक बड़ा बदलाव साबित हुआ, क्योंकि इसमें पारंपरिक तोपखाने के साथ-साथ ड्रोन, लंबी दूरी की मिसाइलों और वायु रक्षा प्रणालियों का भी इस्तेमाल किया गया। सैन्य ठिकानों को हुए नुकसान, मिसाइलों को रोकने और नागरिक हताहतों को लेकर दोनों देशों के दावे और प्रतिदावे सामने आए, हालांकि कड़े सुरक्षा इंतजामों और सीमित पहुंच के कारण स्वतंत्र पुष्टि मुश्किल रही। हवाई क्षेत्र बंद होने, नागरिक उड़ानों के निलंबन और व्यापार व संचार में बाधाओं ने क्षेत्रीय अस्थिरता को और बढ़ा दिया, जबकि दुनिया के कई देशों ने हालात के बेकाबू होने के खतरे को देखते हुए संयम बरतने की अपील की।

10 मई को चार दिनों तक चले तीव्र सैन्य टकराव और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद भारत और पाकिस्तान संघर्षविराम पर सहमत हुए, जिससे बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई थम गई। हालांकि भारी गोलीबारी रुक गई, लेकिन तनाव पूरी तरह खत्म नहीं हुआ। इसके बाद से दोनों देशों ने नियंत्रण रेखा पर अपनी सैन्य तैनाती मजबूत की, निगरानी बढ़ाई और एक-दूसरे पर छोटे-मोटे संघर्षविराम उल्लंघनों के आरोप लगाए। कूटनीतिक रिश्ते अब भी तनावपूर्ण बने हुए हैं और संवाद के रास्ते बेहद सीमित हैं।

आगे चलकर मई 2025 के इस टकराव के प्रभाव दोनों देशों के लिए लंबे समय तक महसूस किए जा सकते हैं। रणनीतिक रूप से इस घटना ने यह साफ कर दिया है कि कोई आतंकी हमला या सीमा पर छोटी सी घटना भी कितनी तेजी से बड़े सैन्य संघर्ष में बदल सकती है, जिससे परमाणु हथियारों से लैस देशों के बीच गलत आकलन का खतरा बढ़ जाता है। सैन्य स्तर पर ड्रोन और सटीक हथियारों का बढ़ता इस्तेमाल भविष्य की युद्ध रणनीतियों को प्रभावित करेगा, जिससे संघर्ष और अधिक तेज, जटिल और नियंत्रित करना मुश्किल हो सकता है। राजनीतिक रूप से दोनों देशों में राष्ट्रवादी भावनाएं मजबूत हुई हैं, जिससे समझौते की गुंजाइश कम हुई है और कूटनीतिक प्रयासों को झटका लगा है। आर्थिक और सामाजिक स्तर पर बार-बार के तनाव से क्षेत्रीय स्थिरता, सीमा पार व्यापार और सीमा से सटे इलाकों में रहने वाले नागरिकों का जीवन प्रभावित हो रहा है। यदि ठोस कूटनीतिक पहल और विश्वास बहाली के उपाय नहीं किए गए, तो मई 2025 की घटनाएं भारत-पाकिस्तान के बीच शांति की नाजुक स्थिति की एक कड़ी चेतावनी बनकर रहेंगी, जहां भविष्य का कोई भी टकराव दोनों देशों और पूरे क्षेत्र के लिए और भी गंभीर परिणाम ला सकता है।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 10–18 जनवरी, एंट्री फ्री

सुषमा रानी

नई दिल्ली । दुनिया का सबसे बड़ा B2C पुस्तक मेला, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (NDWBF) 2026*, 10 से 18 जनवरी तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस बार मेले की खास बात यह है कि पहली बार आम जनता के लिए प्रवेश पूरी तरह निःशुल्क रखा गया है। मेले का आयोजन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (NBT), शिक्षा मंत्रालय के तहत कर रहा है, जबकि इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन (ITPO) सह-आयोजक है। मेले का उद्घाटन केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान करेंगे। इस वर्ष मेले की थीम "Indian Military History: Valour and Wisdom @75" रखी गई है, जो भारत की आज़ादी के 75 वर्षों में भारतीय सशस्त्र बलों के योगदान को समर्पित है।

NDWBF 2026 में 35 से अधिक देशों के 1,000 से ज्यादा प्रकाशक, 600 से अधिक कार्यक्रम और 1,000 से ज्यादा वक्ता शामिल होंगे। अनुमान है कि करीब 20 लाख से अधिक पाठक और दर्शक मेले में पहुंचेंगे। थीम पवेलियन में भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना के शौर्य को दर्शाने वाली 360 डिग्री प्रदर्शनी होगी, जिसमें अर्जुन टैंक, INS विक्रांत और तेजस विमान के प्रतिरूप*, परमवीर चक्र विजेताओं को श्रद्धांजलि और प्रमुख सैन्य अभियानों पर सत्र शामिल होंगे। इस बार कतर गेस्ट ऑफ ऑनर कंट्री और स्पेन फोकस कंट्री होगा। फ्रांस, जापान, रूस, ईरान, पोलैंड समेत कई देशों की भागीदारी रहेगी। जापान का 30 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भी मेले में शामिल होगा।

लेखकों और वक्ताओं में पियूष मिश्रा, स्मृति ईरानी, हेमा मालिनी, कैलाश सत्यार्थी, दुर्जय दत्ता, राहुल भट्टाचार्य, रिकी केज सहित कई चर्चित नाम शामिल हैं। सांस्कृतिक संध्याओं में सेना के बैंड, लोक कलाकार और अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुतियां होंगी। बच्चों के लिए किड्ज़ एक्सप्रेस पवेलियन में कहानी, थिएटर, आर्ट वर्कशॉप और गतिविधियां होंगी, जबकि राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय के माध्यम से 6,000 से अधिक मुफ्त ई-बुक्स उपलब्ध कराई जाएंगी। मुफ्त प्रवेश, विशाल अंतरराष्ट्रीय भागीदारी और विविध कार्यक्रमों के साथ NDWBF 2026 को देश के सबसे बड़े सांस्कृतिक आयोजनों में से एक माना जा रहा है।

अलिनागरि कुंज में धूमधाम से चल रहा है रसिक संत बालगोविंद दास महाराज का 20वां निकुंज प्रवेश तिथि समाराधन महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। श्याम वाटिका/शीतल छाया क्षेत्र स्थित अलिनागरि कुंज में ब्रज के प्रख्यात रसिक संत बाल गोविन्द दास महाराज (अलि नागरि) का २० वां 18दिवसीय निकुंज प्रवेश तिथि समाराधन महोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है।जो कि १९ दिसम्बर २०२५ से प्रारंभ होकर 15 जनवरी २०२६ पर्यंत चलेगा। महोत्सव के समन्वयक डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि प्रमुख धर्माचार्य पण्डित रामनिवास शुक्ला के पावन सानिध्य में आयोजित इस महोत्सव में वेदज्ञ ब्राह्मणों के द्वारा नित्य श्रीमद्भागवत मूलपाठ किया जा रहा है।साथ ही सायं 6 से 7 बजे तक प्रख्यात शास्त्रीय गायकों द्वारा भजन व संकीर्तन आदि कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत 12 से 13 जनवरी प्रातः 10 से 12 बजे तक एवं 14 जनवरी को अपराह्न 3 बजे से हरि इच्छा तक शरणागति आश्रम,वृन्दावन के सन्त बिहारीदास भक्तमाली महाराज अपने श्रीमुख से सभी भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भक्तमाल की कथा श्रवण कराएंगे।14 जनवरी को प्रातः 9 बजे पूज्य महाराजश्री की प्रतिमा का पञ्चामृत से अभिषेक कर वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन होगा।तदोपरांत उनके द्वारा रचित पदों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया जाएगा।

इसके अलावा रात्रि 10 बजे से 15 जनवरी प्रातः 4 बजे तक अखंड श्रीहरिनाम (महामंत्र) संकीर्तन आदि के कार्यक्रम होंगे।तत्पश्चात सन्त-विद्वत सम्मेलन आयोजित होगा।महोत्सव का समापन मध्याह्न 12 बजे संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ होगा।

उमेश केसरी के निधन पर शोक संवेदना

देवघर। स्थानीय जलसार रोड स्थित झारखण्ड प्रदेश केसरवानी महिला समिति की प्रान्तीय अध्यक्ष रूपा केसरी के पति उमेश केसरी के असामयिक निधन पर भारतीय वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष श्री प्रभाष गुप्ता ने गहरा दुःख व्यक्त करते हुए इस हृदयविदारक क्षण मे शोकाकुल परिवार के प्रति इस असहनीय व अदम्य दुःख व शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। ज्ञात हो कि बीतें रात ईलाज के क्रम में उनका दुःखद निधन हो गया। उनके निधन से समाज मे शोक की लहर है। लोग स्तब्ध है। आस-पास शोक की खबर से माहौल गमगीन सा हो गया है। वो अपने पीछे भरा-पूरा परिवार व दो पूत्र व पत्नी छोड़ गए। पूरा परिवार, सगे-सम्बन्धी व मित्रगण विलाप कर रहे है। लोगो को इस हृदयविदारक घटना का यकीन नही हो रहा है। मुखाग्नि उनके पुत्र ने दी।

बिसौली में धर्मांतरण को लेकर विश्व हिन्दू महासंघ ने जताया आक्रोश, कोतवाली में हुआ प्रदर्शन

बिसौली (जनसंपर्क संवाददाता)।

दिनांक 8 जनवरी 2026, गुरुवार को बिसौली क्षेत्र में एक कथित धर्मांतरण का मामला सामने आने से स्थानीय स्तर पर रोष फैल गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, एक हिन्दू परिवार की महिला को एक ईसाई धर्म के पादरी द्वारा बहलाने-फुसलाने और धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का आरोप लगाया गया।घटना की सूचना मिलते ही विश्व हिन्दू महासंघ के जिला अध्यक्ष प्रिन्स देव शर्मा अपनी पूरी कार्यकारिणी के साथ कोतवाली बिसौली पहुंचे और विरोध प्रदर्शन किया। संगठन के कार्यकर्ताओं ने पादरी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करते हुए थाना परिसर में धरना दिया।संगठन के बढ़ते रोष को देखते हुए थानाध्यक्ष बिसौली ने तत्काल मामले में तफ्तीश शुरू कर दी और संबंधित पादरी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किए जाने एवं उसे जेल भेजने का आश्वासन दिया। इसके बाद संगठन के पदाधिकारी और पीड़ित परिवार संतुष्ट हुए।इस दौरान उपस्थित प्रमुख पदाधिकारियों में विनोद भारद्वाज (जिला प्रभारी), शिवम्-वार्ष्णेय (जिला महामंत्री), अनुज मिश्रा (जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष), महेश प्रधान (जिला उपाध्यक्ष), दुर्विजय सिंह शाक्य (जिला उपाध्यक्ष), प्रमोद मिश्रा (जिला उपाध्यक्ष), शिवकुमार शर्मा (जिला अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ), रितिक देव शर्मा (जिला प्रभारी आईटी सेल) और रजत ठाकुर (महानगर अध्यक्ष) सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नीरज श्रीवास्तव ने संभाला सहायक उप-नियंत्रक सिविल डिफेंस का कार्य भार

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद से स्थानांतरित होकर आए नीरज श्रीवास्तव ने मथुरा में सहायक उप-नियंत्रक का पदभार ग्रहण कर लिया है। पुलिस महानिदेशक एवं राष्ट्रपति के पदक से सम्मानित नीरज श्रीवास्तव नागरिक सुरक्षा जनपद गाजियाबाद मेरठ में भी कार्य कर चुके हैं। श्रीवास्तव ने बताया है कि वह नागरिक सुरक्षा संगठन को पहले से और अधिक मजबूत करेंगे तथा नागरिक सुरक्षा में रिक्त स्थानों की जल्दी पूर्ति करके बड़े पैमाने पर स्कूल कॉलेज एवं औद्योगिक इकाइयों में नागरिक सुरक्षा का प्रशिक्षण देंगे।उल्लेखनीय है कि मथुरा में उप-नियंत्रक एवं सहायक उप-नियंत्रक के महत्वपूर्ण पद रिक्त चल रहे थे। यह जानकारी नागरिक सुरक्षा संगठन के सीनियर स्टाफ ऑफिसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर ने दी है।

हिंदी:भारत की आत्मा से विश्व मंच तक- भाषा, संस्कृति,पहचान और वैचारिक स्वतंत्रता का वैश्विक विमर्श

आज अनेक माता-पिता गर्व से दिखाना चाहते हैं कि उनका बच्चा कितनी धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलता है, छोटी उम्र से अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ाना और हिंदी से दूरी बनाना कहीं न कहीं मानसिक उपनिवेशवाद का प्रतीक

आज क़े डिजिटल क्रांति,कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और वैश्विक संचार युग में तकनीक केवल अंग्रेजी या कुछ चुनिंदा भाषाओं तक सीमित रहेगी,हिंदी ने इस धारणा को तोड़ दिया है- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत की सबसे बड़ी पहचान उसकी भाषाई,सांस्कृतिक और वैचारिक विविधता में निहित है।विश्व के किसी भी देश में इतनी भाषाएँ, बोलियाँ परंपराएँ व सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ एक साथ सह- अस्तित्व में नहीं पाई जातीं। इस विविधता के महासागर में यदि कोई एक सूत्र है,जो भारत को भावनात्मक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तरपर जोड़ता है, तो वह है हिंदी भाषा। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं,बल्कि भारत की सामूहिक चेतना,स्मृति और संस्कृति की संवाहक है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि हिंदीः केवल भाषा नहीं, भावनात्मक सेतु हैं,हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है परंतु इसकी शक्ति केवल संख्या में नहीं,बल्कि संवेदना,आत्मीयता और भावाभिव्यक्ति में निहित है। हिंदी वह भाषा है, जिसमें प्रेम भी सरल है, पीड़ा भी सहज है और प्रतिरोध भी स्वाभाविक।जहाँ कई भाषाएँ औपचारिक संवाद तक सीमित रहती हैं,वहीं हिंदी व्यक्ति के हृदय से सीधे संवाद करती है। यही कारण है कि ग्रामीण भारत से लेकर शहरी महानगरों तक, साहित्य से लेकर सिनेमा तक और राजनीति से लेकर जनआंदोलनों तक हिंदी की भूमिका केंद्रीय बनी हुई है।इसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक और वैश्विक महत्व के कारण हिंदी के सम्मान और प्रचार- प्रसार हेतु विशेष दिवस समर्पित किए गए हैं, 14 सितंबर (राष्ट्रीय हिंदी दिवस)और 10 जनवरी (विश्व हिंदी दिवस)।भारत में 14 सितंबर को हिंदी दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया था।यह निर्णय केवल प्रशासनिक नहीं था,बल्कि यह उस ऐतिहासिक संघर्ष और सांस्कृतिक चेतना का परिणाम था, जिसने औपनिवेशिक शासन की भाषाई विरासत से बाहर निकलकर भारतीय भाषाओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया।वहीं 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है,जिसका उद्देश्य हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठा दिलाना, वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में स्थापित करना और यह दर्शाना है कि हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं,बल्कि एक वैश्विक भाषा बन चुकी है। यह दिवस भारत की सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है।

साथियों बात अगर हम डिजिटल युग में हिंदीः विरासत से भविष्य की तकनीक तक इसको समझने की करें तोआज का युग डिजिटल क्रांति,कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग और वैश्विक संचार का युग है। लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि तकनीक केवल अंग्रेजी या कुछ चुनिंदा भाषाओं तक सीमित रहेगी, लेकिन हिंदी ने इस धारणा को तोड़ दिया है।आज हिंदीःसोशल मीडिया की सबसे सक्रिय भाषाओं में से एक है,डिजिटल समाचार, ब्लॉग, पॉडकास्ट और यूट्यूब कंटेंट की प्रमुख भाषा बन चुकी है।एआई आधारित अनुवाद वॉइस असिस्टेंट और चैटबॉट में तेजी से अपनाई जा रही है।हिंदी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह पारंपरिक ज्ञान से लेकर अत्याधुनिक तकनीक तक समान रूप से सक्षम है। यही कारण है कि विश्व हिंदी दिवस का एक प्रमुख उद्देश्य डिजिटल युग में हिंदी की प्रासंगिकता और क्षमता को रेखांकित करना है।

साथियों बात अगर हम अंग्रेजी बनाम हिंदी : आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी वैचारिक गुलामी ?इसको समझने की करें तो 1947 में भारत ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन आज भी एक गंभीर प्रश्न हमारे सामने खड़ाहै, क्या हम वैचारिक रूप से स्वतंत्र हो पाए हैं ?विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो जाता है कि क्या आज भी अंग्रेजी बोलना सामाजिक प्रतिष्ठा और आधुनिकता का प्रतीक बना हुआ है? आज अनेक माता- पिता गर्व से यह दिखाना चाहते हैं कि उनका बच्चा कितनी धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलता है। छोटी उम्र से अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ाना और हिंदी से दूरी बनाना कहीं न कहीं मानसिक उपनिवेशवाद का प्रतीक है। हमें अन्य भाषाओं से प्रतिस्पर्धा नहीं,संतुलन की आवश्यकता हैं। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह विमर्श अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा के विरोध का नहीं, बल्कि हिंदी के आत्मसम्मान का है। अंग्रेजी वैश्विक संपर्क की भाषा है, परंतु हिंदी हमारी पहचान की भाषा है।यदि हम बच्चों को केवल अंग्रेजी में सोचने और सपने देखने के लिए प्रशिक्षित करेंगे, तो वे अपनी जड़ों से कटते चले जाएंगे। समय आ गया है किः हिंदी को शिक्षा, तकनीक और प्रशासन में समान महत्व दिया जाए,बच्चों को हिंदी बोलने, लिखने और सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाए हिंदी को कमतर समझने की मानसिकता को समाप्त किया जाए।भारत में लगभग 1500 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ हैं, जिनमें से अनेक विलुप्ति के कगार पर हैं। यह संकट केवल भाषाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भी है।हिंदी का सशक्तिकरण तभी सार्थक होगा, जब वह अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सह- अस्तित्व और सम्मान के सिद्धांत पर आगे बढ़े।हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में सशक्त बनाते हुए, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत की भाषाई विविधता सुरक्षित रहे।

साथियों बात अगर हम हिंदी और वैश्विक पहचानः संयुक्त राष्ट्र की सातवीं भाषा की ओर इसको समझने की करें तो, भारत सरकार लंबे समय से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की सातवीं आधिकारिक भाषा बनाने के लिए प्रयासरत है।वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाएँ हैं -अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, अरबी और रूसी।हिंदी के पक्ष में तर्क अत्यंत मजबूत हैं:यह विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल है।भारत वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और शांति मिशनों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।हिंदी अनेक देशों में पढ़ाई और शोध की भाषा बन चुकी है।यदि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलता है, तो यह केवल भाषा की जीत नहीं, बल्कि वैश्विक बहुभाषिक लोकतंत्र की जीत होगी।

साथियों बात अगर हम वर्ष में दो बार हिंदी दिवस मनाने के इतिहास को समझनें की करें तो, हिंदी के वैश्विक विस्तार की नींव 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में पड़ी। इस ऐतिहासिक सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। इसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि हिंदी भारत की सीमाओं से बाहर भी जीवंत, प्रासंगिक और प्रभावशाली भाषा है।इसके बाद हिंदी का वैश्विक आंदोलन और तेज हुआ। वर्ष 2006 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी को औपचारिक रूप से विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। तब से लेकर आज तक भारत के सभी दूतावासों, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों विश्वविद्यालयों और प्रवासी भारतीय समुदायों में यह दिवस पूरे सम्मान के साथ मनाया जाता है।

साथियों बात अगर हम संवैधानिक वैचारिक डिजिटल और तकनीकी दृष्टिकोण से हिंदी भाषा की स्थिति को समझने की करें तो,संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना केवल एक प्रशासनिक निर्णयनहीं था बल्कि यह औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति और राष्ट्रीय अस्मिता की पुनर्स्थापना का प्रतीक था। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को संरक्षण और संवर्धन का दायित्व सौंपा गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि लोकतंत्र, समानता और जनभागीदारी की रीढ़ है। स्वतंत्रता के 75 वर्षों बाद भी यदि हिंदी को बोलना या अपनाना हीनता से जोड़ा जाए, तो यह वैचारिक गुलामी का संकेत है। सच्ची स्वतंत्रता तभी पूर्ण होगी जब शासन, शिक्षा और समाज में हिंदी को सम्मान, अवसर और आत्मविश्वास के साथ स्वीकार किया जाए।डिजिटल युग में हिंदी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह केवल साहित्य या परंपरा की भाषा नहीं, बल्कि भविष्य की तकनीक की भी सक्षम भाषा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता,मशीन लर्निंग,वॉइस असिस्टेंट,ऑटो-ट्रांसलेशन सोशल मीडिया और डिजिटल पत्रकारिता में हिंदी की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। आज करोड़ों लोग इंटरनेट पर हिंदी में खोज करते हैं, कंटेंट बनाते हैं और संवाद स्थापित करते हैं, जिससे डिजिटल समावेशन संभव हो रहा है। विश्व हिंदी दिवस का मूल उद्देश्य यही है कि हिंदी को तकनीक-विरोधी नहीं, बल्कि तकनीक-सहयोगी भाषा के रूप में स्थापित किया जाए, जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच एक सशक्त सेतु बन सके।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि हिंदी का भविष्य हमारी जिम्मेदारी हैं हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस केवल औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि आत्ममंथन और संकल्प के अवसर हैं। हिंदी का भविष्य किसी सरकारी आदेश से नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना और व्यवहार से तय होगा।यदि हमः हिंदी में सोचें,हिंदी में गर्व महसूस करें हिंदी को आधुनिक,तकनीकी और वैश्विक बनाएं तो हिंदी न केवल भारत की आत्मा बनी रहेगी, बल्कि विश्व संवाद की सशक्त भाषा के रूप में भी स्थापित होगी।हिंदी केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य की संभावना है।आइए,हिंदी को सम्मान नहीं,अधिकार दें।

जिले के मुरौल प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार का "विद्यालयों में सुशासन का नेतृत्व" विषय से संबधित "केस स्टडी" हुआ राष्ट्रीय स्तर पर चयनित

केशव कुमार, प्रधान शिक्षकप्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दूप्रखण्ड- मुरौल, जिला- मुजफ्फरपुर

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली के अंतर्गत कार्यरत राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र के द्वारा 17 से 19 जनवरी तक नई दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधान शिक्षक केशव कुमार करेंगे बिहार का प्रतिनिधित्व।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (NIEPA), नई दिल्ली के अंतर्गत कार्यरत राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र (NCSL) द्वारा "सफल विद्यालय नेतृत्वः विकसित भारत @2047 के लिए नवाचारी मार्ग" विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 17 से 19 जनवरी 2026 तक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में किया जा रहा है।

यह सम्मेलन सफल ₹विद्यालय नेतृत्व का उत्सव₹ श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है, जिसमें देशभर के सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के प्रधानों द्वारा प्रस्तुत की गई लगभग 300 श्रेष्ठ प्रथाओं में से 55 उत्कृष्ट उदाहरणों का चयन किया गया है। इन चयनित विद्यालय प्रधानों को राष्ट्रीय स्तर पर अपने नवाचार एवं नेतृत्व क्षमता साझा करने का अवसर मिलेगा।

इस क्रम में बिहार राज्य से दो विद्यालय प्रधानों का चयन किया गया है। चयनित प्रतिभागियों में

मधु प्रिया, प्रधान शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया ब्रह्मज्ञानि, जिला पूर्णिया तथा केशव कुमार, प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू, प्रखंड मुरौल, जिला मुजफ्फरपुर शामिल हैं।

राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र नई दिल्ली की कुलपति डॉ. शशिकला वांजारी द्वारा जारी पत्र के अनुसार, चयनित प्रतिभागियों के यात्रा, ठहराव एवं आवास का संपूर्ण व्यय राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान नई दिल्ली द्वारा वहन किया जाएगा। प्रतिभागियों को सम्मेलन प्रारंभ होने से एक दिन पूर्व, अर्थात 16 जनवरी 2026 तक नई दिल्ली पहुँचने तथा 19 जनवरी 2026 को शाम 7 बजे तक वापसी करने का परामर्श दिया गया है।

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान, बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर सुजीत कुमार दास ने बधाई देते हुए कहा कि प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार की यह उपलब्धि न केवल संबंधित विद्यालय बल्कि जिला सहित पूरे राज्य के लिए गर्व का विषय है। इस सम्मेलन के माध्यम से विद्यालय नेतृत्व को सशक्त बनाने तथा विकसित भारत @2047 के लक्ष्य की दिशा में शिक्षा क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार की उपलब्धि पर बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ़ बिहार के फाउंडर शिव कुमार, टेक्निकल टीम लीडर शिवेंद्र प्रकाश सुमन, प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय ठाकुर, जिला शिक्षा समन्वयक बिहार शिक्षा परियोजना मुजफ्फरपुर मनोज कुमार, जिला तकनीकी दल के सदस्य अभिषेक कुमार, पप्पू कुमार पंकज, इम्तियाज अहमद, मो. शोएब, अमितेश कुमार, विद्यालय परिवार के सदस्य शिक्षक अब्दुल गफ्फार अंसारी, शोएब अहमद, शिक्षिका पूनम कुमारी, सहानी खातून, ममता, स्मिता ने बधाई दी।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली के अंतर्गत कार्यरत राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र के द्वारा 17 से 19 जनवरी तक नई दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन में मुजफ्फरपुर के प्रधान शिक्षक केशव कुमार एवं पूर्णिया की प्रधान शिक्षिका मधु प्रिया करेंगी बिहार का प्रतिनिधित्व

परिवहन विशेष न्यूज

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (NIEPA), नई दिल्ली के अंतर्गत कार्यरत राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र (NCSL) द्वारा "सफल विद्यालय नेतृत्वः विकसित भारत @2047 के लिए नवाचारी मार्ग" विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 17 से 19 जनवरी 2026 तक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में किया जा रहा है।

यह सम्मेलन सफल ₹विद्यालय नेतृत्व का उत्सव₹ श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है, जिसमें देशभर के सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के प्रधानों द्वारा प्रस्तुत की गई लगभग 300 श्रेष्ठ प्रथाओं में से 55 उत्कृष्ट उदाहरणों का चयन किया गया है। इन चयनित विद्यालय प्रधानों को राष्ट्रीय स्तर पर अपने नवाचार एवं नेतृत्व क्षमता साझा करने का अवसर मिलेगा।

इस क्रम में बिहार राज्य से दो विद्यालय प्रधानों का चयन किया गया है। चयनित प्रतिभागियों में केशव कुमार, प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू, प्रखंड मुरौल, जिला मुजफ्फरपुर एवं मधु प्रिया, प्रधान शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया ब्रह्मज्ञानि, जिला पूर्णिया का नाम शामिल हैं।

राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र नई दिल्ली की कुलपति डॉ. शशिकला वांजारी द्वारा जारी पत्र के अनुसार, चयनित प्रतिभागियों के यात्रा, ठहराव एवं आवास का संपूर्ण व्यय राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान नई दिल्ली द्वारा वहन किया जाएगा। प्रतिभागियों को सम्मेलन प्रारंभ होने से एक दिन पूर्व, अर्थात 16 जनवरी 2026 तक नई दिल्ली पहुँचने तथा 19 जनवरी 2026 को शाम 7 बजे तक वापसी करने का परामर्श दिया गया है।

बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ़ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने बधाई देते हुए कहा कि मुजफ्फरपुर जिले मुरौल प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार एवं पूर्णिया जिले के भवानीपुर प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया ब्रह्मज्ञानी की प्रधान शिक्षिका मधु प्रिया की यह उपलब्धि न केवल संबंधित विद्यालय बल्कि जिला सहित पूरे राज्य के लिए गर्व का विषय है।

टीचर्स ऑफ़ बिहार के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने बधाई देते हुए कहा कि इस सम्मेलन के माध्यम से विद्यालय नेतृत्व को सशक्त बनाने तथा विकसित भारत @2047 के लक्ष्य की दिशा में शिक्षा क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

वेनेजुएला : सत्ता में सरकार और दृढ़-प्रतिज्ञ लोग

(आलेख : विजय प्रसाद और कार्लोस रॉन, अनुवाद : संजय पराते)

3 जनवरी की सुबह, अमेरिका की सरकार ने काराकास, वेनेज़ुएला और इस देश के तीन राज्यों पर बड़ा हमला किया। लगभग 150 विमान आसमान में उड़ रहे थे और बहुत तेज़ी से बमबारी कर रहे थे। इन विमानों में ईए-18 ग्रोलर्स थे, जो अगली पीढ़ी के जैमर्स जैसे सबसे उन्नत इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों से लैस थे, साथ ही एएच-64 अपाचे और सीएच-47 चिनूक हेलीकॉप्टर भी थे। शहर के लोगों ने इतनी अंधाधुंध हिंसा कभी नहीं देखी थी : ज़ोरदार धमाके, धुएं का बड़ा गुबार, और विमान – जो प्रति-हमले से बेपरवाह लग रहे थे – ने शहर को अंधेरे में डुबो दिया। बाद में, एक पत्रकार वार्ता में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'हमारे पास जो खास विशेषज्ञता हैं, उसकी वजह से काराकास की लाइटें काफी हद तक बंद थीं। वहां अंधेरा था और यह जानलेवा था'। अमेरिका अपनी सेना पर हर साल 1 ट्रिलियन डॉलर से ज़्यादा खर्च नहीं करता, जबकि उसने दुनिया का सबसे खतरनाक हथियार बनाया है। यह हाइपर-इंपीरियलिज़्म (हमलावर-साम्राज्यवाद) का हाइपर-ड्राइव (घातक-अभियान) था।

एलीट डेल्टा फ़ोर्स के सैनिक हेलीकॉप्टर से उस जगह पर उतरे, जहाँ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो रात बिता रहे थे। उन्हें ज़मीन पर सैनिकों के विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन ज़बरदस्त हवाई गोलाबारी में वेनेज़ुएला और क्यूबा के कई सैनिक मारे गए (वेनेज़ुएला की सेना के अनुसार वेनेज़ुएला के 24 सैनिक, और हवाना के अनुसार, क्यूबा के 32 सैनिक)। ज़मीनी विरोध खत्म होने के बाद, डेल्टा फ़ोर्स ने राष्ट्रपति मादुरो और वेनेज़ुएला की राष्ट्रीय संसद की सदस्य सिलिया फ्लोरेस, जो मादुरो की पत्नी भी हैं, को पकड़ लिया। उन्हें यूएसएस इवो जीमा में ले जाया गया और फिर न्यूयॉर्क के सदर्न डिस्ट्रिक्ट में मुकदमे के लिए अमेरिका ले जाया गया। यह आरोप पत्र एक ऐसे आरोप पर आधारित था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि उन्होंने अमेरिका में कोकीन आयात करने के लिए कभी सही माने जाने वाले संस्थान को भ्रष्ट किया था।' आरोप पत्र में मादुरो और फ्लोरेस समेत छह लोगों पर आरोप हैं।

इस बीच, वेनेज़ुएला में, मादुरो की गैर-मौजूदगी में उप राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिकेज़ ने नेतृत्व संभाल लिया है। उन्होंने सभी मुख्य राजनैतिक नेताओं के साथ एक बहुचर्चित बैठक की है, जिसमें गृह मंत्री डियोसडाडो कैबेलो भी शामिल थे, जिनका नाम भी आरोप पत्र में था। इस शुरुआती बैठक में, रोड्रिकेज़ ने मादुरो और फ्लोरेस की रिहाई की मांग की है, इस बात पर ज़ोर दिया है कि मादुरो अभी भी वैधानिक राष्ट्रपति हैं, और पुष्टि की कि सरकार एकजुट है और हालात का जायज़ा लेने के लिए काम कर रही है। एक दिन के अंदर, रोड्रिकेज़ – जिन्होंने अब मादुरो की गैर-मौजूदगी में कार्यवाहक राष्ट्रपति के तौर पर शपथ ली है – ने कहा है कि वह एक और हमले को रोकने के लिए अमेरिका के साथ बातचीत के लिए तैयार हैं, हालांकि वह मादुरो और फ्लोरेस की रिहाई और वापसी पर ज़ोर देती रहीं। निश्चित रूप से, अमेरिका ने जिस स्तर का तीखा हमला किया है, उसने यह साफ़ कर दिया है कि वेनेज़ुएला इस समय अमेरिकी हमले की मार को नहीं झेल सकता, इसलिए बातचीत को फिर से शुरू करना ज़रूरी होगा -- खासकर तेल उद्योग के मामले में, जिसमें ट्रंप का मुख्य हित निहित है। रॉड्रिकेज़ एक क्रांतिकारी परिवार से हैं, उनके पिता जॉर्ज एंटोनियो रॉड्रिकेज़ सोशलिस्ट लीग के संस्थापक थे, जिसमें डेल्सी रॉड्रिकेज़ और मादुरो कभी कार्यकर्ता के तौर पर काम करते थे। बोलिवेरियन प्रक्रिया के समर्पण का तो कोई सवाल ही नहीं है, जो वेनेज़ुएला की सरकार का नेतृत्व कर रही रॉड्रिकेज़ और उनकी टीम के लिए एक बुनियादी राजनैतिक लाइन है।

3 जनवरी को जैसे ही सुबह हुई और हवा में बमों की बदबू फैली, लोग घबरा गए और हैरान रह गए। इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि इराक में 2003 का ऑपरेशन शॉक एंड ऑ बमबारी अभियान, वेनेज़ुएला के खिलाफ ऑपरेशन एब्सोल्यूट रिज़ॉल्व (2026) की बमबारी के सामने छोटा पड़ गया। ये बम कहीं ज़्यादा ताकतवर थे, और हथियार प्रणाली कहीं ज़्यादा परिष्कृत और ज़बरदस्त थी। फिर भी लोगों को सड़कों पर उतरने में ज़्यादा समय नहीं लगा। मिराफ्लोरेस के राष्ट्रपति भवन के बाहर अचानक हुए एक ओपन-माइक ने भीड़ को अपने देश पर हुए हमले के खिलाफ बोलने के लिए इकट्ठा किया।

ज़्यादातर बोलने वालों ने बोलिवेरियन प्रक्रिया के बारे में बहुत जोश से और भावनाओं के साथ बात की। वे समझते थे कि यह हमला उनकी संप्रभुता के खिलाफ था, और – इससे भी ज़रूरी बात – कि यह वेनेज़ुएला के पुराने कुलीन तंत्र और अमेरिकी तेल समूहों की तरफ से किया गया हमला था। उनकी साफ़गोई हैरान करने वाली थी, फिर भी कॉर्पोरेट मीडिया ने इस कवरेज को नज़रअंदाज़ कर दिया।

वैश्विक दक्षिण में नई मनःस्थिति की कमज़ोरी

वेनेज़ुएला पर हमले से कुछ घंटे पहले, राष्ट्रपति मादुरो, राष्ट्रपति शी जिनपिंग के उच्च दूत किउ शियाओकी से मिले थे। उन्होंने लैटिन अमेरिका पर चीन के तीसरे नीतिगत पर्चे (10 दिसंबर को जारी) पर चर्चा की, जिसमें चीनी सरकार ने पुष्टि की, 'एक विकासशील देश और वैश्विक दक्षिण का सदस्य होने के नाते, चीन हमेशा लैटिन अमेरिका और कैरिबियन सहित वैश्विक दक्षिण के साथ हर अच्छे-बुरे समय में एकजुटता से खड़ा रहा है'। उन्होंने चीन और वेनेज़ुएला के बीच मिलकर चलाई जा रही 600 परियोजनाओं और वेनेज़ुएला में 70 अरब डॉलर के चीनी निवेश की समीक्षा की। मादुरो और किउ ने बातचीत की, और फिर उन्होंने तस्वीरें लीं, जिन्हें सोशल मीडिया पर बड़े पैमाने पर पोस्ट किया गया और वेनेज़ुएला के टेलीविज़न पर दिखाया गया। फिर किउ वेनेज़ुएला में चीनी राजदूत लैन हू और विदेश मंत्रालय के लैटिन अमेरिका और कैरिबियन विभाग के निदेशक, लियू बो और वांग हाओ के साथ चले गए। कुछ ही घंटों में, शहर पर बमबारी हो रही थी। उसी दिन, चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, 'अमेरिका के ऐसे दबंगई वाले काम अंतर्राष्ट्रीय कानून और वेनेज़ुएला की संप्रभुता का गंभीर उल्लंघन करते हैं, और लैटिन अमेरिका और कैरिबियन इलाके में शांति और सुरक्षा के लिए खतरा हैं। चीन इसका दृढ़तापूर्वक विरोध करता है।' इसके अलावा, कुछ खास नहीं किया जा सकता था। चीन में सैन्य ताकत के ज़रिए अमेरिका के हाइपर-इंपीरियलिज़्म को रोकने की क्षमता नहीं है।

लैटिन अमेरिका में, अर्जेंटीना के जेवियर माइली के नेतृत्व में उभरती एंग्री टाइड ने मादुरो के पकड़े जाने का जश्न मनाया है, जबकि इक्वाडोर के दक्षिणपंथी राष्ट्रपति डेनियल नोबोआ ने न सिर्फ़ वेनेज़ुएला के बारे में, बल्कि ह्यूगो शावेज़ के बोलिवेरियनवाद से प्रेरित पिंक टाइड को हराने की ज़रूरत के बारे में भी बात की : 'सभी अपराधी नार्को-शाविस्टाओं की अपने समय पर यही दुर्दशा होगी। उनका ढांचा आखिरकार पूरे महाद्वीप में ढह जाएगा'। अर्जेंटीना ने दस देशों के एक ग्रुप का नेतृत्व किया, जिसने 33 सदस्यों वाली कम्युनिटी ऑफ़ लैटिन अमेरिकन एंड कैरिबियन स्टेट्स (सीईएलएसी) की बैठक में संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर की अमेरिका द्वारा उल्लंघन की निंदा करने को बाधित किया। ये देश थे अर्जेंटीना, बोलीविया, कोस्टा रिका, डोमिनिकन रिपब्लिक, इक्वाडोर, अल सल्वाडोर, पनामा, पैराग्वे, पेरू और त्रिनिदाद एंड टोबैगो। यह एंग्री टाइड के बढ़ते असर का संकेत है कि सीईएलएसी, जो कभी संप्रभुता के पक्ष में खड़ा था, अब लैटिन अमेरिका में अमेरिका के दुस्साहस और 1823 के मोनरो सिद्धांत को पुनर्जीवित करने के लिए ट्रंप के झुकाव के समर्थन में आ गया है।

सीईएलएसी को 2010 में रियो ग्रुप (1986) से अलग करके बनाया गया था। इसका मकसद यूनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) को छोड़कर एक क्षेत्रीय संगठन बनाना था (जैसा कि ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ अमेरिकन स्टेट्स करता है)। इसीलिए इसे बनाने में पिंक टाइड ने मदद की थी। इसके पहले सह-अध्यक्ष चिली के दक्षिणपंथी राष्ट्रपति सेबेस्टियन पिनेरा और वेनेज़ुएला के ह्यूगो शावेज़ थे। संप्रभुता के विचार पर दक्षिण और वाम की इस तरह की एकता अब इतनी कमज़ोर हो गई है कि उसे पहचाना नहीं जा सकता। सीईएलएसी के कार्यवाही न करने का मतलब है कि न सिर्फ़ इसके आधार (जिसमें 2014 के हवाना सम्मेलन में यह विचार पारित करना भी शामिल है कि लैटिन अमेरिका एक शांति-क्षेत्र है) को खारिज कर दिया गया है, बल्कि ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ अमेरिकन स्टेट्स के चार्टर को भी खारिज कर दिया गया है।

ट्रंप ने खुले तौर पर 1823 के मोनरो सिद्धांत को पुनर्जीवित करने का वादा किया है, जिसे सबसे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जेम्स मोनरो ने न सिर्फ पश्चिमी गोलार्द्ध में यूरोपियन दखल का मुकाबला करने के लिए कहा था, बल्कि लैटिन अमेरिका के सबसे बड़े हीरो में से एक साइमन बोलिवर जैसे लोगों के नेतृत्व में आज़ादी की बढ़ोतरी का भी मुकाबला करने के लिए कहा था। पिंक टाइड के मुख्य वैचारिक ढांचे में से एक के तौर पर शावेज़ ने बोलिवेरियनवाद को फिर से शुरू किया था। ट्रंप द्वारा मोनरो सिद्धांत को खुले तौर पर अपनाना और "ट्रंप कोरोलरी" (इस सिद्धांत को लागू करने के लिए जो भी करना पड़े, करो) की उनकी मांग इस बात का इशारा है कि अमेरिका का मकसद पूरे गोलार्द्ध में पुराने कुलीन तंत्र को फिर से बहाल करना और अमेरिकी समूहों को खुली छूट देना है (शायद अमेरिका के मुक्त व्यापार क्षेत्र को भी फिर से शुरू करना, एक ऐसी व्यापारिक पहलकदमी, जिसे 2005 में शावेज़ और दूसरों ने हरा दिया था)। यह महाद्वीप के स्तर पर वर्ग संघर्ष है।

(विजय प्रसाद भारतीय मूल के एक अमेरिकी लेखक, इतिहासकार, पत्रकार और टिप्पणीकार हैं। वे ट्राइकॉन्टिनेंटल : इंस्टीट्यूट फॉर सोशल रिसर्च के कार्यकारी निदेशक और लेफ्टवर्ड बुक्स के मुख्य संपादक हैं। कार्लोस रॉन उनके सहयोगी हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

मंडल रोजगार कार्यालय हिसार का कमाल बिना डिग्री के ही कर दिया था एम.बी.ए. पर नाम दर्ज

Employment Department
Government of Haryana
Employment Exchange Hissar

Identity Card

1	Applicant Name	:	Naresh Kumar	
2	Date Of Birth	:	Apr 15, 1983	
3	Date of Registr...	:	May 8, 2017	
4	Registration No	:	1494245500	
5	Qualifications	:		

Sr.	Level	Course	Specialization
1	10th	SSC (10th Class)	Not Applicable
2	Graduate	B.A. (Bachelor of Arts)	Arts & Humanities
3	Post Gr...	MBA (Master of Business A...	Hr/Industrial Relations
4	I.T.I.	ITI	Stenography

6	NCO 1	:	X001.95 Post Graduates, Other May 8, 2017
7	NCO 2	:	
8	NCO 3	:	
9	Category	:	SC
10	Next Re...	:	May 8, 2023

Back

Attested
Divisional Employment Officer
Mini Sectt., HISAR

हिसार, 8 अप्रैल

मंडल रोजगार कार्यालय हिसार में एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है जिसमें एक युवक नरेश कुमार का नाम हरेक्स पोर्टल पर एम.बी.ए. योग्यता पर दर्ज कर दिया। जब आवेदक को इस बारे में पता चला तो उन्होंने मंडल रोजगार अधिकारी हिसार से एम.बी.ए. की मार्कशीट एवं डिग्री उपलब्ध करवाने की मांग की है। हरेक्स पोर्टल पर नाम दर्ज करवाने वाली महिला द्वारा फर्जी मार्कशीट पर सहायक रोजगार अधिकारी की नौकरी हासिल करने के सन्दर्भ में रोजगार विभाग हरियाणा पहले ही सेवाएं समाप्त कर चुका है ।

जब इस बारे में आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल से बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि यह काफी गंभीर मामला है रोजगार विभाग हरियाणा के उच्च अधिकारी मामले को शुरू से ही दबाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। उच्च अधिकारी शुरू से ही विभाग के अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बचाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं ।

रोजगार विभाग हरियाणा के अधीनस्थ अधिकारी यदि कोई गलती करते हैं तो उसका सारा दोष पढ़े-लिखे युवाओं पर थोंप दिया जाता है । उच्च अधिकारी भी अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बचाने का भरपूर प्रयास करते हैं । जब अधिकारियों से रोजगार संबंधित मार्गदर्शन मांगा जाता है तो वह सही मार्गदर्शन देने की बजाय गलत मार्गदर्शन देते हैं जिनका खामियाजा पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं को भुगतना पड़ता है ।

नरेश गुणपाल आर. टी.आई. एक्टीविस्ट

कानपुर में नाबालिक से गैंगरेप में यूट्यूबर गिरफ्तार, दरोगा फरार, डीसीपी हटे, इंस्पेक्टर सस्पेंड

- गैंगरेप के आरोपी दरोगा की तलाश में लगातार जुटीं पुलिस की चार टीमे, सुराग अबतक नहीं

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां कानून और आमजन के रक्षक कहे जाने वाले पुलिस वाले और चौथे खंबे माने जाने वाले तथा कथित पत्रकार वासना के भूखे भेड़िए साबित हो रहे हैं। इस कथन की पुष्टि हुई सचेंडी थाना क्षेत्र में जहां एक दरोगा और एक यूट्यूबर ने मिलकर अपहरण करने के बाद एक नाबालिग के साथ सामूहिक बलात्कार किया। चर्चा का विषय बने इस मामले में यूट्यूबर को गिरफ्तार करने के साथ ही न केवल इंस्पेक्टर विक्रम सिंह को सस्पेंड कर दिया गया है, बल्कि इलाके के डीसीपी को भी हटा दिया गया है। वही मामले में फरार दरोगा की तलाश में पुलिस की चार टीमे में लगाई गई है लेकिन समाचार लिखे जाने तक उसे गिरफ्तार करने में सफलता नहीं मिली है।

वहीं पुलिस ने घटना में प्रयोग किए गए काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी भी बरामद कर ली है। इस घटना में लापरवाही बरतने के आरोप में सचेंडी थाने के इंस्पेक्टर विक्रम सिंह को निलंबित कर दिया गया है। पीड़िता के भाई ने पुलिस को बताया था कि सोमवार रात वह ड्यूटी से घर पहुंचा तो 14 वर्षीय बहन के बारे में घरवालों से पूछा। इस पर उन्होंने उसके शौच जाने की जानकारी दी। काफी देर बाद भी उसके न लौटने पर घरवालों ने खोजबीन शुरु की, लेकिन वह नहीं मिली। करीब एक घंटे बाद किशोरी रोते हुए घर पहुंची और बताया कि काले रंग की स्कार्पियो सवार दो युवकों ने अंधेरे का फायदा उठाकर उसे कार से अगवा कर झांसी रेलवे लाइन किनारे ले जाकर सामूहिक दुष्कर्म किया। मामले में तहरीर दर्ज करने के बाद पुलिस ने जब छानबीन की तो दोनों आरोपियों का पता चला। पुलिस ने एक आरोपी शिवबरन यादव को गिरफ्तार कर लिया है। वो पेशे से यूट्यूबर r पत्रकार बताया जा रहा है। वहीं दूसरे आरोपी की पहचान अमित मौर्य के रूप में हुई है। अमित मौर्या भीमसेन चौकी का पूर्व इंचार्ज। वारदात वाली जगह इसी पुलिस चौकी के अंतर्गत आती है। जानकारी देते हुए कानपुर पुलिस कमिश्नर रघुबीर लाल ने बताया कि आरोपी दरोगा अमित मौर्या को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है और उसकी गिरफ्तारी के लिए 4 टीमें गठित की गई हैं। उन्होंने बताया कि तहरीर में आरोपियों के खिलाफ पॉस्को एक्ट भी जोड़ा गया है। फिलहाल करार दरोगा की तलाश लगातार की जा रही है। अधिकारियों ने बताया उसे जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

ऐ जिंदगी एक हम ही तो न थे सताने को,
कभी तो आकर मिल हमे मौज लुटाने को।

बहुत देखे गम ए दौर, पतझड़ हरा न हुआ,
खुशियां आती है अक्सर छुट्टियां मनाने को।

भूलने को बहुत कुछ है याद कुछ भी नही,
किसी की याद बाकी नही दिल लगाने को।

छुपाकर रखे हुए है अफ़साने सब अपनो के,
कोई हमदर्द न रहा अब अपनापन जताने को।

एक शौक था हमारा सबको खास बनाने का,
अब डर लगता है किसी को अपना बनाने को।

इतने बड़े ख्वाब ख्वामखाह तो नही देखे थे,
ख़त्म हो चली जिंदगी हकीकत बनाने को।

राजगुणपाल मासूमियत ही तेरी खता बन गयी,
थोड़ी सी शैतानी सीख ले अपने हक पाने को ।

राज गुनपाल बालकिया

पृथ्वी विज्ञानः हमारे जीवित ग्रह को समझना

विजय गर्ग

पृथ्वी विज्ञान एक अंतःविषय क्षेत्र है जो पृथ्वी को एक एकीकृत प्रणाली के रूप में अध्ययन करने के लिए विज्ञान की कई शाखाओं को जोड़ता है। इसके प्रमुख घटकों में शामिल हैंः भूविज्ञान पृथ्वी की ठोस सामग्रियों, चट्टानों, खनिजों और भूकंप और ज्वालामुखी जैसी आंतरिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है।

पृथ्वी विज्ञान हमारे ग्रह की संरचना, प्रक्रियाओं, इतिहास और इसके द्वारा समर्थित जीवन का अध्ययन है। हम जिस हवा में सांस लेते हैं, उससे लेकर हमारे पैरों के नीचे की जमीन तक, पृथ्वी विज्ञान हमें यह समझने में मदद करता है कि प्राकृतिक प्रणालियां किस प्रकार एक साथ काम करती हैं और मानव गतिविधियाँ उन्हें कैसे प्रभावित करती हैं। जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं और संसाधनों की कमी के युग में, पृथ्वी विज्ञान पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

पृथ्वी विज्ञान क्या है?

पृथ्वी विज्ञान एक अंतःविषय क्षेत्र है जो पृथ्वी को एक एकीकृत प्रणाली के रूप में अध्ययन करने के लिए विज्ञान की कई शाखाओं को जोड़ता है। इसके प्रमुख घटकों में शामिल हैंः

भूविज्ञान पृथ्वी की ठोस सामग्रियों, चट्टानों, खनिजों और भूकंप और ज्वालामुखी जैसी आंतरिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है।

मौसम विज्ञान - मौसम और वायुमंडलीय प्रक्रियाओं का विज्ञान।

समुद्र विज्ञान (oceanography) महासागरों, समुद्री जीवन, धाराओं और तटीय प्रणालियों का अध्ययन है।

पर्यावरण विज्ञान - मानव और प्राकृतिक वातावरण के बीच अंतःक्रियाओं का अध्ययन, अक्सर सभी पृथ्वी विज्ञान विषयों से लिया जाता है।

ये क्षेत्र मिलकर बताते हैं कि ग्रह किस प्रकार कार्य करता है और समय के साथ विकसित होता है। पृथ्वी विज्ञान क्यों मायने रखता है

प्राकृतिक खतरों को समझना

पृथ्वी विज्ञान भूकंप, बाढ़, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव का पूर्वानुमान लगाने और उन्हें कम करने में मदद करता है। प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियां और खतरा मानचित्रण जीवन बचाते हैं और आर्थिक नुकसान को कम करते हैं। जलवायु और मौसम संबंधी जानकारी

वायुमंडल और महासागरों का अध्ययन करके, पृथ्वी वैज्ञानिक जलवायु पैटर्न, मानसून, गर्मी की लहरें और चरम मौसम की घटनाओं पर नज़र रखते हैं। यह ज्ञान कृषि, जल प्रबंधन और आपदा तैयारी के लिए महत्वपूर्ण है। विशेषकर भारत जैसे देशों में।

संसाधनों का सतत उपयोग

पृथ्वी विज्ञान जल, खनिज, मिट्टी और ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग का मार्गदर्शन करता है। यह भूजल प्रबंधन, खनन, नवीकरणीय ऊर्जा अन्वेषण और मृदा संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्यावरण की रक्षा करना

पर्यावरण का क्षरण, प्रदूषण और जैव विविधता की हानि वैश्विक चुनौतियां हैं। पृथ्वी विज्ञान पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए नीतियां तैयार करने हेतु वैज्ञानिक साक्ष्य प्रदान करता है।

रोजमर्रा के जीवन में पृथ्वी विज्ञान

दैनिक जीवन के कई पहलू पृथ्वी विज्ञान पर निर्भर करते हैं, अक्सर हमें इसका एहसास भी नहीं होता

यात्रा और खेती के लिए मौसम पूर्वानुमान

मिट्टी और भूकंपीय अध्ययन पर आधारित सुरक्षित निर्माण

जलभूविज्ञान के माध्यम से स्वच्छ पेयजल

दीर्घकालिक योजना के लिए जलवायु डेटा

आपदा प्रबंधन और शहरी विकास के लिए उपग्रह चित्र

पृथ्वी विज्ञान और भविष्य

जैसे-जैसे विश्व जलवायु परिवर्तन, समुद्र के स्तर में वृद्धि, जल की कमी और ऊर्जा संक्रमण का सामना कर रहा है, पृथ्वी विज्ञान भविष्य को आकार देगा। उपग्रह प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा मॉडलिंग में हुई प्रगति से यह बदल रहा है कि हम पृथ्वी की प्रणालियों को कैसे देखते हैं और समझते हैं।

युवा छात्र और शोधकर्ता पृथ्वी विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। वे न केवल वैज्ञानिक, बल्कि जलवायु विश्लेषक, पर्यावरण सलाहकार, शहरी योजनाकार और नीति सलाहकार भी हैं।

निष्कर्ष

पृथ्वी विज्ञान केवल चट्टानों, बादलों या महासागरों का अध्ययन करने के बारे में नहीं है। यह उस नाजुक संतुलन को समझने के बारे में है जो पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाता है। यह सीखकर कि हमारा ग्रह कैसे काम करता है, हम इसे बचाने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

पृथ्वी की देखभाल करने के लिए, हमें पहले इसे समझना होगा—और यही पृथ्वी विज्ञान का वास्तविक मिशन है।

सेवानिवृत्तप्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद

असुरक्षित बिस्कुट और सरकारी नियम

एक बढ़ती हुई चिंता भारत में बिस्कुट जैसे पैकेज्ड खाद्य पदार्थों के निर्माण और बिक्री को खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 (FSSA) के अंतर्गत नियंत्रित किया जाता है।

इस कानून को भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) तथा राज्य खाद्य सुरक्षा विभाग लागू करते हैं।

इस अधिनियम के अंतर्गत खाद्य पदार्थों में प्रयुक्त एडिटिव्स, प्रिज़र्वेटिव्स, रासायनिक अवशेष, सूक्ष्मजीवीय प्रदूषण आदि के लिए अनुमेय (Permissible) सीमाएँ निर्धारित की गई हैं।

यदि कोई खाद्य उत्पाद इन मानकों से अधिक मात्रा में हानिकारक तत्वों को शामिल करता है, तो उसे असुरक्षित घोषित कर बाज़ार में बिक्री से प्रतिबंधित किया जा सकता है।

दुर्भाग्यवश, कुछ निर्माता इन दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन नहीं करते।

अधिक शेल्फ लाइफ, बेहतर रंग-रूप या लागत में कमी के लालच में वे अनुमति से अधिक मात्रा में प्रिज़र्वेटिव्स या हानिकारक रसायन—जैसे सल्फाइट्स, नाइट्राइट्स, कृत्रिम रंग या अस्वीकृत एडिटिव्स—का प्रयोग करते हैं।

इन रसायनों की अधिक मात्राः

1. एलर्जी प्रतिक्रियाएँ
2. श्वसन, पाचन एवं चयापचय संबंधी समस्याएँ तथा दीर्घकाल में कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है।

प्रियागोल्ड बिस्कुट पर प्रतिबंधः क्या हुआ? हाल ही में खाद्य सुरक्षा से जुड़ा एक महत्वपूर्ण मामला प्रियागोल्ड बटर डिलाइट बिस्कुट से संबंधित सामने आया।

जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग ज़िले के खाद्य सुरक्षा विभाग ने नियमित बाज़ार निरीक्षण के दौरान प्रियागोल्ड बटर डिलाइट बिस्कुट (बैच नंबर E25KPO2FB) के नमूने एकत्र किए।

इन नमूनों को परीक्षण के लिए नेशनल फूड लैबोरेटरी, गाजियाबाद भेजा गया।

प्रयोगशाला रिपोर्ट (संख्याः JK-665/DEC/25/786, दिनांक 05-12-2025) में यह पाया गया कि बिस्कुट में सल्फाइट की मात्रा भारतीय खाद्य सुरक्षा नियमों में निर्धारित अधिकतम सीमा से अधिक थी।

इस गंभीर उल्लंघन के कारणः

1. संबंधित बैच को मानव उपभोग के लिए असुरक्षित घोषित किया गया।
2. FSSA के अंतर्गत प्राप्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए उस बैच की बिक्री, भंडारण, वितरण एवं प्रदर्शन पर तत्काल प्रतिबंध लगा दिया गया।
3. थोक विक्रेताओं, खुदरा दुकानदारों और वितरकों को निर्देश दिया गया कि वे यह बैच तुरंत बाज़ार से हटाएँ।

उपभोक्ताओं से अपील की गई कि वे इस उत्पाद का सेवन न करें, विशेषकर अस्थमा रोगियों और सल्फाइट-संवेदनशील व्यक्तियों के लिए यह अत्यंत हानिकारक हो सकता है।

अधिक मात्रा में प्रिज़र्वेटिव क्यों खतरनाक हैं? सल्फाइट जैसे प्रिज़र्वेटिव्स का उपयोग भोजन को खराब होने से बचाने और उसकी शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए किया जाता है।

नियंत्रित और अनुमेय मात्रा में ये सामान्यतः सुरक्षित माने जाते हैं।

लेकिन — अत्यधिक सल्फाइट से

1. सांस लेने में तकलीफ
2. एलर्जी
3. सिरदर्द
4. पेट से जुड़ी समस्याएँ हो सकती हैं।
5. लंबे समय तक ऐसे रसायनों के संपर्क में रहना दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है।

इसी कारण से सरकार ने सुरक्षा सीमाएँ तय की हैं—ताकि आम जनता की सेहत सुरक्षित रहे।

ताज़ा घटनाक्रम और व्यापक खाद्य सुरक्षा परिदृश्य

1. प्रियागोल्ड बिस्कुट पर लगा यह प्रतिबंध भारत के विभिन्न हिस्सों में चल रही खाद्य सुरक्षा सख्ती का हिस्सा है।
2. कश्मीर क्षेत्र में पैकेज्ड पीने के पानी पर भी प्रतिबंध लगाए गए हैं।
3. विभिन्न खाद्य उत्पादों की व्यापक जाँच शुरू की गई है।
4. अंडों में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक अवशेषों की जाँच जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं।

यह दर्शाता है कि खाद्य नियामक संस्थाएँ अबः

1. अधिक नमूने एकत्र कर रही हैं
2. कठोर परीक्षण कर रही हैं और
3. मानकों पर खरे न उतरने वाले उत्पादों पर तत्काल कार्रवाई कर रही हैं।

कठोर प्रवर्तन क्यों आवश्यक है? खाद्य सुरक्षा नियमों का सख्त पालन इसलिए ज़रूरी है क्योंकिः

1. यह जन-स्वास्थ्य की रक्षा करता है — विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों और एलर्जी से पीड़ित लोगों की।
2. यह उपभोक्ताओं का विश्वास बनाए रखता है।
3. यह निर्माताओं को जवाबदेह बनाता है।
4. यह मिलावट और असुरक्षित उत्पादन पर रोकथाम करता है।

निष्कर्ष प्रियागोल्ड बटर डिलाइट बिस्कुट पर लगाया गया प्रतिबंध इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि जब कोई खाद्य उत्पाद अनुमेय सीमा से अधिक रासायनिक एडिटिव्स का उपयोग करता है, तो सरकारी एजेंसियाँ जनता की सुरक्षा के लिए कठोर कदम उठाती हैं।

यह कार्रवाई देशभर में खाद्य सुरक्षा अनुपालन को सुदृढ़ करने के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है। साथ ही यह भी सच है कि बाज़ार में कई अन्य बिस्कुट, पैक्ड स्नैक्स और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड ऐसे हो सकते हैं जिनमें हानिकारक और कैंसरकारी रसायन मौजूद हों — और वे अब भी खुलेआम बिक रहे हों।

इसलिए जागरूक उपभोक्ता बनना और खाद्य सुरक्षा नियमों का सख्त पालन सुनिश्चित करना—दोनों ही समय की आवश्यकता हैं।

'समय ' और अन्य के बारे में सोचना

डॉ. विजय गर्ग

समय की कभी शुरुआत नहीं होती; समय का कभी अंत नहीं होता। फिर भी मानव मन समय को मापने में विश्वास रखता है। एक समय ऐसा था जब माप शुरू हुआ, और इसे मापने के लिए विभिन्न इकाइयां बनाई गईं। यह सब मानव निर्मित है। विभिन्न समुदायों ने समय का अलग-अलग माप विकसित किया है। यह एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न रहा है तथा तर्क के विभिन्न आधारों का अनुसरण करता रहा है। अधिकांशतः वे क्षेत्रीय विश्वासों या धारणाओं को प्रतिबिंबित करते हैं, जो विश्व की समझ में सहायक होते हैं।

अक्सर, समय का मापन सूर्य, चंद्रमा या किसी अन्य ग्रह की गति से जुड़ा हुआ है। यह सब मानव निर्मित है। इनमें से कोई भी सर्वोच्च अस्तित्व द्वारा निर्धारित नहीं किया गया है। इसलिए, जैसा कि ऊपर बताया गया है, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मनुष्य अपने व्यवहार और कार्यों को मापने और समझने के लिए ऐसा करता है।

इस विचारधारा के लिए तात्कालिक प्रोत्साहन तथाकथित ₹नववर्ष₹ की चर्चा है। 2025 समाप्त हो गया है, और 2019 शुरू हो गया है। इसे, सर्वोत्तम रूप से, एक कैलेंडर प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में, कुछ भी ख़त्म नहीं हुआ और कुछ भी शुरू नहीं हुआ।

एक लोकप्रिय धारणा है कि तथाकथित कैलेंडर, जिसका 2025/2026 भी हिस्सा होगा, पोप ग्रेगरी द्वारा बनाया गया था। उन्होंने समय की गणना इस प्रकार की कि यीशु मसीह के जन्म की तारीख तय हो गई। इसलिए, मसीह के जन्म से पहले के समय को ₹Kristus Bago (BC)₹ कहा गया था। माना जाता है कि मसीह का जन्म 0 ईसा पूर्व में हुआ था, और वहां से ई. कहा जाता है कि (एनो डोमिनी) युग शुरू हो गया है। इसलिए, अब हम 2025 के अंत और 2036 की शुरुआत के साथ जी रहे हैं।

एक अन्य गणना से पता चलता है कि संबंधित तिथि में लगभग तीन वर्ष की त्रुटि है, तथा यीशु मसीह का जन्म 0 ईस्वी में नहीं, बल्कि 3 ईस्वी में हुआ था। यह गणना, जैसा कि अपेक्षित था, कुछ लोगों द्वारा प्रश्नांकित की गई है तथा अन्य लोगों द्वारा इसका बचाव किया गया है। यह इस बहस को सुलझाने का स्थान नहीं हो सकता। हालाँकि, बहस ही मुख्य बात नहीं है; मुख्य बात वह कैलेंडर है जिसका दुनिया का अधिकांश हिस्सा पालन करता है।

दुनिया के कुछ हिस्से अलग-अलग कैलेंडर का पालन करते हैं। भारत के कई भागों में विक्रम संवत कैलेंडर का पालन किया जाता है, तथा ईसा मसीह के बीच 50 वर्ष से अधिक का अंतर होता है। नामकरण और विक्रम संवत संदर्भ। यह एक और बहस है जिसका समाधान इस पाठ में नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार, इस्लाम के अनुयायियों का अपना कैलेंडर है, जिसका संबंध पैगंबर मुहम्मद से है।

दुनिया भर में कई कैलेंडरों की पहचान की जा सकती है। आम तौर पर, जवाहरलाल नेहरू द्वारा घोषित आधिकारिक भारतीय कैलेंडर को कई लोग शक संवत मानते हैं।

जाहिर है, इस पर बहस चल रही है और इसका समाधान करने के लिए कोई एकल ढांचा नहीं है। कानून ने आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं दिया है।

इस विचारधारा को विस्तार के अन्य भागों में भी देखा जा सकता है और यदि विरोधाभासों पर प्रकाश नहीं डाला जाता, तो कम से कम ऐसे मापन की सीमाओं पर प्रकाश डालने के लिए इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, सूर्य को सुबह उदय होना चाहिए और शाम को अस्त होना चाहिए। सच तो यह है कि सूर्य कभी उगता नहीं और सूर्यास्त भी नहीं होता। यह पृथ्वी है जो अपनी धुरी के चारों ओर घूमती है, और सूर्य के संदर्भ में पृथ्वी की स्थिति सूर्योदय और सूर्यास्त का भ्रम पैदा करती है।

यह इस बात का एक और उदाहरण है कि किस प्रकार मानव मन की सीमा ने स्वयं को एक तथाकथित सार्वभौमिक नियम में बदल दिया है, जिसका हर कोई सहज रूप से या अन्यथा पालन करता है।

उपरोक्त उदाहरण एक बहुत ही बुनियादी प्रश्न उठाते हैंः क्या समय को मापने, कैलेंडरों का वर्गीकरण करने, मौसमों को समझने आदि में कोई सुधार किया जा सकता है।

यह प्रश्न पूछा गया है, और समाधान में स्पष्ट रूप से समय, बहस आदि लगेगा। हालाँकि, यह एहसास महत्वपूर्ण है क्योंकि मानव कथा का अधिकांश हिस्सा समय के आसपास होता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से, होमो सेपियंस का औसत जीवनकाल 100 वर्ष से भी कम है। तदनुसार, एक 10वीं सदी का जीवन स्तर के लिए एक मानक बन गया है। हालांकि, यह बात बहुत कम लोगों को पता है कि कई कोशिकाओं का जीवनकाल एक शताब्दी से भी अधिक होता है। इन कोशिकाओं में कुछ महत्वपूर्ण क्षमताएं भी होती हैं और वे प्रजनन करने में सक्षम होती हैं। यदि उनके बीच कोई भाषा है, तो उसे मनुष्यों द्वारा अभी तक समझा नहीं जा सका है। लेकिन मुद्दा यह नहीं है; मुद्दा यह है कि मनुष्य इस ग्रह पर हावी हैं, और उनकी सोच का तरीका माप निर्धारित करता है। साइबेरिया के बर्फीले रेगिस्तान में कोशिकाओं के एक निश्चित प्रकार के जीवन के चित्रण मौजूद हैं, जो वस्तुतः हजारों वर्षों से अस्तित्व में हैं।

चाहे कुछ भी हो, एक वर्ष का अंत और दूसरे वर्ष की शुरुआत उन चीजों पर विचार करने के लिए उपयुक्त समय है जिनका उपयोग मनुष्य मापने और रिकॉर्ड करने के लिए करते हैं। यह सब उनके आचरण और व्यवहार को प्रभावित करता है।

इसमें हमेशा सुधार की गुंजाइश रहती है। यहां उद्देश्य दोष ढूंढना या खामियों को उजागर करना नहीं है। यहां उद्देश्य कुछ बुनियादी मुद्दों पर चिंतन और विचार करना है जो हमारी सोच को प्रभावित करते हैं, और वास्तव में समय का तथाकथित माप भी। हो सकता है कि जैसे-जैसे मानव प्रजाति का विकास होगा, इनमें से कुछ चिंताओं को सुधारा जाएगा और उनका प्रबंधन किया जाएगा

यह बहस किस प्रकार आगे बढ़ेगी, यदि होगी भी तो केवल समय ही बता सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएच मलोट पंजाब

विकसित भारत के सारथीः प्रवासी भारतीय और 2047 का संकल्प

-सुनील कुमार महला

हर साल 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है। इसे एन आर आई दिवस(नोन-रेजिडेंट इंडियन डे) भी कहा जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि इस दिन को इसलिए चुना गया था, क्योंकि 9 जनवरी 1915 को महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए थे, और भारत की आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने निर्णायक भूमिका निभाई थी। यदि हम यहां पर इस दिवस के इतिहास की बात करें तो यह दिवस साल 2003 से मनाया जा रहा है, जब पहली बार भारत सरकार ने प्रवासी भारतीयों के योगदान को सम्मान देने के लिए इसे आयोजित किया। यह कार्यक्रम भारत सरकार के विदेश मंत्रालय (मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स) द्वारा आयोजित होता है।प्रवासी भारतीय दिवस मनाने के मुख्य उद्देश्यों की यदि बात करें तो इसमें क्रमशः विश्व में बसे भारतीयों द्वारा भारत के विकास और समाज में दिए योगदान को सम्मानित करना, भारत और प्रवासी भारतीय समुदाय के बीच सम्बन्धों को मज़बूत करना, एक ऐसा मंच प्रदान करना जहाँ प्रवासी भारतीय अपनी राय, अनुभव और सुझाव साझा कर सकें तथा प्रवासी भारतीय सम्मान(अवार्ड) जैसे पुरस्कार देकर उन्हें सम्मानित करना है। गौरतलब है कि यह पुरस्कार भारत का सबसे बड़ा सम्मान है जो प्रवासी भारतीयों को दिया जाता है, जो विदेश में रहते हुए भारत और भारतीय समुदाय के लिए विशिष्ट योगदान देते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रवासी भारतीय दिवस के प्राथमिक लक्ष्य भारत और विदेशों में बसे भारतीयों के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण करना है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य भारत के आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास में प्रवासी भारतीयों के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करना है। साथ ही, यह विश्व समुदाय के बीच भारत की सकारात्मक छवि को सुदृढ़ करते हुए विदेशों में भारत के प्रति बेहतर समझ विकसित करने का प्रयास करता है। प्रवासी भारतीय दिवस भारत के राष्ट्रीय लक्ष्यों के समर्थन को बढ़ावा देता है और विश्वभर में स्थानीय भारतीय समुदायों के कल्याण के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रवासी भारतीयों को अपनी पैतृक भूमि की सरकार और जनता से भावनात्मक व वैचारिक रूप से जुड़ने का एक प्रभावी मंच प्रदान करता है, जिससे पारस्परिक सहयोग और विश्वास और अधिक मज़बूत होता है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि साल 2003 में पहला सम्मेलन नई दिल्ली में हुआ और उसके बाद अन्य शहरों में भी पारंपरिक रूप से इसका आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन की शुरुआत तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के तहत प्रवासी भारतीय समुदाय को मान्यता देने एवं उनके साथ जुड़ने हेतु एक मंच के रूप में की गई थी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि 2015 में इसे दो साल में एक बार आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया था। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रत्येक दो साल में 9 जनवरी को मनाया जाने वाला प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) एक उल्लेखनीय आयोजन है जिसके तहत भारतीय प्रवासियों द्वारा अपनी मातृभूमि के लिये दिये गए योगदान पर प्रकाश डाला जाता है।पिछले साल यानी कि वर्ष 2025 में 18वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन की थीम- 'विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान' रखी गई थी तथा इसका आयोजन ओडिशा द्वारा 8 से 10 जनवरी 2025 तक किया गया था।इस साल 9 जनवरी 2026 को सांकेतिक रूप से प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाएगा, लेकिन इसके लिए यह आलेख लिखे जाने तक किसी विशेष थीम की आधिकारिक घोषणा सरकार द्वारा नहीं की गई है। बहरहाल, यदि हम यहां पर प्रवासी भारतीयों के योगदान की बात करें तो प्रवासी भारतीय 'विकसित भारत' के निर्माण में आर्थिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक सेतु के रूप में अपना योगदान दे सकते हैं। वे न केवल भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा भेजकर अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करते हैं, बल्कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) और स्टार्टअप फंडिंग के माध्यम से नवाचार को भी बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, विदेशों में अर्जित अपने तकनीकी ज्ञान और अनुभव (ब्रेन गेन) को भारतीय उद्योगों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझा करके वे कौशल विकास(स्किल डेवलपमेंट) में भी मदद कर सकते हैं। वैश्विक स्तर पर भारत की 'सॉफ्ट पावर' को मज़बूत करने और भारतीय उत्पादों के लिए अन्तरराष्ट्रीय बाजार तैयार करने में भी उनकी भूमिका निर्णायक है। अंततः, अपनी मातृभूमि के साथ उनका भावनात्मक जुड़ाव और वैश्विक नेटवर्किंग भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने की गति को तेज कर सकती है। हालांकि,प्रवासी भारतीयों से संबंधित अनेक चुनौतियां भी विद्यमान हैं।मसलन,प्रवासी भारतीयों से संबंधित चुनौतियों को संक्षेप में देखें तो प्रमुख समस्या प्रशासनिक जटिलता और कानूनी बाधाओं की है, जहाँ भारत में निवेश या संपत्ति प्रबंधन के दौरान उन्हें लालफीताशाही और लंबी कानूनी प्रक्रियाओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, कई देशों में प्रवासियों को नस्लभेद, कार्यस्थल पर असुरक्षा और कड़े वीजा नियमों जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है। दूसरी ओर, भारत में दोहरी नागरिकता का प्रावधान न होना भी प्रवासियों की नई पीढ़ी को पूरी तरह जुड़ने से रोकता है। बहरहाल, यहां जानकारी देना चाहूंगा कि प्रवासी भारतीयों की सहायता और उनकी सुरक्षा के लिए भारत सरकार ने दो मुख्य डिजिटल प्लेटफॉर्म 'मदद पोर्टल' तथा ई-माइग्रेट पोर्टल तैयार किए हैं।मदद पोर्टल की बात करें तो यह विदेश मंत्रालय की एक प्रभावी ऑनलाइन समाधान प्रणाली है, जिसका उद्देश्य विदेशों में रह रहे भारतीयों की आपातकालीन शिकायतों का निवारण करना है। यदि किसी प्रवासी भारतीय को विदेश में कानूनी समस्या, पासपोर्ट खोने, घरेलू उत्पीड़न या किसी भी प्रकार के संकट का सामना करना पड़ता है, तो वे इस पोर्टल पर अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। इसकी खासियत यह है कि शिकायतों की निगरानी सीधे उच्च अधिकारियों द्वारा की जाती है और समाधान की प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होती है। वहीं दूसरी ओर ई-माइग्रेट पोर्टल मुख्य रूप से उन भारतीय श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया है जो रोजगार के लिए विदेश (विशेषकर खाड़ी देशों) जाते हैं। यह विदेशी नियोक्ताओं और भर्ती एजेंटों के डेटाबेस को एकीकृत करता है, जिससे श्रमिकों को फर्जी एजेंटों और शोषण से बचाया जा सके। इसके माध्यम से श्रमिक अपनी बीमा पॉलिसी (प्रवासी भारतीय बीमा योजना) और अपने रोजगार अनुबंध की वैधता की जांच आसानी से कर सकते हैं।आगे की राह के रूप में, भारत को प्रवासियों के लिए 'सिंगल विंडो' डिजिटल सिस्टम और विशेष फास्ट-ट्रैक अदालतों की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उनके संपत्ति विवाद जल्द सुलझ सकें। साथ ही, 'नमन' जैसे पोर्टल्स के जरिए उनकी शिकायतों का त्वरित निवारण और 'नो इंडिया प्रोग्राम' जैसे सांस्कृतिक अभियानों के माध्यम से युवा पीढ़ी को जड़ों से जोड़ना आवश्यक है। सरकार को वैश्विक स्तर पर उनके अधिकारों के लिए सक्रिय कूटनीति का प्रयोग करना चाहिए, जिससे वे बिना किसी भय के 'विकसित भारत' के विजन में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे सकें। निष्कर्षतः, हम यह बात कह सकते हैं कि प्रवासी भारतीय दिवस केवल एक वार्षिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह दुनिया भर में फैले भारतीय समुदाय और उनकी मातृभूमि के बीच के गहरे भावनात्मक और रणनीतिक संबंधों को पुनर्जीवित करने का एक सशक्त मंच है। यह दिवस प्रवासियों की उपलब्धियों का सम्मान करने के साथ-साथ उन्हें 'विकसित भारत 2047' के संकल्प में सक्रिय भागीदार बनाने का अवसर प्रदान करता है। प्रवासी भारतीय अपनी पूंजी, तकनीकी विशेषज्ञता और वैश्विक प्रभाव के माध्यम से भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में एक 'जीवंत सेतु' (लिविंग ब्रिज) का कार्य कर रहे हैं। अंततः, उनकी सक्रिय सहभागिता ही भारत को आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से एक सुदृढ़ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने की कुंजी है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,

शादी विकल्प, जीवन मिशनः आज की लड़कियों की सोच

डॉ विजय गर्ग

आज के समय में लड़कियों का विवाह और जीवन-लक्ष्य को लेकर सोच में स्पष्ट बदलाव देखने को मिल रहा है। पारंपरिक रूढ़ियों के साथ आधुनिकता, शिक्षा, करियर और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी कई नई प्रवृत्तियाँ उभर रही हैं—जो सिर्फ़ शादी को जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं मानतीं।

1. शिक्षा, करियर और व्यक्तिगत लक्ष्य अब प्राथमिकता

आज की लड़कियाँ पहले शिक्षा और करियर को महत्व देती हैं।

शादी कई के लिए पहले प्राथमिकता नहीं रह गई है, बल्कि यह जीवन के कई संभावित विकल्पों में से एक बन गई है। विद्यार्थी खासकर उच्च शिक्षा पूरी करना, नौकरी में स्थापित होना, यात्रा और आत्मानुभव को प्राथमिकता देते हैं। उदाहरण के तौर पर, भारत में युवतियाँ अविवाहित रहने को भी विकल्प मान रही हैं क्योंकि शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें पारंपरिक पथ से आगे बढ़ना सिखा रही है।

2. शादी अब ज़रूरी "लक्ष्य" नहीं—एक विकल्प है

परंपरागत समाज में "शादी ही जीवन का उद्देश्य" जैसी सोच आज भी कहीं-न-कहीं मौजूद है, लेकिन इससे हटकर लड़कियाँ अब सवाल उठाती हैं:

"कब और क्यों शादी करनी है?"

"क्या करियर पूरा होने के बाद ही रिश्तों पर ध्यान देना चाहिए?"

"क्या शादी ज़रूरी है या बस सामाजिक अपेक्षा?"

युवा महिलाओं में यह समझ बढ़ रही है कि शादी सिर्फ एक सामाजिक संस्था है, न कि जीवन की अंतिम मंज़िल।

3. रिश्तों में बदलावः शादी के नए आयाम

शादी के प्रति सोच अब अधिक विवेकपूर्ण और चयनात्मक हो चुकी हैः

स्वेच्छा से रिश्ता चुनना

लड़कियाँ अब लिव-इन रिलेशनशिप, साझा जीवन लक्ष्यों और समान सम्मान-आधारित रिश्तों पर भी विचार करती हैं—कुछ लोग इसे स्वतंत्रता और वैकल्पिक रिश्तों का संकेत मानते हैं।

व्यक्तिगत जोखिम और अनुभव

बॉलीवुड हस्तियों या सोशल मीडिया से सन्दर्भ में, कई महिलाओं ने बहुत कम उम्र में शादी न करने की सलाह दी है, ताकि पहले खुद को जान सकें और जीवन के अनुभव पा सकें।

4. सामाजिक दबाव Vs. व्यक्तिगत फैसला

आज भी कुछ क्षेत्रों में परंपरागत सोच दबाव बनकर आती है—जैसे जल्दी शादी को प्राथमिकता देना या शादी को हर समस्या का समाधान मानना।

लेकिन युवतियाँ अब खुद के फैसले पर ज़ोर देती हैं—चाहे वो शिक्षा हो, करियर हो, या शादी का निर्णय।

5. वैश्विक रुझानों की झलक

वैश्विक शोध और सर्वे भी यही संकेत देते हैं किः

किशोरियों में अब शादी की अपेक्षा कम है—बहुत सारी लड़कियाँ शादी को भविष्य की प्राथमिकता के रूप में नहीं देखतीं।

महिलाएँ (साथ) खोजती हैं न कि सिर्फ़ पारंपरिक बंधन।

निष्कर्ष

आज की लड़कियों की सोच बहुताधिक बहुआयामी हो गई हैः

शादी अब ज़िंदगी का मात्र लक्ष्य नहीं, बल्कि स्वयं के फैसले, करियर, स्वतंत्रता और जीवन अनुभव का विकल्प है। शादी या अविवाहित रहना, दोनों को सम्मानजनक विकल्प के रूप में देखा जा रहा है, जहाँ व्यक्ति स्वयं तय करता है कि उसका जीवन मिशन क्या है।

समाज की अपेक्षाएँ बदल रही हैं, और लड़कियाँ उस परिवर्तन की नायिकाएँ हैं—जो अपने लक्ष्य खुद तय कर रही हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आखिरकार अमेरिका की हस्तक्षेपवादी राजनीति से कैसे सुरक्षित रहेंगे उसके प्रतिद्वंद्वी देश?

कमलेश पांडेय

समकालीन रमणीक जनतांत्रिक दुनिया अमेरिकी वर्चस्व और उसकी समर्थित हिंसक हस्तक्षेपवादी राजनीति से तभी ज्यादा महफूज़ हो सकती है, जब शक्ति-संतुलन बहुध्रुवीय होगा, अंतरराष्ट्रीय क़ानून को वास्तविक दाँत मिलेंगे, और वैश्विक दक्षिण यानी ग्लोबल साउथ के देश परस्पर मिलकर वैकल्पिक संस्थागत ढांचे खड़े करेंगे। ऐसा इसलिए कि केवल नैतिक अपील या यूएनओ की प्रतीकात्मक निंदा से, जैसा कि यूक्रेन, गाजा और वेनेज़ुएला पर हालिया हमले में उसका गैरजिम्मेदाराना रोल दिखा, स्थितियाँ नहीं बदलेंगी।

इसलिए यक्ष प्रश्न है कि आखिरकार अमेरिका की हस्तक्षेपवादी राजनीति से कैसे सुरक्षित रहेंगे उसके प्रतिद्वंद्वी देश?

इसलिए खतरे की असल प्रकृति को समझना पड़ेगा, फिर रूस, चीन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, ईरान, उत्तर कोरिया, कम्बोडिया, क्यूबा, मेक्सिको आदि देशों को परस्पर मिलकर अमेरिकी आपराधिक प्रवृति को हतोत्साहित करना होगा। इस निमित्त चीन को भी अपनी विस्तारवादी नीति और ईरान को इस्लामिक पूर्वाग्रही नीति से तौबा करना पड़ेगा। अन्यथा तटस्थ देश भारत का सहयोग ग्लोबल साउथ को नहीं मिल पायेगा और वह मजबूरी में अमेरिका-इजरायल-जापान खेमे से सहयोग लेते रहने को अभिशप्त हो जाएगा।

हालांकि, रूसी-चीनी मित्रता से और भारत-चीन की शत्रुता से भारत हमेशा सावधान रहता है और अमेरिका-यूरोप के प्रति भी सहानुभूति रखता है। लेकिन पश्चिमी देशों की दोगली नीति के चलते भारत की भलाई गुटनिरपेक्ष नीतियों में ही है। यह स्थिति भारत-रूसी मित्रता की प्रगाढ़ता के लिए भी अच्छी नहीं होगी। क्योंकि अमेरिका, रूस और चीन को आर्थिक व सैन्य दृष्टि से तेजी से मजबूत बनते भारत को रोकने का स्वांग रच कर उसको आंख दिखाने वाले विकासशील देशों पर अनैतिक कार्रवाई करके उन्हें अपने काबू में ले रहा है।

दुनिया ने देखा कि अमेरिका ने वेनेज़ुएला पर "ऑपरेशन एब्सोल्यूट रिज़ॉल्व" के तहत राष्ट्रपति मादुरो को गिरफ़्तार कर बाहर ले जाकर "देश चलाने" तक की बात कही, जो संप्रभुता पर सीधा हमला और पुराने मॉनरो सिद्धांत की वापसी है। ऐसा करके उसने इराक की तरह ही तेल और दुर्लभ खनिज संपदा का खेल शुरू कर दिया है। साथ ही कम्बोडिया, मेक्सिको, क्यूबा, ग्रीनलैंड, ईरान आदि को लेकर डॉनल्ड ट्रंफ ने जो धमकी दी है, वह हैरतअंगेज पर काबिलेगौर है।

वहीं, बेनेज़ुएला के कार्यकारी राष्ट्रपति से उन्होंने अपेक्षा जताई है कि वह रूस, चीन, ईरान और क्यूबा से अपने सम्बन्धों को न्यूनतम करें ताकि अमेरिका को रणनीतिक खतरों से बचाया जा सके। अभी तक का जो अमेरिकी इतिहास है, उसके दृष्टिगत लक्षित देश इराक, लीबिया, सीरिया, फिलिस्तीन, वियतनाम आदि की तरह बर्बाद हुए हैं। सच कहा जाए तो बेनेज़ुएला के तरह के एकतरफ़ा सैन्य ऑपरेशन को अंतरराष्ट्रीय क़ानून और यूएन चार्टर के उल्लंघन के रूप में कई विशेषज्ञों व देशों ने देखा, लेकिन स्थायी सदस्यों की राजनीति के कारण कोई ठोस दंडात्मक क़दम नहीं उठ पाया।

स्पष्ट है कि रूस को यूक्रेन सहित पश्चिमी यूरोप से, भारत को पाकिस्तान-बंगलादेश समेत अन्य पड़ोसी देशों से और चीन को ताइवान सहित दक्षिण चीन सागर में उलझाने के बाद अब उसने नए सिरे से अमेरिकी विस्तारवाद का बिगुल फूंक दिया है। जिसका मकसद साफ है कि अमेरिका अब उत्तर अमेरिका और दक्षिण अमेरिका में रूस, चीन, भारत, ब्राजील की दाल नहीं गलने देगा ताकि समय रहते ही ब्रिक्स की हवा निकल जाए। यह मुनरो सिद्धांत की वापसी है ताकि पश्चिमी गोलार्ध में अमेरिका अपराजेय बन जाए।

कूटनीतिक विशेषज्ञों के मुताबिक, अब तक अमेरिका की रणनीति रही कि यूरोप में रूस, चीन, भारत की दाल नहीं गले। लेकिन जब उसने महसूस कर लिया कि जी-सेवन के अन्य यूरोपीय व एशियाई देश चीन, भारत, रूस व अरब देशों से सम्बन्ध प्रगाढ़ बना रहे हैं और अमेरिका से मदद लेकर यह सबकुछ कर रहे हैं तो डॉनल्ड ट्रंफ ने इनकी आर्थिक नकेल कसनी शुरू कर दी। साथ ही खुद को पश्चिमी गोलार्द्ध यानी उत्तरी अमेरिका व दक्षिणी अमेरिका में मजबूत करने का संकल्प लिया और बेनेज़ुएला से अमल प्रारंभ कर दिया और भावी इरादे भी स्पष्ट कर दिए।

इससे भविष्य में अमेरिका का प्रतियोगी बनने की चाहत रखने वाले सभी देशों में हड़कंप मचा हुआ है। कल तक जो डॉलर को रिप्लेस करने का स्वप्न पाले हुए थे, वो अब अपने समर्थकों को भी अमेरिका के खूनी पंजों से बचा नहीं पा रहे हैं। वहीं, हैरत की बात है कि अब तक इस्लामिक देशों के आतंकवादियों के मार्फ़त अपनी दादागिरी चलाने वाला अमेरिका अब खुद ही सैन्य कार्रवाई के विकल्प पर उतर आया है जो ब्रिक्स देशों को खुली चुनौती है कि जोर है तो रोक लो।

शायद इसलिए अमेरिका रूस, चीन, भारत से एक एक करके अपने रिश्ते तो मजबूत रखना चाहता है, लेकिन इन्हें परस्पर भिड़ाये रखना भी चाहता है ताकि ये तीनों देश कभी एक न हो पाएं और अमेरिका की दादागिरी उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, पश्चिमी एशिया, पूर्वी एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया तक चलती रहे।

यही वजह है कि वैश्विक ढांचे में सुधार की जरूरत है। इसमें भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, जापान और जर्मनी जैसे देशों को शामिल करने की आवश्यकता है। क्योंकि

दुनिया ने देखा कि यूएन सुरक्षा परिषद में पी-5 वीटो की असीमित शक्ति ने यूक्रेन, गाज़ा और वेनेज़ुएला जैसे मामलों में पक्षपात और पंगुता साबित की है, इसलिए प्रस्ताव है कि नरसंहार, युद्ध अपराध जैसे मुद्दों पर वीटो पर थीमैटिक प्रतिबंध लगे और उसकी सार्वजनिक जवाबदेही तय हो।

"यूनाइटिंग फॉर पीस" और 2022 की Veto Initiative जैसे उपायों के ज़रिये जनरल असेंबली को ज़्यादा सक्रिय भूमिका देने की दिशा उभर रही है, जिससे एकतरफ़ा दखल पर सामूहिक राजनीतिक लागत बढ़े। इसलिए बहुध्रुवीय शक्ति-संतुलन जरूरी है। BRICS और BRICS+ का विस्तार 2025 के बाद से पश्चिमी प्रभुत्व के मुकाबले एक वैकल्पिक आर्थिक-राजनीतिक धुरी बना रहा है, जहाँ "फेयर एंड रिप्रेज़ेंटेटिव ग्लोबल ऑर्डर" का लक्ष्य रखा गया है।

साथ ही क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट सिस्टम, मल्टीकरेंसी स्वैप और पश्चिमी वित्तीय संस्थानों से आंशिक स्वावलंबन जैसी पहलें डॉलर-केंद्रित दबाव और प्रतिबंधों की प्रभावशीलता कम कर सकती हैं, जिससे छोटे देशों पर सैन्य-आर्थिक ब्लैकमेल की गुंजाइश घटती है। इसके अलावा क्षेत्रीय गठबंधन और वैश्विक दक्षिण की गोलबंदी मजबूत करनी होगी और इसमें शामिल देशों को खुद आत्मावलोकन करना होगा कि कहीं वो भी अमेरिका की तरह ही साम्राज्यवादी या विस्तारवादी तो नहीं हैं।

ऐसा इसलिए किलैटिन अमेरिका में वेनेज़ुएला हमले के बाद वामपंथी सरकारों ने इसे ख़तरनाक मिसाल और "अस्वीकार्य रेखा पार करना" कहा, जबकि कुछ दक्षिणपंथी शासन ने समर्थन किया, जो दिखाता है कि क्षेत्रीय एकजुटता अभी अधूरी है। अगर अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया के देश कूटनीतिक फ़ोरमों (BRICS, G77, CELAC, AU आदि) के माध्यम से साझा न्यूनतम एजेंडा बनाकर किसी भी बाहरी सैन्य हस्तक्षेप के खिलाफ संयुक्त स्थिति लें, तो वैधता की लड़ाई में संतुलन बदल सकता है।

इस प्रक्रिया में भारत जैसी गुटनिरपेक्ष शक्तियों की भूमिका बढ़ जाती है। क्योंकि भारत जैसे मध्यम से बड़ी शक्तियाँ, जो एक तरफ़ क्वाड/US साझेदारी और दूसरी तरफ़ BRICS जैसी संरचनाओं में हैं, अगर लगातार अंतरराष्ट्रीय क़ानून, संप्रभुता और रेजीम-चेंज विरोधी सिद्धांत पर स्पष्ट लाइन लें तो अमेरिकी "ट्रंप कोरोलरी" जैसी नीतियों पर नैतिक और राजनीतिक दबाव बढ़ेगा। वहीं, ऊर्जा सुरक्षा, टेक्नोलॉजी और रक्षा के मोर्चे पर विकल्प (रूस, पश्चिम एशिया, घरेलू क्षमता, BRICS नेटवर्क) मजबूत करने से भारत और अन्य वैश्विक दक्षिण देश अमेरिकी प्रतिबंधों और दबाव से कम असुरक्षित होंगे, जो अंततः पूरी दुनिया की रणनीतिक स्वायत्तता को मजबूत करता है।

अगर चाहें तो अगले चरण में विशिष्ट रोडमैप बना सकते हैं कि भारत, BRICS और वैश्विक दक्षिण मिलकर कौन से ठोस संस्थागत सुधार और सुरक्षा-व्यवस्थाएँ खड़ी कर सकते हैं (जैसे वैकल्पिक सुरक्षा ढाँचा, अंतरराष्ट्रीय ट्रिब्यूनल सुधार, मीडिया नैरेटिव युद्ध इत्यादि)। कहना न होगा कि अमेरिका ने अपने इतिहास में दर्जनों बार दूसरे देशों में प्रत्यक्ष और परोक्ष हस्तक्षेप किए हैं, जिनमें तख़्तापलट, सैन्य आक्रमण, आर्थिक दबाव और गुप्त ऑपरेशन शामिल रहे हैं।

यहां मैं अलग-अलग दौर के कुछ प्रमुख ऐतिहासिक उदाहरण बता रहा हूँ जिनपर गौर करना लाजिमी दिए हैः-

पहला, शुरुआती और शीतयुद्ध कालः 1953, ईरानः CIA–UK की साझी "ऑपरेशन AJAX" के तहत प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसाद्देक की सरकार गिराकर शाह को सशक्त किया गया, जिससे दशकों की तानाशाही और बाद में इस्लामी क्रांति की पृष्ठभूमि बनी।1954, ग्वातेमालाः "ऑपरेशन PBSUCCESS" के ज़रिये चुने हुए राष्ट्रपति जाकोबो आर्बेन्स को हटाकर अमेरिकी हितों के अनुकूल सैन्य शासन स्थापित किया गया, जिसके बाद लंबा गृहयुद्ध और बड़े पैमाने पर नरसंहार हुआ।1961–63, क्यूबाः बे ऑफ पिग्स आक्रमण, ऑपरेशन मोंगूस और फिदेल कास्त्रो को हटाने की कई नाकाम कोशिशें की गईं; 1962 में क्यूबा मिसाइल संकट के दौरान समुद्री नाकाबंदी भी अमेरिकी दबाव की मिसाल है।

दूसरा, तख़्तापलट और दमनकारी शासन का समर्थनः 1965–67, इंडोनेशियाः सुकार्णो के ख़िलाफ़ सत्ता परिवर्तन के दौरान अमेरिकी खुफ़िया सहयोग और कम्युनिस्ट-विरोधी सफ़ाये को समर्थन का आरोप है, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोगों की मौत मानी जाती है। 1973, चिलीः CIA-supported तख़्तापलट में चुने हुए राष्ट्रपति सल्वाडोर आयेंदे को हटाकर जनरल पिनोचे की तानाशाही लाई गई, जिसमें हज़ारों हिरासत, हत्या और यातना के मामले दर्ज हुए।1960–70 के दशक, कांगो, ब्राज़ील, अर्जेंटीना, डोमिनिकन रिपब्लिक सहित कई देशों में अमेरिकी समर्थन से सैन्य शासन या रेजीम-चेंज हुए, जिनका दस्तावेजीकरण अब व्यापक रूप से उपलब्ध है।

तीसरा, प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेपः वियतनाम, लाओस, कंबोडिया (1960–70 के दशक): "डोमिनो थ्योरी" के नाम पर बड़े पैमाने पर युद्ध, बमबारी और रासायनिक हथियार (एजेंट ऑरेंज) का इस्तेमाल हुआ, जिसके सामाजिक–पर्यावरणीय दुष्परिणाम आज भी महसूस किए जाते हैं।1983, ग्रेनेडा और 1989, पनामाः क्रमशः "कम्युनिस्ट" प्रभाव और नॉरिएगा शासन के बहाने छोटे कैरिबियाई देशों पर हमले कर सत्ता परिवर्तन किया गया। 1991, खाड़ी युद्ध (इराक): कुवैत पर आक्रमण के बाद अमेरिका-नेतृत्व वाले गठबंधन ने इराक पर व्यापक बमबारी की; इसके बाद के "नो-फ्लाई ज़ोन" और प्रतिबंधों से इराक पर स्थायी सैन्य–आर्थिक दबाव बना रहा।

चतुर्थ, "वार ऑन टेरर" और बाद के युद्धः 2001, अफ़ग़ानिस्तानः 9/11 के बाद अल-कायदा और तालिबान के ख़िलाफ़ आक्रमण कर नया शासन स्थापित किया गया; 20 साल की युद्ध उपस्थिति में भारी नागरिक हताहत और पलायन हुआ। 2003, इराकः "Weapons of Mass Destruction" के बहाने बड़े पैमाने पर आक्रमण कर सद्दाम हुसैन शासन गिराया गया, जबकि बाद में ऐसे हथियार नहीं मिले; इससे गृहयुद्ध, सांप्रदायिक हिंसा और ISIS जैसी शक्तियों का उभार हुआ। 2011, लीबियाः नाटो के नाम पर अमेरिका सहित गठबंधन ने सैन्य हस्तक्षेप कर गद्दाफी की सरकार गिराई, जिसके बाद देश लंबे समय तक अस्थिरता, मिलिशिया-राज और मानव तस्करी के हब में बदल गया।

पंचम, ताज़ा और छुपे रूप के हस्तक्षेपः सीरियाः 2014 के बाद से अमेरिका ने ISIS के ख़िलाफ़ हवाई और ड्रोन हमले तथा सीमित ज़मीनी ऑपरेशन किए, जबकि अलग-अलग विद्रोही गुटों को समर्थन के आरोप भी लगे। यूक्रेन, 2014 और आगेः विश्लेषक अमेरिका और पश्चिमी गठजोड़ की राजनीतिक–सैन्य भूमिका को भी एक तरह के हस्तक्षेप के रूप में देखते हैं, भले ही यह क्लासिक "इंवेज़न" न हो।

कतिपय शोधों के अनुसार 1776–2023 के बीच अमेरिका लगभग 400 से अधिक विदेशी सैन्य हस्तक्षेपों में किसी न किसी रूप में शामिल रहा, जिनमें से आधे से ज़्यादा 1950 के बाद और लगभग एक चौथाई शीतयुद्ध के बाद के दौर में हुए हैं।

खरी बात: वेनेज़ुएला के बहाने से 'भेड़िया न्याय' की वापसी की आहट

घनश्याम बादल

दुनिया एक बार फिर उसी पुराने और ख़तरनाक सवाल के सामने खड़ी है कि क्या अंतरराष्ट्रीय कानून सिर्फ़ कमज़ोर देशों के लिए है? क्या अमेरिका को यह अधिकार है कि वह तय करे कि कौन वैध राष्ट्रपति है, कौन अपराधी, और किस देश में किसकी सत्ता रहेगी?

वेनेज़ुएला में अमेरिकी हस्तक्षेप और वहां के राष्ट्रपति को पकड़कर मुकदमे चलाना कोई अचानक घटित घटना नहीं अपितु यह उस नीति की अगली कड़ी है, जिसे अमेरिका दशकों से अलग-अलग नामों से लागू करता आया है। कभी "लोकतंत्र की रक्षा", कभी "ड्रग्स के खिलाफ युद्ध", और कभी "मानवाधिकार"। नाम बदलते रहे, इरादा वही रहा ताक़त के दम पर दूसरे देशों के प्राकृतिक संसाधनों पर कब्ज़ा करने एवं वहां अपनी मनपसंद के शासक बैठाने राजनीति।

अमेरिका यह कहकर अपने कदमों को सही ठहराने की कोशिश कर रहा है कि वेनेज़ुएला "नार्को-स्टेट" बन चुका था। सवाल यह है कि अगर किसी देश में अपराध है, तो क्या इसका फ़ैसला वाशिंगटन करेगा? और सज़ा भी वही देगा? और यदि ऐसा होता है तो फिर वहां की सरकार शासन एवं प्रशासन की क्या भूमिका रह जाएगी?

हो सकता है नई पीढ़ी या जैन जी को लगे कि वेनेज़ुएला जैसी घटना पहली बार घटित हुई है लेकिन ऐसा नहीं है अमेरिका पहले भी एक बार नहीं अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग जगह पर कई बार ऐसा कर चुका है थोड़े बहुत अंतर के साथ।

उदाहरण के लिए पनामा के मैनुएल नोरीएगा को याद कीजिए जिसे पहले अमेरिका ने पाल-पोसकर सत्ता में रखा और फिर जब वह 'अनुपयोगी' हो गया, और मनमानी करने लगा तो 1989 में पनामा के इस सर्व शक्तिशाली सेना अध्यक्ष को पहले तो अपहरण कर अमेरिका लाया गया और फिर वहीं मुकदमा चलाया और उसे 30 वर्ष जेल में रखा गया। तब भी संयुक्त राष्ट्र ने निंदा तो की, लेकिन अमेरिका बेपरवाह रहा। यही पैटर्न आज वेनेज़ुएला में दोहराया जा रहा है। सच बात तो यह है कि संयुक्त राष्ट्र संघ या सुरक्षा परिषद जैसे संगठनों पर पूर्ण तरीके से अमेरिका का कब्ज़ा है और यदि वह अमेरिका के ख़िलाफ़ जाना भी चाहते हैं तो उनके पास इतनी ताकत नहीं है।

२ जनवरी की रात को दुनिया को हतप्रभ कर देने वाली राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के अपहरण की घटना के साथ भी सब कुछ खत्म होता नहीं दिख रहा है बल्कि वेनेज़ुएला के बाद मेक्सिको और कोलंबिया को लेकर अमेरिकी चेतावनियाँ बताती हैं कि यह मामला एक देश तक सीमित रहने वाला नहीं है। ड्रग तस्करी और सीमा सुरक्षा की आड़ में सैन्य कार्रवाई की भाषा दरअसल पुराने औपनिवेशिक दृष्टिकोण की वापसी है, जिसमें लैटिन अमेरिका को अमेरिका का प्रभाव-क्षेत्र माना जाता था। यह वही इलाक़ा है जिसने अमेरिकी हस्तक्षेपों की सबसे भारी कीमत चुकाई है, कभी तख़्तापलट, कभी गृहयुद्ध, और कभी आर्थिक तबाही की मार लैटिन अमेरिकी देशों ने बार-बार सही है।

'अमेरिका फर्स्ट' के नारे के साथ सत्ता में लौटे डोनाल्ड ट्रंप लैटिन अमेरिकी देशों की सीमा एवं परिधि से बाहर भी यदि ऐसी कार्रवाई करने तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

अमेरिकी मनमानी के एक नहीं कई उदाहरण हैं. 1980 के दशक में अमेरिका ने इराक पर रासायनिक हथियार रखने का आरोप लगाकर भीषण हमला किया बाद में यह आरोप झूठे निकले तब संयुक्त राष्ट्र ने कहा था कि इराक युद्ध अवैध था और यह बात आज खुद पश्चिमी विश्लेषक मानते हैं। लेकिन अमेरिका ने अपनी मनमानी करते हुए इराक से सद्दाम हुसैन की सरकार का तख्ता ही नहीं पलटा अपितु उसे फांसी पर भी लटकवा दिया गौर कीजिए ख़ुद अमेरिका में फांसी की सजा का प्रावधान नहीं है लेकिन एक देश के पूर्व राष्ट्रपति को अनेक आरोप लगाकर फांसी पर लटकवा दिया गया।

दूसरा उदाहरण लीबिया का है जहां कभी कर्नल गद्दाफ़ी की तूती बोलती थी जब उन्होंने अमेरिका को आंखें दिखाने शुरु कर दी तब तत्कालीन अमरीकी शासन ने लीबिया में हस्तक्षेप कर पूरे देश को अराजकता में झोंक दिया। कर्नल गद्दाफ़ी को भी न केवल गिरफ्तार किया गया अपितु भारी अपमानित भी किया गया। लेकिन किसी ने अमेरिका से जवाबदेही नहीं मांगी। इससे पहले अफगानिस्तान के शासक को भी जीप से बांधकर घसीटने जैसा नृशंस दृश्य दुनिया ने देखा था लेकिन कोई कुछ नहीं कर पाया।

ताकत के बलबूते पर अमेरिका कुछ भी करता रहा है उसका दोहरा मापदंड अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को खोखला कर रहा है। अपना वर्चस्व एवं नियंत्रण बनाने के लिए अमेरिका युद्ध आर्थिक प्रतिबंध किसी देश की सामाजिक ताने-बाने को ध्वस्त करना या फिर विद्रोहियों को शह देना जैसा कृत्य बार-बार करता रहा है। अमेरिका की यह मानसिकता रही है क्यों विभिन्न तरीके के प्रतिबंध लगाकर भी विरोधी शासको या देश को परेशान करता है अभी पिछले दिनों उसके टैरिफ की दादागिरी इसका उदाहरण है।

प्रतिबंध: बम से भी क्रूर हथियार

अमेरिका अब सिर्फ़ मिसाइलों से नहीं लड़ता, वह प्रतिबंधों से देश घुटने टेकने पर मजबूर करता है। वेनेज़ुएला इसका सबसे भयावह उदाहरण है, जहां जनता दवाओं और भोजन के लिए तरस रही है। प्रतिबंध सरकारों को नहीं, आम लोगों को तोड़ते हैं। अस्पताल बंद होते हैं, महँगाई आसमान छूती है,और फिर उसी बदहाली को "शासन की विफलता" कहकर हस्तक्षेप का नया बहाना तैयार किया जाता है। बहुत कम लोग जानते होंगे कि अमेरिकी प्रतिबंधों के चलते ईरान में दवाइयां की कीमतों में पिछले एक वर्ष में 50% से अधिक की बढ़ोतरी हुई है। और वहां की मुद्रा रियाल की हालत बेहद खराब है जानकरआश्चर्य होगा कि एक अमेरिकी डॉलर ईरान में 1.45 मिलियन रियाल के बराबर है।

भारत के लिए यह सिर्फ़ दूर की कहानी नहीं

यदि अपने देश के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बात भले ही कड़वी लगे पर भारत को भी यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि यह सब उससे दूर घट रहा है। रूस से तेल खरीदने पर अमेरिकी धमकियाँ बता चुकी हैं कि रणनीतिक स्वायत्तता अब सस्ती नहीं पड़ेगी। आज अमेरिका वेनेज़ुएला के राष्ट्रपति को "अवैध" कह रहा है। कल वह किसी और सरकार को "लोकतंत्र-विरोधी" घोषित कर सकता है। परसों दबाव भारत पर भी आ सकता है, व्यापार, तकनीक या ऊर्जा के ज़रिए इसलिए समय रहते हुए कूटनीतिक रणनीतिक एवं आर्थिक तथा युद्ध की तैयारी सदैव अद्यतन रहनी चाहिएं।

अमेरिका लोकतंत्र की बात तो करता है, लेकिन यह लोकतंत्र उसकी विदेश नीति में एक औज़ार भर है। जिन देशों में उसकी पसंद की सरकारें हैं, वहां लोकतंत्र 'स्थिर' माना जाता है। जहां नहीं हैं, वहां लोकतंत्र 'खतरे में' दिखने लगता है। यह पाखंड अब दुनिया को साफ़ दिख रहा है।

आज का संकट सिर्फ़ वेनेज़ुएला का नहीं अपितु उस व्यवस्था का संकट है जिसमें ताक़त न्याय से ऊपर रखी जा रही है।अगर यही चलन बना रहा, तो कोई भी देश सुरक्षित नहीं रहेगा। आज निशाने पर वेनेज़ुएला है, कल कोई और, और एक दिन वही देश भी, जो आज चुप हैं। भारत जैसे देशों के सामने यह ऐतिहासिक क्षण है या तो वे अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के पक्ष में स्पष्ट बोलें, या फिर चुप्पी की कीमत भविष्य में कहीं ज़्यादा चुकाएँ।

भारत बनेगा ब्लू इकोनॉमी का पावर हाउस

रामस्वरूप रावतसरे

भारत एक ऐसा देश है जिसकी 7,517 किलोमीटर लंबी तटरेखा है और तीन तरफ से समुद्र घिरा हुआ है। यहाँ की अर्थव्यवस्था में समुद्री व्यापार की बड़ी भूमिका है। लगभग 95 प्रतिशत विदेशी व्यापार समुद्र के रास्ते होता है। लेकिन अब तक भारत जहाज निर्माण में बहुत पीछे रहा है। इसे बढ़ाने के लिए मोदी सरकार ने 44700 करोड़ खर्च करने की तैयारी कर ली है। वैश्विक स्तर पर जहाज निर्माण में चीन, दक्षिण कोरिया और जापान का दबदबा है और ये तीन देश मिलकर 95 प्रतिशत से ज्यादा जहाज बनाते हैं। भारत का हिस्सा सिर्फ 0.1 प्रतिशत से भी कम है और वैश्विक रैंकिंग में २०वें स्थान के आसपास है। वैश्विक स्तर पर जहाज निर्माण में भारत का हिस्सा सिर्फ 0.1 प्रतिशत से भी कम है और वैश्विक रैंकिंग में २०वें स्थान के आसपास है। मोदी सरकार इसे बदलना चाहती है। अब सरकार ब्लू इकोनॉमी को मजबूत बनाने पर जोर दे रही है। ब्लू इकोनॉमी का मतलब है समुद्र के संसाधनों का टिकाऊ इस्तेमाल। जैसे मछली पकड़ना, बंदरगाह, जहाजरानी, समुद्री ऊर्जा, पर्यटन और जहाज निर्माण। इससे अर्थव्यवस्था बढ़ेगी, रोजगार बनेगा और पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। सरकार का लक्ष्य है कि २047 तक भारत जहाज निर्माण में विश्व के टॉप-5 देशों में शामिल हो जाए। इसके लिए हाल ही में दो बड़ी योजनाओं के दिशानिर्देश जारी किए गए हैं, 1- शिपबिल्डिंग फाइनेंशियल असिस्टेंस स्कीम और दूसरा - शिपबिल्डिंग डेवलपमेंट स्कीम। इन पर कुल 44,700 करोड़ रुपए खर्च होंगे।

केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल के अनुसार "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की अगुवाई में जहाज निर्माण क्षेत्र को नई नीति मिली है। ये दिशानिर्देश पारदर्शी और स्थिर ढाँचा बनाएँगे, जिससे घरेलू जहाज निर्माण फिर से जीवित होगा। इससे मेक इन इंडिया को बल मिलेगा, बड़े निवेश आएँगे और विश्व स्तरीय क्षमता बनेगी। भारत विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत की राह पर एक बड़ी समुद्री राष्ट्र बनेगा।" जानकारी के अनुसार मोदी सरकार की शिपबिल्डिंग फाइनेंशियल असिस्टेंस स्कीम और शिपबिल्डिंग डेवलपमेंट स्कीम योजनाएँ सितंबर २०२५ में कैबिनेट से मंजूर ६९,७२५ करोड़ रुपए के पैकेज का हिस्सा हैं। दिसंबर २०२५ में इनके ऑपरेशनल गाइडलाइंस जारी हुए। दोनों योजनाएँ 31 मार्च २०३६ तक चलेंगी और २047 तक बढ़ाई जा सकती हैं। शिपबिल्डिंग फाइनेंशियल असिस्टेंस स्कीम का बजट २४,७३६ करोड़ रुपये है। इसमें भारतीय जहाज निर्माण कंपनियों को हर जहाज पर 15 से २5 प्रतिशत तक वित्तीय मदद मिलेगी। यह मदद जहाज के प्रकार पर निर्भर करेगी, जिसमें छोटे सामान्य जहाज, बड़े सामान्य या विशेष जहाज होंगे। सरकार की ओर से मदद चरणबद्ध तरीके से मिलेगी, स्टेप-दर-स्टेप काम पूरा होने के आधार पर। इसके साथ ही सीरीज ऑर्डर पर अतिरिक्त प्रोत्साहन भी दिया जाएगा। एक नई सुविधा है शिपब्रेकिंग क्रेडिट नोट। अगर कोई पुराना जहाज भारतीय यार्ड में तोड़ा जाता है, तो मालिक को स्क्रैप वैल्यू का 40 प्रतिशत क्रेडिट मिलेगा। इसे नए जहाज बनाने में इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे सर्कुलर इकोनॉमी को बढ़ावा मिलेगा और पुराने जहाज से नए बनेंगे। जानकारी के अनुसार अगले दशक में यह योजना 96,000 करोड़ रुपए के जहाज निर्माण प्रोजेक्ट सपोर्ट करेगी। इससे घरेलू विनिर्माण बढ़ेगा और लाखों रोजगार बनेंगे। शिपबिल्डिंग डेवलपमेंट स्कीम - मोदी सरकार की इस योजना का बजट 19,989 करोड़ रुपये है। यह लंबे समय की क्षमता बनाने पर फोकस करती है। इसमें नए ग्रीनफील्ड जहाज निर्माण क्लस्टर बनेंगे। केंद्र और राज्य मिलकर 50रु50 स्पेशल पर्पज व्हीकल बनाएँगे, जो सामान्य इंफ्रास्ट्रक्चर पर 100 प्रतिशत पूँजी मदद देगा। पुराने ब्राउनफील्ड याड्र्स को आधुनिकीकरण के लिए २5 प्रतिशत मदद मिलेगी, जैसे ड्राई डॉक, शिपलिफ्ट, फैब्रिकेशन सुविधाएँ और ऑटोमेशन अपनाने पर। क्रेडिट रिस्क कवरेज फ्रेमवर्क से प्री-शिपमेंट, पोस्ट-शिपमेंट और वेंडर डिफॉल्ट रिस्क पर सरकारी इंश्योरेंस मिलेगा। इससे प्रोजेक्ट आसानी से फाइनेंस हो सकेंगे। इन योजनाओं से २047 तक भारत की व्यावसायिक जहाज निर्माण क्षमता 4.5 मिलियन ग्रॉस टनेज प्रति वर्ष हो जाएगी। इससे रोजगार बढ़ेगा, स्वदेशी तकनीक विकसित होगी और समुद्री सुरक्षा मजबूत होगी। जानकारों के अनुसार ब्लू इकोनॉमी भारत की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। फिलहाल यह जीडीपी में 4 प्रतिशत योगदान देती है, लेकिन संभावना बहुत ज्यादा है। सरकार का लक्ष्य है कि २०३० तक यह1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचे। सागरमाला प्रोजेक्ट इसके केंद्र में है। सागरमाला से बंदरगाह आधुनिक हो रहे हैं, तटीय आर्थिक जोन बन रहे हैं और लॉजिस्टिक्स लागत कम हो रही है। अब तक 839 प्रोजेक्ट्स की पहचान हुई है, जिनकी लागत 5.8 लाख करोड़ रुपए है।

पड़हा राजा सोमा मुंडा का हत्या पर खूंटी बंद, सड़क पर शव को रख हजारों की भीड़ ने किया जाम

विधि व्यवस्था पर सवाल, अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस को 24घंटे का अल्टिमेटम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के खूंटी जिले में अज्ञात अपराधियों ने आदिवासी नेता सह पड़हा राजा सोमा मुंडा की गोली मारकर हत्या बुधवार को कर दी थी जिसके विरोध में जोरदार धरना प्रदर्शन गुरूवार को जारी है .यह घटना खूंटी थाना क्षेत्र के जमुवादाग के समीप हुई, जहां अपराधियों ने उन पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाईं.

खूंटी थाना क्षेत्र के जमुआदाग के समीप अज्ञात अपराधियों ने पड़हा राजवंश से जुड़े आदिवासी नेता सोमा मुंडा की गोली मारकर हत्या कर दी. हमला उस समय हुआ जब सोमा मुंडा अपनी पत्नी के साथ बाइक से खूंटी से अपने गांव चलांगी लौट रहे थे. गोली लगने से सोमा मुंडा की मौके पर ही मौत हो गई. पुलिस ने जांच शुरू कर दी है

सोमा मुंडा की पत्नी ने बताया कि वे दोनों खूंटी गए थे और जमुआदाग के रास्ते से होकर गांव लौट रहे थे. जमुआदाग स्थित तालाब के पास पहुंचते ही पीछे से एक बाइक पर सवार दो लोग आए. उन्होंने ओवरटेक करते हुए दो राउंड गोली चलाई. एक गोली सोमा मुंडा के सीने में लगी. गोली लगने के बाद सोमा मुंडा ने बाइक रोककर खूंटी की ओर जाने की कोशिश की, लेकिन उनकी हालत बिगड़ गई और वे गिर पड़े. गोली चलाने के बाद हमलावर मंदरूटोली की ओर फरार हो गए.

पत्नी ने आगे बताया कि कुछ देर बाद वहां से गुजर रहे एक ट्रैक्टर पर बैठकर वे कुछ दूरी तक गईं. फिर ऑटो पकड़कर खूंटी थाना पहुंचीं और पुलिस को घटना की जानकारी दी.

सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और सोमा मुंडा को अस्पताल ले गई, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया.डीएसपी वरुण रजक ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि सोमा मुंडा की पत्नी ने खूंटी थाने में सूचना दी थी. पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मौके पर पहुंचकर शव को अस्पताल भेजा, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. हत्याकांड की जांच के लिए विशेष टीम गठित कर दी गई है. अपराधियों की धर-पकड़ के लिए छापेमारी शुरू कर दी गई है. मामले की गहन जांच की जा रही है.

सूचना पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और सोमा मुंडा को अस्पताल ले गई. जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. डीएसपी वरुण रजक ने घटना की पुष्टि की है. उन्होंने बताया कि सोमा मुंडा की पत्नी ने खूंटी थाने की पुलिस को सूचना दी है. सूचना पर पुलिस त्वरित कार्रवाई करते हुए मौके पर पहुंची और सोमा मुंडा को अस्पताल भेजा गया लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. डीएसपी ने बताया कि हत्याकांड की जांच के लिए टीम बना दी गई है. मामले की जांच की जा रही है. उन्होंने बताया कि अपराधियों की धर पकड़ के लिए छापेमारी शुरू कर दी गई है.

2024 में विधानसभा चुनाव लड़ें सोमा मुंडा के हत्या के बाद झारखंड की राजनीति अब पुनः गरमा गयी है । वृहस्पति बार जहां खूंटी एवं सरायकेला खरसावां जिले के कुचाई इलाके में सड़क जाम हुआ वहीं सरायकेला खरसावां विधानसभा से मुख्यमंत्री सह खूंटी के पूर्व सांसद से केंद्रीय मंत्री रहे अर्जुन मुंडा तथा चंपाई सोरेन ने इस घटना का जोरदार विरोध किया है । झारखंड की गिरती विधि-व्यवस्था पर यह बबाल अब सवाल खड़ा कर दिया है । भाजपा खेमा के इन ऊंचे कद-काठी के आदिवासी नेता सरकार को घेर सकते हैं ।

मालती देवी संस्थान द्वारा अखिल भारतीय कवि

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। मालती देवी संस्थान के तत्वावधान में शंभू दयाल इंटर कॉलेज परिसर में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन प्रकृति, आध्यात्मिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत वातावरण में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। शब्दों की सरिता, भावों की पवन और अनुभूतियों की धूप–छाँह के बीच दूर-दराज़ से पधारे कवियों ने अपनी सशक्त रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभागार में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कविता स्वयं वायु बनकर श्रोताओं के हृदय में उतर रही हो।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुजीत कुमार मिश्र ने कहा कि कविता प्रकृति की गोद में जन्म लेकर आत्मा तक पहुँचती है और मनुष्य को उसके संस्कारों से जोड़ती है। विशिष्ट अतिथि हिंदी सेवी ऋषि शर्मा ने साहित्य को जीवन की नदियों को दिशा देने वाला बताते हुए कहा कि वह समाज के मरुस्थल में संवेदना की वर्षा करता है। विशिष्ट अतिथि हरिदत्त शर्मा ने कवियों को सामाजिक चेतना का दीपक बताते हुए कहा कि उनकी लेखनी अंधकार में पथ प्रदर्शक का कार्य करती है। संस्था की अध्यक्ष डॉ.वीना मित्तल ने अतिथियों एवं कवियों का स्वागत करते हुए कहा कि ऐसे साहित्यिक आयोजन नई पीढ़ी को प्रकृति, संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं।

काव्य-पाठ के क्रम में सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. निवेदिता शर्मा की प्रेमिल रचना ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। हापुड़ से पधारे कवि डॉ. अनिल बाजपेई ने वृद्धाश्रम की पीड़ा को मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत किया। दिल्ली से आए प्रसिद्ध गीतकार डॉ. जय सिंह आर्य ने सामाजिक यथार्थ पर तीखा प्रहार किया। अलका राज अग्रवाल की ग़ज़ल, देवेन्द्र देव की सृजन-पीड़ा, मुरैना से पधारे राम अवतार शर्मा 'सांड' का व्यंग्य, वीरेंद्र अबोध का सामाजिक कटाक्ष, डॉ. सुदेश यादव 'दिव्य' की ओजपूर्ण पंक्तियाँ तथा कानपुर से आए डॉ. राधेश्याम मिश्र की आध्यात्मिक रचना ने कार्यक्रम को ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। यह कवि सम्मेलन केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं, बल्कि प्रकृति की सहजता, आध्यात्मिक चेतना और मानवीय करुणा का जीवंत उत्सव बनकर स्मृतियों में अंकित हो गया। कार्यक्रम में भाजपा के महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल, सुरेश सचान, सुभाष गुप्ता, मदन गोपाल शर्मा, डी.डी. भारद्वाज, संजीव शर्मा, नवीन कुमार, बाल किशन सहित महानगर के बड़ी संख्या में गणमान्यजन उपस्थित रहे।कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार श्रोत्रिय ने सभी सहयोगियों एवं साहित्य प्रेमियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

12 साल से पहले बच्चों के हाथ में स्मार्टफोन देना एक गंभीर स्वास्थ्य जोखिम

पूजा ठाकुर

12 साल से पहले बच्चों के हाथ में स्मार्टफोन देना आज सिर्फ़ आदत नहीं, बल्कि एक गंभीर स्वास्थ्य जोखिम बनता जा रहा है। कई वैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि कम उम्र में ज़्यादा स्क्रीन टाइम बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करता है।

जब बच्चे स्मार्टफोन पर ज़्यादा समय बिताते हैं, तो खेलकूद और शारीरिक गतिविधि कम हो जाती है। इसका सीधा असर मोटापे पर पड़ता है। साथ ही मोबाइल की नीली रोशनी दिमाग में नींद से जुड़े हार्मोन को दबा देती है, जिससे नींद की कमी और अनियमित नींद की समस्या पैदा होती है।

मानसिक स्तर पर असर और भी गहरा है। सोशल मीडिया, गेम्स और लगातार मिलने वाला त्वरित मनोरंजन बच्चों के दिमाग को "तुरंत इनाम" का आदी बना देता है। रिसर्च बताती है कि इससे डिप्रेशन, चिंता और आत्मविश्वास की कमी का खतरा बढ़ जाता है, खासकर तुलना और ऑनलाइन दबाव के कारण।

विशेषज्ञ मानते हैं कि 12 साल से पहले मस्तिष्क तेज़ी से विकसित होता है, और इस दौर में बिना नियंत्रण के स्मार्टफोन उपयोग ध्यान, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक कौशल को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए समाधान फोन से दूरी नहीं, बल्कि उम्र के अनुसार, सीमित और निगरानी में उपयोग है।

राज्य की अलग-अलग अदालतों को बम से उड़ाने की धमकी

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य में बम का आतंक है। अनजान लोगों से धमकी भरे ईमेल आए हैं। कटक, संबलपुर और देवगढ़ कोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इन सभी कोर्ट परिसरों में आतंक मचा हुआ है। काम रोकने और कोर्ट परिसर छोड़ने के आदेश जारी किए गए हैं। सभी कर्मचारी, वकील और मुवक्किल कोर्ट परिसर से बाहर आ गए हैं।इस बीच, बम की अफवाह के बाद हाई कोर्ट में दहशत फैल गई है। वकील और लोग डर के मारे कोर्टरूम से बाहर आ गए हैं। सभी कोर्टरूम में तलाशी चल रही है। एंटी-बम स्क्वॉड के साथ पुलिस को तैनात किया गया है। कोर्टरूम को घेर लिया गया है। तलाशी के लिए मेटल डिटेक्टर और स्निफर डॉग्स का इस्तेमाल किया जा रहा है। ईमेल किसने भेजा, इस बारे में अभी तक कोई साफ जानकारी नहीं मिली है।DGP ने कहा कि राज्य की कई अदालतों को गुमनाम धमकी भरे ई-मेल मिले हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जिन अदालतों को धमकियां मिली हैं, वहां जांच की जा रही है। सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। DGP ने लोगों से अपील की है कि वे घबराएं नहीं और जांच में पुलिस का सहयोग करें।

ढुल्लू महतो के यहां कहां से आये 40 हजार करोड़ : विधायक जयराम महतो

कोर्ट के आदेश पर सांसद की संपत्ति जांच करायें सरकार

रांची , एक खास पेशा से जूड कर साथ साथ राजनीत में कद काठी बनाने की होड़ अब प्रचलन में जोर शोर जारी है, इसी क्रम में झारखंड में अवैध कमाई को लेकर डुमरी विधायक जयराम महतो गुरुवार को बोकारो बीएसटी थाना में दर्ज सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने के मामले में हाजिर हुए. कोर्ट में पेशी के बाद विधायक जयराम महतो ने धनबाद सांसद ढुल्लू महतो पर जमकर जुबानी फायरिंग की . विधायक जयराम महतो ने सुप्रीम कोर्ट में दायर एक याचिका का हवाला देते हुए सांसद ढुल्लू महतो पर अकूत संपत्ति अर्जित करने का आरोप लगाया. विधायक ने कहा कि सांसद ढुल्लू महतो के पास 40 हजार करोड़ रुपये की संपत्ति है और मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार को जांच का आदेश दिया है.

उन्होंने कहा कि सांसद के पास 40 हजार करोड़ की संपत्ति की जांच सरकार को करने की जरूरत है. जयराम महतो ने सांसद के तीन पार्टनर के नाम का भी खुलासा किया है. उन सभी की संपत्ति की जांच की मांग विधायक ने की है. डूमरी विधायक जयराम महतो ने सांसद ढुल्लू महतो द्वारा बनाए गए राम मंदिर पर भी सवाल उठाया. उन्होंने कहा कि अपने कारनामों को छुपाने के लिए वह धर्म का सहारा ले रहे हैं. बिना चंदे के राम मंदिर कैसे खड़ा हो गया, यह बहुत बड़ा सवाल है. विधायक ने कहा कि लोग एक मंदिर बनाने में 50 साल लगा देते हैं, लेकिन इनके पास इतनी संपत्ति कहां से आई।

सूचना कमीशन में भयानक हालात

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: पिछले पांच महीनों में चार नोटिस और 40 केस की सुनवाई के बावजूद, बार-बार गैरहाज़िर रहने पर प्रदीप प्रधान ने इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन से PIO और फर्स्ट अपीलेट अथॉरिटी के खिलाफ़ नॉन-बेलेबल वारंट जारी करने की मांग की है।

आज, इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन से जुड़ी दो खबरें आपके सामने आ रही हैं। इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन ने एक प्रेस रिलीज़ जारी की है। इस प्रेस रिलीज में कहा गया है कि बलांगीर जिले में एक PIO से एक व्यक्ति द्वारा जानकारी मांगने की जानकारी इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन को मिलने के बाद, इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन ने डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस को जांच करने का निर्देश दिया है। पुलिस इस घटना की सच्चाई की जांच करेगी और अगर सच्चाई हुई तो पुलिस कानून के मुताबिक कार्रवाई करेगी। इस बारे में हमें कुछ नहीं कहना है।

लेकिन सवाल यह उठता है कि इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन के प्रेस रिलीज़ जारी करने और इसे पब्लिश करने का मकसद क्या है? फिर से, एक अखबार में बताया गया है कि RTI वर्कर के खिलाफ जांच के आदेश दिए गए हैं। ऐसा क्यों किया गया या कमीशन ने इस प्रेस रिलीज़ के ज़रिए अपनी नाकाबिलियत छिपाने के लिए ऐसा क्यों नहीं किया? पिछले पाँच महीनों से जाजपुर ज़िले की धर्मशाला तहसील के खिलाफ़ इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन में 40 से ज़्यादा दूसरी अपील और शिकायतें चल रही हैं। ये मामले 2021, 2022 के हैं। शिकायत करने वाले सर्वेश्वर बेहुरा हैं, जो एक RTI एक्टिविस्ट हैं और धर्मशाला तहसील से जानकारी माँगने पर बम हमले का शिकार हुए थे। चीफ़ इन्फ़ॉर्मेशन कमिश्नर मनोज परिदा और तीन दूसरे इन्फ़ॉर्मेशन कमिश्नर इन सभी मामलों की सुनवाई कर रहे हैं। लेकिन पिछले पाँच महीनों में इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन ने उस समय के PIO और तहसील के पहले अपील करने वाले अधिकारी के लिए चार तारीख़ें तय की हैं और अभी के PIO और पहले अपील करने वाले अधिकारी नहीं आए हैं। जो दो अफ़सर कानून का घोर उल्लंघन करने के दोषी हैं, वे हैं बारंग ब्लॉक की अभी की BDO इश्विता दास और भुवनेश्वर की BDO देवी मोहंती। ये दोनों अफ़सर धर्मशाला तहसील में तहसीलदार और एडिशनल तहसीलदार थे। इन दोनों अधिकारियों ने उस समय के MLA प्रणब बलवंतराय के साथ मिलकर सारी लूटपाट की थी। सर्वेश्वर ने इन दोनों अधिकारियों के भ्रष्टाचार और लूटपाट की जांच के लिए 40 से ज़्यादा एप्लीकेशन दी थीं। इन दोनों अधिकारियों ने सुनवाई के बाद भी जानकारी नहीं दी। अब इन अधिकारियों को पांच महीने से इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन में बार-बार

नोटिस दिए जाने के बावजूद वे नहीं आए हैं। और हैरानी की बात यह है कि इन्फ़ॉर्मेशन कमीशन भी कुछ नहीं कर पा रहा है। चीफ़ इन्फ़ॉर्मेशन कमिश्नर के आदेश के बावजूद उन्होंने जानकारी नहीं दी। फिर भी मनोज परिदा कुछ नहीं कर पाए। उन्होंने सर्वेश्वर के सामने अपनी लाचारी जताई। संपाल पटनायक ने तीन बार नोटिस दिए। लेकिन ये दोनों अधिकारी न तो सुने और न ही आए। फिर भी संपाल पटनायक कुछ नहीं कर पा रहे हैं। वे शांत और बेपरवाह हैं। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या करें। इन्फ़ॉर्मेशन कमिश्नर इन दोनों अधिकारियों और 12 सेशों के पवित्र मंडल के दूसरे लोगों को पहले ही तीन बार नोटिस दे चुके हैं। लेकिन वे न तो आते हैं और न ही जवाब देते हैं। कोई भी अधिकारी इन्फ़ॉर्मेशन कमिश्नर की परवाह नहीं करता। और इस कमीशन को भी समझ नहीं आ रहा कि क्या करें। आज मैंने श्री मंडल से इस अधिकारी के खिलाफ वारंट जारी करने को कहा। श्री मंडल डर गए। उनके मुंह से कोई जवाब नहीं निकला। मैंने फिर पूछा कि ऑर्डर ने क्या किया, वे बिना कुछ कहे चुप रहे। सूचना आयोग की ऐसी दुर्गति पहले कभी नहीं देखी गई।

यह स्थिति सूचना आयोगों की कानून के बारे में अज्ञानता और नाकाबिलियत के कारण पैदा हुई है।

जो आयोग सूचना कानून को ठीक से लागू करने में नाकाम रहा है और कानून तोड़ने वाले PIOs के खिलाफ कार्रवाई करने में नाकाम रहा है, वह अपनी नाकाबिलियत और अक्षमता छिपाने के लिए इस तरह की प्रेस रिलीज़ जारी करके मीडिया में तूफान खड़ा कर रहा है।

आठ महीने बीत गए हैं, सूचना आयोग के अधिकारी ऑर्डर नहीं मंगा पाए हैं। वे अभी भी कानून को समझ या एनालाइज़ नहीं कर पाए हैं। लॉ ऑफिसर की गैरमौजूदगी के कारण ऑर्डर लिखना बंद हो गया है। वे एक घंटे में औसतन 10 कॉल प्रतिदिन सुन रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि क्या ऑर्डर करना है। वे कॉल पढ़ने के बाद तैयारी करके नहीं आते हैं। शर्मनाक स्थिति। कितनी दयनीय स्थिति है। यह हालत देखकर हमें उन पर तरस आता है, दुख भी होता है। कितने ही लोगों पर पेनल्टी लगी है, जानकारी मांगने पर जवाब नहीं देते या विधानसभा को जानकारी भी नहीं देते।

एनकाउंटर के बाद जग्गू भगवानपुरिया के साथी गिरफ्तार; टारगेट किलिंग टली

अमृतसर 8 जनवरी (साहिल बेरी)

कमिश्नर पुलिस अमृतसर ने सही इंटेलिजेंस इनपुट और तेज़ पुलिस एक्शन के बाद, गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया से जुड़े एक ऑर्गनाइज्ड क्रिमिनल मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है, जो एक्सटॉर्शन और हथियारों के साथ धमकियों में शामिल था।*

07.01.2026 को, एक पुलिस टीम को संदिग्धों की पेट्रोलिंग और जांच के लिए पुतलीघर चौक के पास तैनात किया गया था।* एक्शन के दौरान, भरोसेमंद इंटेलिजेंस मिली कि *कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला ने विक्रम सिंह उर्फ मामन, मनप्रीत सिंह उर्फ बुरा और गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी के साथ एक एक्टिव गैंग बनाया है।

यह गैंग कथित तौर पर विदेश में रहने वाले गैंगस्टर अमृत दलम और केशव शिवाला के निर्देशों पर टारगेट किलिंग और एक्सटॉर्शन में शामिल था।

इनपुट के मुताबिक, *कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला, अपने 5-6 हथियारबंद साथियों के साथ, पिंपटी गेस्ट हाउस के पास मौजूद था, और हुंडई वर्ना कार से कोई बड़ा क्रिमिनल काम करने की तैयारी कर रहा था।

बिना देर किए, FIR नंबर 03 तारीख 07.01.2026 को सेक्शन 310(4), 310(5), 303(2), 317(2), 190, 191(3), 341(2) BNS और 25/27 आर्म्सएक्ट के तहत पुलिस स्टेशन कैंटोनमेंट, अमृतसर में रजिस्टर किया गया और रेड की गई।

पुलिस पार्टी को देखकर, संदिग्धों ने भागने की कोशिश की। तीन आरोपी विक्रम सिंह उर्फ मामन, मनप्रीत सिंह उर्फ बुरा और गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी को 01 कार (हुंडई वरना), 02 तलवारें

और 01 कुल्हाड़ी के साथ मौके पर गिरफ्तार किया गया।

*दो आरोपी, कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला और आदित्य राज उर्फ आदित्य भागने में सफल रहे। पूछताछ के दौरान, गिरफ्तार आरोपियों ने खुलासा किया कि दोनों फरार पिस्तौल से लैस थे।

08.01.2026 को, पुलिस को मीराकोट क्षेत्र में आरोपी कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला और आदित्य राज उर्फ आदित्य के आंदोलन के बारे में विश्वसनीय सूचना मिली।

आरोपी आदित्य राज उर्फ आदित्य कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला के साथ मोटरसाइकिल पर सवार हो रहा था, जब उन्हें पुलिस पार्टी ने रुकने का इशारा किया; इसके बजाय, दोनों आरोपियों ने मौके से भागने की कोशिश की, कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला मोटरसाइकिल चला रहा था और आदित्य राज उर्फ आदित्य पीछे बैठा था। पीछा करते समय, आरोपी आदित्य राज उर्फ आदित्य ने पुलिस पार्टी पर जान से मारने के इरादे से दो बार गोली चलाई, जिसमें से एक गोली सरकारी गाड़ी के बंपर में लगी। S.I. जतिंदर सिंह, S.H.O. P.S. कैंट के रुकने की चेतावनी के बावजूद, आरोपियों ने फिर से गोली चलाई। खुद के बचाव में, S.I. जतिंदर सिंह ने अपनी सर्विस बंदूक से एक राउंड गोली चलाई। आरोपी आदित्य राज उर्फ आदित्य के दाहिने पैर में गोली लगी, उसे पुलिस पार्टी की मदद से पकड़ लिया गया, और तुरंत मेडिकल इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। तलाशी लेने पर, आरोपी आदित्य राज उर्फ आदित्य के पास से फायरिंग में इस्तेमाल की गई 9mm पिस्टल (मेड इन टर्की) बरामद हुई, जबकि आरोपी कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला के पास से .32 बोर की देसी पिस्टल बरामद हुई।

इस बारे में अमृतसर के कैंटोनमेंट पुलिस स्टेशन में सेक्शन 109, 3(5) BNS और आर्म्स एक्ट के तहत एक अलग FIR नंबर 05 तारीख 08.01.2026 को दर्ज की गई थी।

गिरफ्तार आरोपी आदित्य राज उर्फ आदित्य का गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया और केशव शिवाला से सीधा संबंध है और वह उनके कहने पर क्रिमिनल एक्टिविटी कर रहा था। अपनी पहचान छिपाने और पुलिस से बचने के लिए, गैंगस्टर ने जानबूझकर राज्य के बाहर के एक साथी को अपना करीबी साथी बनाया। गिरफ्तार आरोपी कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला का सीधा संबंध गैंगस्टर अमृत दलम से है।

कुल रिकवरी

* 01 ग्लॉक पिस्टल 9 mm मेड इन टर्की
* 01 पिस्टल .32 बोर मेड इन इंडिया
* 01 मोटरसाइकिल (बिना नंबर की)
* 01 कार (हुंडई वरना)
* 02 तलवारें
* 01 कुल्हाड़ी

टीमः श्री रविंदरपाल सिंह, DCP/डिटेक्टिव, श्री सिरिवेनेला, ADCP- 2, श्री. शिवदर्शन सिंह, ACP वेस्ट और SI जतिंदर सिंह, SHO PS कैंटोनमेंट

गिरफ्तार आरोपी

1. आदित्य राज उर्फ आदित्य, निवासी बहापुर, नालंदा, बिहार

उम्रः 18 साल, पढ़ाईः इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, पेशाः बेरोज़गार, पिछला केसः कोई नहीं

गिरफ्तारी की तारीख और जगहः 08-01-2026, PS कैंटोनमेंट एरिया

2. कुलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला, निवासी गाँव रसूलपुर बेट, ज़िला गुरदासपुर

उम्रः 21 साल, पढ़ाईः 12वीं, पेशाः ड्राइवर

पिछला केसः FIR नंबर 14 तारीख 31-03-2022 IPC 406, 408, 420, 379, 411 के तहत पुलिस स्टेशन पुराना शाला, गुरदासपुर

गिरफ्तारी की तारीख और जगहः 08-01-2026, PS कैंटोनमेंट एरिया

3. विक्रम सिंह उर्फ मामन, निवासी गाँव डोवाल, गुरदासपुर

उम्रः 25 साल, पढ़ाईः 12वीं, पेशाः बेरोज़गार, पिछला केसः कोई नहीं

गिरफ़्तारी की तारीख और जगहः 07-01-2026, पुलिस स्टेशन कैंटोनमेंट एरिया

4. मनप्रीत सिंह उर्फ़ बूरा, निवासी गाँव जगतपुरा कलां, गुरदासपुर

उम्रः 22 साल, पढ़ाईः 12वीं, पेशाः बेरोज़गार, पिछला केसः कोई नहीं

गिरफ़्तारी की तारीख और जगहः 07-01-2026, पुलिस स्टेशन कैंटोनमेंट एरिया

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एलिम्को का प्रयास सराहनीय – धालीवाल

121 दिव्यांग व्यक्तियों को लगभग 21 लाख रुपये के सहायक उपकरण वितरित
9 जनवरी को सरकारी आईटीआई बाबा बकाला तथा 10 जनवरी को सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल अटारी में लगेगा कैंप

अमृतसर, 8 जनवरी (साहिल बेरी)

विधायक सरदार कुलदीप सिंह धालीवाल के प्रयासों से एलिम्को द्वारा 3 मार्च 2025 को अजनाला में दिव्यांग व्यक्तियों की आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए विशेष कैंप लगाए गए थे। आज उसी कड़ी में विशेष कैंप का आयोजन कर जरूरतमंद दिव्यांग व्यक्तियों को सहायक उपकरण वितरित किए गए।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए विधायक सरदार कुलदीप सिंह धालीवाल ने कहा कि उन्हें बेहद खुशी है कि वे इन जरूरतमंद लोगों की सहायता कर सके। उन्होंने कहा कि आज इन लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा किया गया है

और मुख्यमंत्री सरदार भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में शीघ्र ही विशेष कैंप लगाकर बाकी बचे जरूरतमंदों तक भी आवश्यक सहायक सामग्री पहुंचाई जाएगी। उन्होंने कहा कि एलिम्को द्वारा किया जा रहा यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

उन्होंने बताया कि आज के कैंप में 121 दिव्यांग व्यक्तियों को सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अजनाला में आयोजित विशेष शिविर के दौरान एलिम्को की सहायता से कुल 247 सहायक उपकरण वितरित किए गए, जिनकी कुल लागत लगभग 21 लाख 28 हजार रुपये है। इनमें बैटरी चालित ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर और अन्य आवश्यक उपकरण शामिल हैं।

उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने स्वयं एलिम्को से संपर्क कर सीमावर्ती क्षेत्रों के जरूरतमंदों को यह सुविधाएं उपलब्ध करवाने का आग्रह किया था। पहले विशेष कैंप लगाकर प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत के अनुसार माप लेकर उपकरण तैयार करवाए गए और अब उनके नजदीकी स्थानों पर कैंप लगाकर यह वितरण किया जा रहा है। ये सभी उपकरण एलिम्को द्वारा आधुनिक तकनीक और उच्च गुणवत्ता के साथ तैयार किए गए हैं।

उन्होंने जानकारी दी कि 9 जनवरी को सरकारी आईटीआई बाबा बकाला तथा 10 जनवरी को सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल अटारी में विशेष कैंप लगाए जाएंगे।

इस मौके पर एसडीएम अजनाला सरदार रविंदरपाल सिंह अरोड़ा ने बताया कि कैंप के दौरान 25 मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल, 47 ट्राईसाइकिल, 36 व्हीलचेयर, 1 सीपी चेयर, 3 टीएलएम किट, 12 श्रवण यंत्र, 58 बैसाखियां, 1 विजुअल किट, 19 वॉकिंग स्टिक, 11 वॉकर, 4 रोलैटर, 26 कुशन और 4 कृत्रिम अंग वितरित किए गए।

इस अवसर पर सीडीपीओ अजनाला रछपाल कौर, नोडल इंचार्ज धर्मिंदर सिंह, एलिम्को से श्री अनिल कुमार, सरदार गुरप्रीत सिंह सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर अमृतसर मुख्य डाकघर में सरबत के भले की अरदास की गई व चाय पकोड़े का लंगर लगाया गया

अमृतसर 8 जनवरी (साहिल बेरी)

सर्वंशदानी, शाह-ए-शहंशाह, दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पावन प्रकाश पर्व के अवसर पर हर साल की तरह इस साल भी अमृतसर मुख्य डाकघर में सरबत के भले की अरदास की गई व चाय-पकोड़े का लंगर लगाया गया।

श्री प्रवीण प्रसून, अधीक्षक डाकघर (मुख्यालय) द्वारा कहा गया कि राष्ट्रभक्ति, धर्मनिष्ठा और वीरता के प्रतीक, सिख पंथ के दसवें गुरु और खालसा पंथ के संस्थापक, सरबंस दानी, दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व पर आयोजित लंगर का शुभारंभ कर श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सभी को प्रकाश पर्व की शुभकामनाएं दीं तथा अरदास करके सर्व कल्याण की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि मानवता की रक्षा के लिए दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज की धर्मनिष्ठा, त्याग, साहस और समर्पण सदैव देशवासियों को प्रेरित करती रहेंगी।

अमृतसर डाक विभाग के कर्मचारियों द्वारा संगतों को परशाद वितरण किया गया। इस मौके पर श्री धीरज कुमार, कार्यालय पर्यवेक्षक (मुख्यालय), श्री मनोज शर्मा (निरीक्षक डाकघर) व अन्य मौजूद रहे।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्मदिवस के अवसर पर मख्खन होटल, मजीठा रोड द्वारा विशाल लंगर भंडारे का आयोजन

अमृतसर, 8 जनवरी (साहिल बेरी)

दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पावन जन्मदिवस को समर्पित करते हुए हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मख्खन होटल की ओर से श्रद्धा और सेवा भावना के साथ संगतों के लिए एक विशाल लंगर भंडारे का आयोजन किया गया। इस लंगर भंडारे में बड़ी संख्या में संगतों ने पहुंचकर गुरु का लंगर छका और अपनी श्रद्धा प्रकट की।

इस अवसर पर मख्खन होटल के प्रबंधकों ने कहा कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन हमें सेवा, त्याग, समानता और मानवता का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि लंगर की परंपरा सिख धर्म की एक महान परंपरा है, जो सभी को समान रूप से बैठाकर भाईचारे और आपसी प्रेम का संदेश देती है। लंगर भंडारे के दौरान साफ-सुथरे और सुव्यवस्थित प्रबंध किए गए थे, जहां सेवादारों ने पूरे मनोयोग और श्रद्धा भाव से संगतों को लंगर परोसा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023